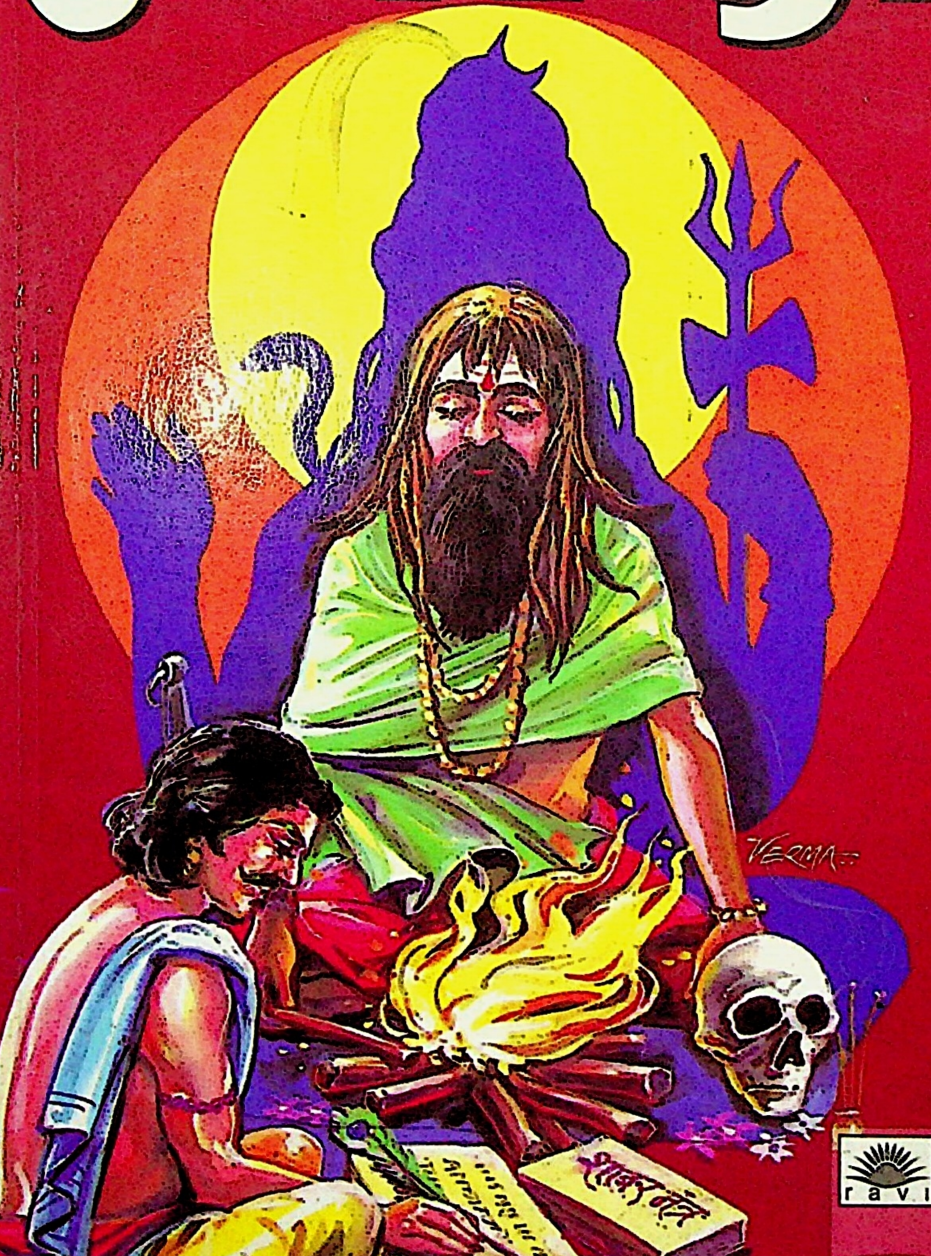
तांत्रिक बहल

चमत्कारिक गोपनीय अनुभूत

शाबर मंत्र



ravi

रवि पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित अन्य उपयोगी पुस्तकें

ज्योतिष

S-233	ज्योतिष आरम्भिका	40.00
S-168	स्वप्नफल दर्पण—बहल	40.00
S-112	अरिष्ट लक्षणम्	40.00
S-107	हस्तरेखा विज्ञान—कीरो	40.00
S-77	भारतीय ज्योतिष और आपका भविष्य	40.00
S-24	चमत्कारी अनुभूत शाबर मंत्र—पं. शशि मोहन बहल	60.00
S-21	भविष्य का ज्योतिष—कल्कि ज्योतिष—पं. बहल	40.00
S-9	नास्त्रेदमस की विश्वप्रसिद्ध भविष्यवाणियां	40.00
S-4	अंक ज्योतिष—कीरो	40.00
S-288	रत्न और रुद्राक्ष रहस्य—बहल	50.00
S-232	स्फटिक श्रीयन्त्र पूजा विधान—बहल	50.00
S-81	सिद्धिदायक मन्त्र सागर	50.00
S-60	नैपोलियन का भाग्यदर्पण—पं. शशि मोहन बहल	50.00
S-57	प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म गाइड—बहल	50.00
S-20	हस्तरेखा द्वारा सम्पूर्ण भविष्य ज्ञान—बहल	60.00
S-351	मार्डन पामस्ट्री	40.00
S-246	संकटमोचक सूर्यपुत्र शनिदेव—बहल	50.00
S-129	सरल भविष्य दर्शन सूत्र	50.00
S-234	हाथों में छिपा भविष्य	60.00
S-41	कालसर्प योग—पं. शशि मोहन बहल	60.00
S-100	भारतीय ज्योतिष एवं लाल किताब—बहल	100.00

तन्त्र-मन्त्र विज्ञान

S-436	असली इन्द्रजाल (डबल कलर)	50.00
S-145	गोरख पुराण	40.00
S-58	तन्त्र की गोपनीय आसुरी साधनायें	40.00
S-8	तन्त्र-मन्त्र द्वारा रोगोपचार—पं. शशि मोहन बहल	40.00
S-7	टोने-टोटके व बचाव—पं. शशि मोहन बहल	50.00
S-138	साधनाएं, सिद्धियां एवं टोटके	60.00
S-79	गोपनीय तान्त्रिक रतिज्ञान	50.00
S-76	तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र द्वारा कामसुख	50.00
S-23	तंत्र भैरवी—तांत्रिक बहल	50.00

रवि पॉकेट बुक्स

33, हरी नगर, मेरठ—250002 (उ०प्र०)

चमत्कारी-गोपनीय-अनुभूत

शाबर मंत्र

आम सरल भाषा में, बेतरह उपयोगी, शीघ्र फलदायी शाबर मंत्रों का गुलदस्ता

लेखक :
तांत्रिक बहल
(स्वर्ण पदक विजेता)

प्रकाशक
रवि पॉकेट बुक्स
33, हरी नगर, मेरठ-250 002.

चेतावनी—भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अन्तर्गत इस पुस्तक की सामग्री रवि पॉकेट बुक्स के पास सुरक्षित है, इसलिए कोई भी सज्जन मैटर आदि पूर्ण रूप से अथवा तोड़-मरोड़ कर एवं किसी भी भाषा में छापने या प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे के स्वयं जिम्मेदार होंगे।

वास्तुशास्त्र		
S-312	भारतीय वास्तुशास्त्र एवं नींव पूजन विधान—*बहल*	50.00
S-185	फेंगशुई के चमत्कार—*शशि मोहन बहल*	50.00
S-167	वास्तुशास्त्र के गोपनीय सूत्र—*शशि मोहन बहल*	50.00
S-136	फेंगशुई और आंतरिक सज्जा	100.00
S-104	फेंगशुई एवं भारतीय वास्तु	100.00
S-74	भारतीय वास्तु एवं भवन प्रारूप	100.00
S-40	वास्तु मंगलम्	100.00
S-80	ज्योतिष रेमेडियल वास्तुशास्त्र और आपका व्यवसाय —*बहल*	120.00

- पुस्तक : शावर मंत्र
- लेखक : तांत्रिक बहल
- प्रकाशक : **रवि पॉकेट बुक्स**
  33, हरी नगर, मेरठ–250002 (उ०प्र०)
  फोन : (0121) 2531011, 2521067, 2533833
  Email : a2zcomputerbooks@yahoo.co.in
- लेजर टाइप : राधिका कम्प्यूटर, मेरठ।
- मुद्रक : जे. एस. ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।
- मूल्य : ₹ साठ (₹ 60)

मेरी कलम से....

यह अकाट्य सत्य है कि भौतिक विज्ञान दिन-पर-दिन जटिल होता जा रहा है। सापेक्षवाद के सिद्धान्त यांत्रिकी आदि से विश्व में ऐसा परिवर्तन कर दिया है कि अब बड़ा ही अद्भुत और विलक्षण लगता है और परिवर्तन का यह क्रम समाप्त हो गया हो ऐसा भी नहीं है। आज के वैज्ञानिक को बाहरी जगत की जैसी अगम्यवादी अवधारणा है—वैसी पिछली सदी के वैज्ञानिक को नहीं थी। वह जानता है कि भौतिक विज्ञान मानव जगत का जो चित्र दृष्टिगत वस्तुओं को प्रस्तुत करता है, वे अत्यधिक एकांगी हैं और उनका अंतिम सच्चा रूप जानने के लिए उसे आत्मपरक सत्ता में प्रवेश करना ही होगा। मगर यह मंत्र के द्वारा ही सम्भव है, क्योंकि मंत्र जहां समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत है वहीं आत्मपरक सत्ता में प्रवेश करने का एक सटीक साधन भी है।

विज्ञानमय शरीर की उपलब्धि मंत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि है। जिस कुण्डलिनी शक्ति की चर्चा मंत्र करता है—उसका बोध होता है—प्राणमय शरीर में, उसका जागरण होता है—मनोमय शरीर में, इसी प्रकार उसका उत्थान होता है—विज्ञानमय शरीर में।

जितने भी उच्चतम तांत्रिक साधक हुए हैं, वे सभी मंत्र शक्ति को आत्मसात करके ही अग्रसर हुए हैं और वे आज इतिहास पुरुष हैं। मंत्र का जब उद्गम ही स्वयं भगवान शिव से हुआ है, जो मंत्र की थाह पाना भी सम्भव नहीं है। मंत्र का क्षेत्र इतना अधिक विस्तृत है, परन्तु फिर भी इस पुस्तक के द्वारा यह प्रयास है, कि पाठकों को कुछ गुप्त 'शाबर मंत्रों' के विषय में जानकारी दी जाए, जिन्होंने मंत्र के क्षेत्र में अद्वितीय मापदण्ड प्राप्त किए हैं।

यह सत्य है, कि तंत्र का प्रामाणिक ज्ञान रखने वाले आज बहुत कम ही तांत्रिक बचे हैं, परन्तु मंत्र आज भी जीवित है, इन सिद्ध विभूतियों के माध्यम से जिनका साहचर्य प्राप्त होना ही स्वयं में सौभाग्य है।

मंत्रों के माध्यम से उस देवी सहायता को प्राप्त करना, जिसके माध्यम से हम जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें, उसको साधना कहते हैं। साधना के लिए यह आवश्यक है, कि हम मंत्रों और उनके देवताओं से परिचित हों।

साधक गृहस्थ हो या उदासीन तंत्र साधना उन्हें अवश्य ही करनी चाहिए, क्योंकि तंत्र साधना के बिना शक्ति को धारण किए व्यक्ति साधनाओं के या जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रचण्डता के साथ सफल एवं विजयी नहीं हो सकता।

अतिइन्द्रिय ज्ञान को वैज्ञानिक आइंस्टीन ने भी स्वीकार किया है। उनका कहना है "जब हम जीवन और ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने का प्रयत्न करते हैं तो मन शंकाओं से भर जाता है, पर हमें कभी किसी जिज्ञासा को कुंठित नहीं होने देना चाहिए। किसी अज्ञेय वस्तु का हमें थोड़ा भी ज्ञान है तो बहुत है। मैं मानता हूं कि वैज्ञानिक प्रगति केवल अंतर्ज्ञान से ही सम्भव है। भगवान या परम सत्य की खोज वैज्ञानिक विधियों से ही सम्भव है—ऐसा मैं समझता हूं। ज्ञान वैज्ञानिक के लिए आवश्यक है। फिर भी ज्ञान तो वहीं तक हमारा साथ दे सकता है, जहां तक वह सिद्ध कर सकता है। पर एक स्थिति ऐसी भी आती है, जहां मस्तिष्क एक छलांग लगाकर बोध के उच्च स्तर पर पहुंच जाता है। इस स्थिति को अंतर्ज्ञान कह लीजिए। संसार के सब आविष्कार मानव प्रज्ञा के आगे की इस रहस्यमयी अनुभूति द्वारा ही सम्भव हुए हैं।

सच्चे तांत्रिक के लिए सारी धरती अपनी होती है। उनके आने-जाने पर कहीं कोई बाधा नहीं होती । रमता जोगी और बहता पानी सदा अपनी राह चलता रहता है, जो इनके सामने पड़ गया उसी का कष्ट दूर करना ये अपना धर्म समझते हैं।

किसी नगर के एक सेठ ने वृद्ध होने पर संन्यास लेने का निर्णय लिया। उसके कोई पुत्र नहीं था, जिसे काम सौंप कर वह निवृत्त हो जाता, अतः उसने परिचितों को बुलाकर कहा, कि कल प्रातः नगर में जो सबसे पहला व्यक्ति प्रवेश करेगा, उसे मेरा उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाएगा। अगले दिन सेठ के नौकर फटेहाल कपड़ों में एक युवक को ले आए, और उसे सेठ का पुत्र बनाया गया। सेठ ने अपनी पुत्री का विवाह उस युवक के साथ करके व्यापार की जिम्मेदारी उसे सौंप कर वन को प्रस्थान कर गए।

शनैः-शनैः युवक ने कारोबार की बागडोर सम्हाल ली। उसके घर में एक छोटी-सी कोठरी भी थी, जिसकी चाभी वह सदैव अपनी कमर में लटकाए रखता था। सप्ताह में एक बार उस कोठरी में जाता, आधा-एक घण्टे भीतर रहता और बाहर निकल आता, एक बड़ा ताला लगाता और कार्य करने लग जाता। नौकरों ने सोचा, कि सारा खजाना तो खजांची के पास है, सारे रत्न, माणिक्य वहां हैं, अन्य बहुमूल्य कागजातों की चाभियां हैं, फिर इस छोटे-से कमरे में ऐसा क्या है, कि सेठ-पुत्र हर सप्ताह भीतर जाता है, और थोड़ी देर बाद बाहर निकल आता है।

खजांची से रहा न गया, उसने हिम्मत कर सेठ के पुत्र से पूछा—"अगर आप क्षमा करें, तो यह बताएं कि उस कमरे में ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसकी सुरक्षा की आपको इतनी चिन्ता है?"

सेठ-पुत्र क्रोध में बोला—खजांची जी, यह तुम्हारे सोचने का विषय नहीं है, यह प्रश्न दुबारा कभी मत करना। अब तो उसका कौतुहल और भी बढ़ गया। सेठ के पुत्र ने किसी को भी उस कमरे का रहस्य नहीं बताया। बात सेठानी तक पहुंची, और स्त्री हठ तो प्रसिद्ध है, खाना-पीना छोड़कर बैठ गई। आखिर उसके आगे विवश होना पड़ा और नौकरों को लेकर गए, कमरे का ताला खोला तो भीतर कुछ भी न था। नौकरों ने पूछा, यहां तो कुछ नहीं है।

कमरे में एक खूंटी लगी थी, जिस पर गंदे फटे-पुराने धोती-कुर्ते की जोड़ी टंगी थी। सेठ-पुत्र ने उस ओर इशारा करते हुए कहा—"जब भी मुझे थोड़ा-सा अहंकार आ जाता है, तो मैं यहां आकर इसके दर्शन कर लिया करता हूं। मुझे स्मरण आ जाता है, कि एक दिन मैं किस जगह खड़ा था, और मेरा मन एकदम से शान्त हो जाता है और घमण्ड समाप्त हो जाता है, इसके बाद मैं बाहर आ जाता हूं। इसी प्रकार सच्चा तांत्रिक भी लाख बड़ा होने पर भी नम्र रहता है और अपनी पहली स्थिति कभी नहीं भूलता है।

हमारा जीवन जन्म के कष्ट से आरम्भ होता है। गर्भावस्था में हमारा शारीरिक विकास होता है। नाम रूपाकार बड़े-से-बड़ा होता जाता है। एक चरण विशेष के बाद सुख-दुःखों का अनुभव होने लगता है और गर्भ से बाहर आने के समय से वास्तविक दुःखों का आरम्भ होता है। जन्म के बाद हम सब कीड़े-मकोड़ों के समान असहाय होते हैं। इस प्रकार हमारे जीवन का आरम्भ होता है।

हालांकि बालक के जन्म पर उत्सव मनाया जाता है, किन्तु यह उसके वास्तविक दुःखों का प्रारम्भ होता है। इस जीवन काल की समाप्ति मृत्यु के समय होती है और मृत्यु भी अवांछित दुःख है। इन दो अवस्थाओं के बीच रोग और जरा के दुःख भी आते हैं।

दुःख भोगते इस शरीर का मात्र पोषण करते हुए हमें आगे जाकर जीवन को सोदेश्यता देने की आवश्यकता है। हमें स्वयं से प्रश्न करना चाहिए कि क्या जीवनभर शरीर-पोषण करना ही जीवन का उद्देश्य या सार है? अगर हम इस शरीर में निवास करने वाले चित्त में परिवर्तन ला सकें तो उसमें एक सोदेश्यता आ सकती है। वास्तव में शरीर ऐसा विषय नहीं है, जिसकी इतनी कामना की जाए या राग-भाव जोड़ा जाए। शरीर चाहे जितना सुन्दर हो या शक्तिवान हो, जब उसका विश्लेषण करें तो पाते हैं कि शरीर के वास्तविक अवयव तथा त्वचा, अस्थियां अथवा मज्जा इतनी सुन्दर नहीं हैं। ये सब अशुद्ध हैं, अस्वच्छ हैं। इस शरीर की उत्पत्ति हेतु माता-पिता के रज-वीर्य हैं जो स्वयं में अस्वच्छ हैं। शरीर में मल-मूत्र बनते हैं। इस प्रकार से शरीर मल और मूत्र पैदा करने वाला यंत्र है। शरीर का मुख्य काम ही भोज्य तथा पेय पदार्थों को पचाना तथा उच्छिष्ट पदार्थों का उत्सर्जन है। उत्पत्ति-विनाशशील वस्तु का तो निर्माण होता है, पर अनुत्पन्न तथा अविनाशी तत्व का निर्माण नहीं होता, खोज होती है। उसकी खोज के लिए गहरा उतरकर विचार करना आवश्यक है।

सूर्य दिन के स्वामी हैं—ऐसा तभी कहना पड़ता है, जब दिन की सत्ता मानते हैं। वहां लेशमात्र भी मोह निशा नहीं है—ऐसा तभी कहना पड़ता है जब रात की सत्ता मानते हैं। वहां दिन और निशा कहना बनता ही नहीं। ऐसा कहना वहीं बनता है, जहां द्वैत हो। **'नोद्यं वा परिहारो वा क्रियतां द्वैतभाषया।'** अर्थात् शंका-समाधान द्वैतभाषा से ही होता है।

तंत्र-मार्ग व्यक्ति को त्यागी बनाता है, सेवक बनाता है। वह व्यक्ति को सेवा-मार्ग पर ले जाता है। तंत्र कहता है—मन में कोई भाव आ गया तो वह जायेगा। जो उत्पन्न हुआ है, वह मरेगा—जाते हुए को हम भूल से आया हुआ मान लेते हैं। वास्तव में वह आया नहीं है, प्रत्युत जा रहा है। उत्पन्न नहीं हुआ है, प्रत्युत मर रहा है। जो जा रहा है, मर रहा है, उसके लिये क्या हर्ष और क्या शोक? क्या राजी और क्या नाराजी? जो जा रहा है, उसकी तरफ दृष्टि न डालें। सात्विक वृत्ति आयी या राजसी वृत्ति आयी अथवा तामसी वृत्ति आयी, संयोग हुआ या वियोग हुआ, आया या गया, कुछ न देखें।

हमें यह मानव योनि प्राप्त हुई है। इस योनि में मानव को विवेक-बुद्धि प्राप्त हुई है। प्रेमयुक्त हृदय में जो सम्भावनाएं विद्यमान हैं। उनका समुचित प्रयोग किया जाए तो हम जीवन की वास्तविक धन्यता का तथा मानव-जीवन के विराट उद्देश्य की पूर्णता का अनुभव कर सकते हैं।

अपने दृष्टिकोण से अगर हम देखें तो पाएंगे कि जब तक हमें ये मानसिक और शारीरिक क्षमताएं प्राप्त हैं, जो हमारे कर्मों और क्लेशों सरीखे हेतुओं से निष्पन्न हैं, तब तक अखण्ड आनंद की प्राप्ति नहीं होगी और हम अन्य प्राणियों को भी इसी स्थिति में ग्रसित पाएंगे। इसलिए हमें शांति प्राप्त करने की वास्तविक कामना

जाग्रत करनी चाहिए। यह ऐसी अवस्था है जो क्लेशों और कर्मों के बंधनों से मुक्ति दिलाती है। इसे साधना की स्थिति भी कह सकते हैं, हालांकि इसमें व्यक्ति को समाज और परिवार का त्याग नहीं करना होता। उस अवस्था में हम अन्य प्राणियों की भलाई के कार्यों में लगे होते हैं, इससे हमारा अपना कल्याण भी सम्भव होता है।

कभी-कभी साधना काल में हम मानसिक उत्तेजना और शिथिलता के सूक्ष्म लक्षण देखते हैं। हम विषय-उद्देश्य को स्पष्टतः देख नहीं पाते अथवा एकाग्रता अधिक घनीभूत हो जाती है। उस समय अपना साधना अभ्यास रोक देना आवश्यक नहीं, केवल चित्त को संतुलित करने की आवश्यकता होती है।

अगर चित्त अनायास विचलित होता है तो अंधेरे कक्ष में दीवार की ओर मुंह करके साधना करने से सहायता मिलती है। जो व्यक्ति साधनाजन्य शक्ति को आत्मसात करने का गंभीरता से अभ्यास कर रहा हो, उसे एक दिन में कई बार ध्यान-साधना करनी चाहिए। दस-दस मिनट की यह साधना करनी चाहिए।

अगर आप साधना शक्ति को उचित रूप से आत्मसात कर पाते हैं और ऐसे स्तर तक पहुंच जाते हैं कि घण्टों तक, उत्तेजना अथवा शिथिलता के बिना ध्यान के विषय पर चित्त केन्द्रित रख पाते हैं तो यह वास्तविक प्रगति है।

अगर अधिक समय तक बैठकर साधना करने पर चित्त शिथिल होता हो या विषय की स्पष्टता नष्ट होती हो तो वह साधना के समय की बरवादी ही है। अतः शुरू में साधना थोड़े-थोड़े समय के लिए करनी चाहिए। बहुत-से साधक प्रभावशाली मुद्रा में बैठकर भी मानसिक शिथिलता अथवा निमग्नता के कारण विराम डूबे होते हैं। अत्यधिक मानसिक शिथिलता से चित्त अधिकाधिक मंद पड़ता है।

साधक को ऐसे देवीरूप की भावना करनी चाहिए जो साधनाजन्य रूपकाय जैसी हो। ऐसे रूप पर चित्त केन्द्रित करके उसकी शून्यता की साधना करनी चाहिए। इस अवस्था में एक देवरूप सामने होता है और उसका शून्यता विषयक ज्ञान भी। अतः ऐसे चित्त में दोनों गुण विद्यमान होते हैं—देवरूप की अवधारणा और उसकी पूर्ण शून्यता का ज्ञान। इसी कारण से तांत्रिक साधना में देवों और मण्डलों की अवधारणा करनी आवश्यक होती है।

ये ऐसे ज्वलन्त प्रश्न हैं, जो प्रत्येक विचारशील साधक के मन-मस्तिष्क को उद्वेलित करते ही हैं और वह इनका उत्तर पाने का प्रयास भी करता है। वह एक चिन्तन करने का प्रयास करता है, कि आखिर कोई तो ऐसा उपाय होगा, जो उसके जीवन को आनन्द-पथ पर गतिशील कर सकेगा, कोई तो ऐसा मार्ग होगा, जो उसे समस्याओं, बाधाओं और परेशानियों के भंवर से निकाल कर उन्नति और पूर्णता के लक्ष्य की ओर गतिशील कर सकेगा। कोई तो ऐसी क्रिया होगी, जो उसके समस्त दुःखों का अंत कर सकेगी और वह आनन्द प्राप्त कर सकेगा।

जी हां, अवश्य है। इसके लिये आपको इस पुस्तक के पृष्ठ पलटने होंगे। मंत्रों का ज्ञान प्राप्त करना होगा, उन्हें अनुभव की कसौटी पर परखना होगा।

विश्व में शायद ही कोई आदमी यह बताता है कि मेरे पास इतना धन है, इतनी सम्पत्ति है, इतनी विद्या है, इतना कला-कौशल है, परन्तु भगवान ने शाबर तंत्र की गुप्त बात हमें बता दी कि सब कुछ शाबर तंत्र ही है। इससे बढ़कर उनकी क्या कृपा होगी।

अब तक मैंने जो कुछ पढ़ा और समझा है, उसका सार यह पुस्तक है। वह सार कोई नयी बात नहीं है, मेरे अनुभव की बात है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह सदा नयी-नयी बात चाहता है। वास्तव में नयी बात वही है, जो सदैव रहने वाली है। उस बात की ओर आप ध्यान दें। बहुत ही लाभ की बात है और बहुत सीधी सरल बात है। उसे धारण कर लें। दृढ़ता से मान लें तो अभी बेड़ापार है। अभी चाहे ऐसा अनुभव न हो, पर आगे अनुभव हो जायेगा— यह निश्चित है। जैसे, खेती करने वाले जमीन में बीज बो देते हैं, ओर कोई पूछे तो कहते हैं—खेती हो गयी। ऐसे ही मैं कहता हूं कि उस शाबर तंत्र को दृढ़तापूर्वक मान लें तो कल्याण हो गया। हां, जिसकी विशेष उत्कण्ठा होगी, उसे तो अभी तत्व का अनुभव हो जायेगा और कम उत्कण्ठा होगी तो अनुभव में देर लगेगी।

अंत में केवल इतना ही मुझे अपने पाठकों, पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों का भरपूर सहयोग और मार्गदर्शन मिल रहा है, जो मेरा उत्साह बढ़ाता है, कुछ नया लिखने की प्रेरणा देता है। स्मरण रखें, मैं आपका अपना हूं, अपने प्रेम से मुझे सींचिये।

तांत्रिक बहल
तंत्र सबके लिये मिशन
डी-4, राधापुरी, कृष्ण नगर,
(जमुनापार), देहली-110051

विषय-सूची

1

प्रवेशिका

हमारे प्राचीन तंत्र विज्ञान के विषय में निरन्तर संधान तांत्रिकों द्वारा किए जाते रहे हैं और इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है, कि क्या दूसरों की समस्याएं दूर की जा सकती हैं? मनुष्य जब से ज्ञान प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुआ, तब से उसके मन में यह भावना आ गई, कि किसी व्यक्ति के बोलने से पूर्व ही उसकी समस्या का ज्ञान हो जाए, तो उसे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है या विपरीत परिस्थिति से बचाया जा सकता है।

यह ज्ञान पूर्ण रूप से न होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में प्रति क्षण आतंकित रहता है। हर समय उसे मानसिक दबाव बना रहता है, उसे शंका रहती है कि कहीं उसके साथ धोखा या विश्वासघात न हो जाये। इन्हीं विचारों के कारण जो मानसिक तनाव रहता है, उसका प्रभाव उसके मन-मस्तिष्क पर, उसके शरीर पर, उसकी कार्यक्षमता पर भी पड़ता है।

जहां तक वाणी और शब्दों का प्रश्न है, वे तरंगों के माध्यम से प्रवाहित होते हैं, जब भी हम कुछ बोलते हैं, तरंगें, उस वाणी को दूसरों के कानों तक ले जाती हैं और ये तरंगें कानों से होकर मस्तिष्क तक पहुंचती हैं। इसी प्रकार विचारों की भी तरंगें होती हैं। इसलिए शब्द को ब्रह्म कहा गया है।

वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है, कि विचार मन में नहीं मस्तिष्क में बनता है और ये तरंगें मस्तिष्क में एक आकृति विचार तरंगों के माध्यम से वातावरण में प्रवाहित होती हैं। इस तरंगरूपी विचार को वातावरण ग्रहण कर सकता है, परन्तु मस्तिष्क की इस ग्रहण शक्ति को तंत्र साधना द्वारा ही जाग्रत किया जा सकता है।

इस हेतु तांत्रिकों ने साधना द्वारा विभिन्न प्रयोग किए। इसमें जिस व्यक्ति

का भविष्य जानना हो, उसकी आंखों में गहरे झांक कर विचारों को जानने का प्रयास किया गया, इसमें कुछ से सफलता भी मिली, जिससे यह तो सिद्ध हो गया कि विचार तरंग के माध्यम से प्रवाहित होते हैं और उन्हें सफलतापूर्वक ग्रहण किया जा सकता है। इस साधना में एक कमी यह थी, कि मंत्र बड़े क्लिष्ट थे, साधना भी जटिल थी। साधना करने वाले व्यक्ति को उच्च कोटि का साधक होना चाहिए। यह आवश्यक है।

कई बार आपके मन में अचानक अशान्ति छा जाती है, किसी दुर्घटना का मन में भय-सा होने लगता है, किसी मित्र अथवा प्रियजन के प्रति कुशंका होने लगती है और कुछ समय के पश्चात् ऐसी दुर्घटना का सन्देश मिलता है जिसकी आपको कल्पना भी नहीं थी, ये सब क्या है? ये वही तो सन्देश था जो साधना के माध्यम से आप तक आया लेकिन आप समझ नहीं सके। इन विचार को ग्रहण करने एवं भेजने में पूर्णता, तंत्र साधना के माध्यम से ही सम्भव है।

साधना के द्वारा चित्त की एकाग्रता हो जाने पर सिद्धि का अनुभव होता है और इसी ज्ञान से मानवात्मा की मुक्ति होती है।

शाबर तंत्र ग्रंथों में विवरण है, कि एक बार देवता कैलाश पर्वत पर शिव की स्तुति करते हुए बोले—"हे देवताधिदेव! तुम्हीं परमात्मा हो, शिव हो, तुम्हीं सब प्राणियों की गति हो, तुम्हीं जगत के आधार हो, तुम्हीं सबके पूज्य हो, तुम्हारे बिना किसी की कोई गति नहीं है। कृपा करके मेरे संशय का निवारण करें।

कौन-सी वस्तु संसार में समस्त सिद्धियों को देने वाली है? वह कौन-सा मार्ग है जो परमश्रेष्ठ है? कौन-सी साधना है जो स्वर्ग और मोक्ष दोनों ही देने वाली है? बिना तीर्थ, बिना दान, बिना यज्ञ और बिना ध्यान के मनुष्य किस उपाय से सिद्धि को प्राप्त कर सकता है? यह सृष्टि किससे उत्पन्न हुई है? किसमें इसका लय होता है? कृपया बताएं।"

इसके उत्तर में भगवान शिव बोलें कि विश्व के सभी पदार्थ—जड़ या चेतन, सजीव या निर्जीव—मात्र तीन गुणों के संयोजन से ही निर्मित होते हैं। मनुष्य की समस्त गतिविधियां, जीवन-शैली, जीवन में उतार-चढ़ाव, गुण-दोष, स्वभाव मात्र इन तीन गुणों अर्थात्—"सत्य", "रज", और "तम" से ही बनते हैं। इन तीनों गुणों का जिस पराशक्ति से जन्म होता है, वह शक्ति मैं हूं। मेरी ही पराशक्ति से सारा चराचर संसार उत्पन्न होता है, उन्हीं से संसार का पालन एवं समय पर नाश भी होता है। मैं ही रोगों और दुःखों को हरने वाला हूं।

मैं ही इच्छा, ज्ञान, क्रियाशक्ति वाला हूं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप में मैं ही गतिशील हूं। मैं ही ब्रह्मा रूप में इस चराचर जगत की सृष्टि करता हूं।

मैं ही विष्णु रूप में स्थित हो पालन करता हूं तथा मेरे ही शिव रूप से प्रलय होती है। जिसकी योनि में आज भी यह सारा संसार परिवर्तित हो रहा है, जिसमें महाप्रलय के समय यह संसार लीन हो जाता है तथा जहां से पुनः उत्पन्न भी होता है, ऐसी कौन-सी वस्तु है, जो प्राप्त नहीं हो सकती। अर्थात् सब कुछ प्राप्त हो सकता है। आवश्यकता केवल मुझे जानने की है।

वास्तव में जहां काली, तारा, छिन्नमस्ता, दुर्गा, बगलामुखी, मातंगी, धूमावती आदि महाविद्याएं जहां कठोर हैं, वहीं शावर तंत्र की साधनायें माधुर्यमयी हैं और करूणा तथा भक्तानुग्रहाकांक्षा में सर्वोपरि हैं। वे अपने साधक के शत्रुओं का स्तम्भन कर साधक को जीवन में अनेक प्रकार की सफलतायें प्रदान करती हैं।

एक नहीं हजारों योगियों, साधुओं, तांत्रिकों और गृहस्थ साधकों ने इस बात को स्वीकार किया है, कि शावर तंत्र की साधना कलियुग में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा दिलाने में समर्थ हैं। शाबर तंत्र साधना अनेक रूपों में उपलब्ध हैं, फिर भी जिन तीन रूपों में इनकी आराधना अधिक प्रचलित है, वे हैं—वाला, श्री एवं षोडशी। मेरी इस पुस्तक में अनेक दुर्लभ साधनाओं का वर्णन है, जो शीघ्रता से सिद्ध हो जाती हैं।

भारत में कोई मैं ही पहला लेखक या तांत्रिक नहीं हुआ हूं, मेरे पहले भी बहुत लेखक हुए हैं और आगे भी होते रहेंगे। लेकिन मैं वो पहला तांत्रिक लेखक अवश्य हूं जो अपने पाठकों को उपहार में कोई मंत्र नहीं, कोई आदेश नहीं, कोई निर्देश नहीं दे रहा हूं, न कोई अनमोल सूत्र ही दे रहा हूं। मैं तुम्हारी झोली में दे रहा हूं चमत्कारी शाबर तंत्र-मंत्र तुम्हारे जाने-पहचाने नाथ समाज से, अपने पास से। और इसके अलावा मैं तुम्हें कुछ नहीं दे रहा हूं और दे रहा हूं तो यह आशीर्वाद कि तुम लाभ उठा सको, साधना कर तथा और अधिक निखर कर उस रूप में आ सको जिसमें तुम आना चाहते हो।

यद्यपि मैं जन्म से, कार्य से तांत्रिक अथवा लेखक तो नहीं रहा हूं, पर अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को देखकर मैं स्वयं को किसी तांत्रिक से कम भी नहीं समझता था। अकेले ही बीहड़ों में भटकना और सिद्ध तांत्रिक लेखक का जीवन व्यतीत कर रहा हूं, परन्तु आज भी मुझे अपने बचपन के वे दिन याद आ जाते हैं, जब मैं अपने पिता के साथ रहता था। वे एक तंत्र मर्मज्ञ थे। आज मुझे तंत्र का जो ज्ञान है, वह सब उनके साथ रहने से ही हुआ है।

आज भी जब भी मैं किसी समस्या से ग्रस्त हो जाता हूं, तो मुझे शाबर मंत्रों का सहारा लेना पड़ता है, यही स्थिति मुझे इस साधना में मिली, उतनी अधिक सफलता मुझे शाबर मंत्रों में मिली।

मानव पैदा होता है और समय आने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, उसका

शरीर पंचमहाभूतों से निर्मित होकर पुनः उन्हीं में विलीन हो जाता है। जन्म और मृत्यु के बीच की दूरी ही जीवन के नाम से जाना जाता है। सामान्य मानव के लिए इस जीवन का पथ पूरी तरह से अन्धकारमय ही होता है, उसे ज्ञात ही नहीं होता, कि कब क्या होने वाला है, किस क्षण क्या घटित हो सकता है, कहां यह रास्ता ऊबड़-खाबड़ है, कहां-कहां ठोकरें लग सकती हैं, कहां से वह फिसल सकता है.. आदि आदि। कष्ट उसके पथ के साथी होते हैं। ना चाह कर भी उसे खट्टी-मीठी यादों से साक्षात्कार करना ही पड़ता है। ये साक्षात्कार होते हैं रोगों के, दुःखों के, पीड़ाओं के, कष्टों के, बाधाओं के, समस्याओं के, परेशानियों के.. और उस साक्षात्कार में वह इनसे टकराता-उलझता आगे बढ़ता रहता है। इस बीच कई ऐसे पड़ाव भी आते हैं, जिन्हें व्यक्ति खुशी, प्रसन्न, उत्साह आदि नामों से भी सम्बोधित करता है, लेकिन यह उसका भ्रम ही सिद्ध होता है और कुछ समय के पश्चात् यथार्थ के कठोर धरातल पर उसे इस बात का अनुभव भी हो जाता है, जब बार-बार दुःख, कष्ट, पीड़ा, बाधारूपी बाधायें उसको लहूलुहान कर देती है, परन्तु उन जख्मों के साथ चलना उसकी विवशता होती है। वह किसी सहारे को प्राप्त करने के लिए छटपटाता तो है, इसके लिए प्रयास भी करता है, मगर संसार के इस तीव्र फिसलनभरे पथ पर उसे असफलता ही हाथ लगती है।

इस विवशताओं से भरे यात्रा-पथ पर उसके साथी होते हैं काम, क्रोध, लोभ आदि जो उस पर हावी होकर उसे अधोगमिता की ओर ही अग्रसर करते हैं और इनसे छुटकारा पाना व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों से सम्भव नहीं होता, उसे बोध भी नहीं होता, इस कीचड़ से बाहर निकलकर श्रेष्ठत्व के पथ का अवलम्बन लेना चाहिए...और अगर बोध भी हो, तो इसका मार्ग पता नहीं होता है।

इस यात्रा के किसी पड़ाव पर कभी सौभाग्यवश तंत्र का सहारा मिल जाता है, जो साधना के द्वारा हाथ थामकर अपने आगोश में ले लेते हैं, उसके लहूलुहान जख्मों पर साधनारूपी मरहम लगाकर सुख प्रदान करते हैं और अग्रसर कर देते हैं एक नवीन पथ की ओर जो उनकी तेजस्विता के आलोक से प्रकाशमान होता है, जहां दुःख, पीड़ा, बाधा, कष्ट, समस्याओं आदि पर छाईयां कभी उसके जीवन को ग्रहण नहीं लगा पाते हैं।

तंत्र साधना में असफलता कोई नई बात नहीं है। असफलताएं जहां हमारा धैर्य बढ़ाती हैं सफलताएं हमारा उत्साहवर्धन करती हैं। आवश्यकता उन्हें सही रूप में पहचानने की है।

महाराष्ट्र के एक क्षेत्र में एक व्यक्ति रहता था। वह गंगाजी में स्नान करने जाने वाले लोगों को बहुत तंग करता था, उन पर थूकता था।

संत एकनाथ प्रतिदिन गंगास्नान करने जाते थे, वह उन्मत उन पर भी थूकता, पर एकनाथ पुनः स्नान कर आते। कभी-कभी तो चार-पांच बार भी स्नान करना पड़ता, तो संत उस उपद्रवी को धन्यवाद देते कि आपकी कृपा से मेरा इतनी बार स्नान हो जाता है। एक बार वह अधिक उन्मत होकर सरल संत की देह पर बार-बार थूकता ही रहा। वह थूकता ही जाए और एकनाथ स्नान ही करते जाएं। इस प्रकार कहते हैं, अनेक बार हुआ, इसके पश्चात् भी संत ने धैर्य नहीं खोया। उन्मत और सहिष्णुता का यह द्वन्द्व देखने कई लोग जुटे थे। अन्त में वह थक गया, लज्जित हुआ एकनाथ जी से क्षमा मांगने लगा।

मनुष्य जीवन को सभी योनियों में श्रेष्ठ बताया गया है और इसका मुख्य कारण यह कि जहां अन्य योनियों में चेतना की सर्वोच्च स्थिति प्राप्त नहीं की जा सकती, वहीं मानव योनि में यह सम्भव है। यह इसलिए क्योंकि हर योनि की अपनी सीमा होती है। चाहे वह पशु की हो, वृक्ष, पक्षियों की हो या चाहे फिर देवों की ही क्यों न हो, क्योंकि देवता भी अपने आप में पूर्ण नहीं हैं।

जब-जब भी देवताओं पर कोई विपदा आई जब-जब भी देवतागण किसी परेशानी में उलझे हैं, उन्होंने शिव से ही परामर्श लिया, शिव द्वारा ही उन्हें अपनी परेशानियों को दूर करने की युक्ति भी प्राप्त हुई। इसलिए जो व्यक्ति शाबर तंत्र साधना सम्पन्न कर लेता है, उसके जीवन में हर प्रकार की बाधा, दूर हो जाती है और वह इन सभी पर विजय प्राप्त कर आगे की ओर बढ़ता रहता है।

अगर चारों ओर सुखद स्थितियां मानव-जीवन में समाहित हो जाएं, तो व्यक्ति निश्चित ही बिना किसी परेशानी के उच्चता की ओर अग्रसर होता रहेगा, सभी प्रकार से संतुष्ट जीवन जी सकेगा और जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि को भी प्राप्त कर सकेगा। वहीं साधना के द्वारा भी इन्हें प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि—**'साधयति इति साधना'** का सूत्र सत्य है।

जब से सभी स्थितियां साधक के जीवन में आ जाती हैं, तो वह अपने ज़ीवन को मौज, मस्ती और आनन्द के साथ जी पाता है। उसके जीवन में कोई भी किसी भी तरह की न्यूनता नहीं रह पाती। फलस्वरूप उसकी समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं। वह इच्छाओं को दबाने की अपेक्षा उनको पूर्णता प्रदान करता है और 'मुक्ति में ही मुक्ति है' के कथन का चरित्रार्थ करते हुए अन्त समय में शिवत्व को भी प्राप्त कर लेता है और शिवत्व का सीधा अर्थ है, पूर्ण रूप से इच्छारहित स्थिति। जब व्यक्ति अपने जीवन में सभी उपाय कर विवशता की स्थिति में आ जाए और उसके लिए सर्वोच्चता, पूर्णता स्वप्न की भांति दिखने लगे, तो शिव के अवतार गोरखनाथ के शाबर मंत्र की साधना आपके स्वप्न को

साकार कर सकती है, क्योंकि इस साधना के द्वारा अगर ग्रह-दोषों से जीवन में कोई दुर्घटना होनी होती है या फिर अगर आकस्मिक दुर्घटना का योग होता है, तो वह भी नष्ट हो जाता है।

क्या कभी सोचा है यह जीवन क्या है?—मेरा जन्म क्यों हुआ?—क्या मैं जो इतनी भाग-दौड़ करता हूं, यह प्रेम है?

—नहीं, यह तो एक सौदा है।

विवाह किया है, पत्नी ने अपना तन सौंप दिया, तो उसको जीवनभर ढोना ही पड़ेगा, विवशता है, यह वासना, प्रेम का तो अंश मात्र भी इसमें नहीं है।

...और अगर जीवन में प्रेम नहीं होगा, तो व्यक्ति तनावों से, जटिल बीमारियों से, चिन्ताओं से ग्रस्त होकर समाप्त हो जायेगा।

प्रेम और समर्पण की कला सीखी जा सकती है "शाबर मंत्र-तंत्र साधना" से। शाबर मंत्र साधना ही प्रेम को अभिव्यक्त करने का सौम्य और सशक्त माध्यम है।

जिन्होंने शाबर तंत्र साधना नहीं की, उनके जीवन में प्रेम नहीं है, तन्मयता नहीं है, प्रफुल्लता नहीं है और जिन्होंने तंत्र साधना की उनके जीवन में रस आया, प्रेम करने की कला आई, उन्होंने जीवन का उत्सर्ग कर ध्यान की सम्पन्नता की अमूल्य निधि पाई।

आप क्या हैं, आपको यह जानने की आवश्यकता नहीं, आप क्या कर रहे हैं, हमें यह जानने की भी आवश्यकता नहीं। मैं तो इस पुस्तक के माध्यम से जीवन में वह सफलता की चमक भर देना चाहता हूं जिससे सारी सफलताएं खिंची हुई चली आएं, आपके गले में सफलता की वरमाला डालने के लिए, आपका सारा जीवन खुशियों से भरने के लिए, आपकी सब कुछ बन जाने के लिए।

जीवन में कुछ क्षण ऐसे भी होने चाहिएं, जो केवल स्वयं के लिए हों, जब उन क्षणों में व्यक्ति केवल अपने लिए जिये, सोचे और प्रयत्न करे।

शाबर तंत्र-मंत्र साधना के द्वारा संसारी सभी बन्धनों से मुक्त हो सकता है, तब उसे विषम परिस्थितियों पर नियंत्रण और दृढ़ संकल्पयुक्त होकर चित्त को ईश्वर और गुरु-चरणों में लगाने की क्षमता प्राप्त होती है। सम्भवतः इसीलिए ही कहा गया है—

॥ तस्मै मनः शिव संकल्पमस्तु ॥

❑❑❑

2

शाबर मंत्र में सफलता की कुंजी

मंत्र अच् निमित "मंत्र" शब्द का अर्थ होता है किसी भी देवता को सम्बोधित किया गया वैदिक सूक्त या वेद मंत्र। प्रार्थना परक यजुस् जोकि किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो मंत्रों की संख्या में आते हैं। कालान्तर में अनेक प्रकार के तांत्रिक श्लोक जोकि विशिष्ट देवता को उद्देश्य करके बोले गये तथा विशेष चमत्कारिक शक्ति से सम्पन्न होने से वह भी "मंत्र" कहलाने लगे।

इसी प्रकार जो शब्द अलौकिक अर्थ प्रतीत कराता हो और जिसे "गुरुमुख" से सुनने के पश्चात् शिष्य उच्चारण करता हो वह भी मंत्र की श्रेणी में आते हैं। मंत्र की शक्ति की व्याख्या करने पर यह कहा जा सकता है कि मंत्र नाशरहित है, सर्वव्यापक है।

तांत्रिक सम्प्रदायों में प्रयुक्त अनेक सूक्ष्म रहस्यमय शब्दखण्डों और अक्षरों को भी "मंत्र" कहते हैं तथा विश्वास किया जाता है कि इन बीज मंत्रों से महान सिद्धियां प्राप्त होती हैं। मंत्र शाश्वत है, अजर है, अमर है, इस बात को किसी और ढंग से प्रमाणित करने की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती है।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि मंत्रों का प्रभाव नहीं होता, ये वे ही लोग हैं जो कि पुस्तकों में लिखे मंत्रों को पढ़कर प्रयोग में लाने का प्रयत्न करते हैं।

खेद की बात है, आज तंत्र धनदायक व्यवसाय बन गया है। आज कोई भी यह नहीं जानना चाहता है कि लेखक के पास तंत्र-मंत्र का कितना ज्ञान है? उसने कितनी साधना की है? तंत्र के नाम की पुस्तक देखी और खरीद ली। अब वह कितनी खरी है अथवा खोटी है, खरीदार बाद में देखता है।

आज यही शिकायत है कि पुस्तक नाम के अनुसार नहीं होती है। लेखक बंधु ने अच्छा-सा नाम सोचा और मुख पृष्ठ पर दे दिया। भीतर चाहे कुछ भी हो। आप स्वयं देखें आज के तांत्रिक सरस्वती पुत्रों को अपने पास इसलिए रखते हैं कि वह उनका यशोगान कर सकें। आज व्यवसायी लेखक भाइयों की स्थिति तो और भी विचित्र है। आप पुस्तक का विषय बतलाएं वह एक सप्ताह के भीतर पुस्तक लेकर उपस्थित हो जाएंगे—दावे के साथ कहेंगे विषय अछूता है, सामग्री अनूठी है, परिश्रम अंथक है। आप ऐसी पुस्तकों से बचें।

मंत्र की मूल चेतनाशक्ति तो "ध्वनि" में निहित है और यह ध्वनि पुस्तक के निर्जीव पृष्ठ कभी नहीं बतला सकते। इसके लिए गुरु की आवश्यकता रहती है। कुछ लागों की मानसिक वृत्तियां इतनी निम्न हो चुकी हैं कि मंत्रों को सीखने के लिये गुरु के पास जाने में उन्हें शर्म आती है। इसमें वह अपमान समझते हैं।

कोई तंत्र सगुण मानता है और कोई निर्गुण मानता है तो यह सब का अपना दृष्टिकोण है। इस बात को समझने के लिये एक दृष्टान्त है। पांच अन्धे थे। उन्होंने एक आदमी से कहा कि भाई, हमें हाथी दिखाओ। हम जानना चाहते हैं कि हाथी कैसा होता है? उस आदमी ने उनको एक हाथी के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। एक अन्धे के हाथ में हाथी की सूंड आयी। दूसरे के हाथ में हाथी का दांत आया। तीसरे के हाथ में हाथी का पैर आया। चौथे के हाथ में हाथी की पूंछ आयी। पांचवें को हाथी के ऊपर बैठा दिया। उन्होंने अपने-अपने हाथ फेरकर हाथी को देख लिया कि ठीक है, यही हाथी है। अब वे पांचों आपस में झगड़ा करने लगे। एक ने कहा कि हाथी तो बांह की तरह होता है। दूसरे ने कहा कि नहीं, हाथी तो मूसल की तरह होता है। तीसरा बोला कि तुम दोनों झूठे हो, हाथी तो खम्भे की तरह होता है। चौथे ने कहा कि बिल्कुल मिथ्या कहते हो, हाथी तो रस्से की तरह होता है। पांचवां बोला कि हाथी तो छप्पर की तरह होता है, यह मेरा अनुभव है। इस तरह सबका वर्णन सही होते हुए भी गलत है, क्योंकि वह एक अंग का वर्णन है, सर्वांग का नहीं। सबने हाथी के एक-एक अंग को हाथी मान लिया, पर वास्तव में सब मिलकर एक हाथी है। ऐसे ही तंत्र का झगड़ा है। वास्तव में सब मिलकर एक ही शक्ति का वर्णन है। एक ही वस्तु अलग-अलग कोण से देखने पर अलग-अलग दिखायी देती है, ऐसे ही एक ही शक्ति अलग-अलग दृष्टिकोण से अलग-अलग दीखती है।

तात्पर्य है कि शक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता। वे सगुण भी हैं, निर्गुण भी हैं, साकार भी हैं, निराकार भी हैं और इन सबसे विलक्षण भी हैं, जिसका अभी तक तंत्र शास्त्रों में वर्णन नहीं आया है। उसका पूरा वर्णन हो

सकता भी नहीं। प्राकृत मन, बुद्धि वाणी के द्वारा प्रकृति से अतीत तत्व का वर्णन हो ही कैसे सकता है?

द्वैत, अद्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि जितने भी मत-मतान्तर हैं, उन सबसे परिणाम में एक ही तत्व की प्राप्ति होती है।

विदेशियों की गुलामी, आधुनिक शिक्षा की चमक-दमक में पले भारतीय युवक ही अनधिकृत रूप से मंत्र विज्ञान के विषय में ज्यादा टीका-टिप्पणी करते हुए देखे गये हैं या जाते हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि यह विद्या तांत्रिकों के पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आ रही है। अतः इस शक्ति का मूल स्रोत पकड़ने के लिये आपको तांत्रिकों की शरण में जाना ही पड़ेगा। तांत्रिक मंत्रों की साधना के लिये हमें काफी अध्ययन, परिश्रम व अभ्यास करना ही पड़ेगा। हम तांत्रिक मंत्रों की शक्ति को बेडरूम में सोते-सोते बिना प्रयास व परिश्रम के पुस्तकों के निर्जीव पृष्ठों में नहीं ढूंढ सकते हैं।

मंत्र साधना करने वालों के लिये मंत्र का स्वरूप क्या है—इस विषय में दो ही बातें हो सकती हैं, एक तो मंत्र पहले अपनी शक्ति दिखा दें, फिर उसके अनुसार उपासना करें और दूसरी, हम पहले मंत्र कोई भी रूप मान लें, फिर साधना करें। इन दोनों में दूसरी बात ही ठीक बैठती है। कारण कि मंत्र पहले अपना शक्ति दिखा दें, फिर हम साधना करें तो उस रूप का ध्यान, वर्णन आदि करने में हमारे से कहीं न कहीं गलती हो ही जायेगी, जिसका हमें दोष लगेगा। ईष्ट भी कह सकते हैं कि तुमने भूल क्यों की? इसलिये तांत्रिकों ने यह नियम बनाया है कि साधक मंत्र के जिस रूप का ध्यान करें, जिस नाम का जप करें, उसको वे अपना ही मान लेते हैं, क्योंकि मंत्र ही सब कुछ है।

तंत्र विज्ञान के साधक को अपने मत, सम्प्रदाय आदि का आग्रह नहीं रखना चाहिये, बल्कि उसका अनुसरण करना चाहिये। अपने मत का आग्रह रखने से उसका दूसरे मत से द्वेष हो जायेगा, जिससे वह दूसरे की बातों को निष्पक्ष होकर नहीं सुन सकेगा। सभी मत, सम्प्रदाय आदि में अच्छे-अच्छे तांत्रिक हुए हैं। अपने मत का आग्रह रहने से साधक उन महापुरुषों की अच्छी-अच्छी बातों से वंचित रह जायेगा। अतः साधक को चाहिये कि वह प्रत्येक मत, सम्प्रदाय आदि की बातों को निष्पक्ष होकर सुने, उन पर गहराई से विचार करे और जो बातें उपयोगी लगें, उनको ग्रहण करे। साधक को सारग्राही बनना चाहिये। अगर उसको अपने या दूसरे के मत में कोई शंका पैदा हो जाये तो जिन पर उसकी श्रद्धा हो, उनसे पूछकर समाधान कर लेना चाहिये। न समझने के कारण अपने मत में कोई कमी या बाधा दीखे तो उसका त्याग कर देना चाहिये।

जिस प्रकार नदी निरन्तर बहती है, एक क्षण के लिये भी स्थिर नहीं रहती, परन्तु वह जिस आधार के ऊपर बहती है, वह स्थिर रहती है, एक इंच भी आगे बहकर नहीं जाती। नदी में कभी स्वच्छ जल आता है, कभी कूड़ा-कचरा आता है, कभी पुष्प बहते हुए आ जाते हैं, कभी कोई मुर्दा बहता हुआ आ जाता है, परन्तु शिला में कोई फर्क नहीं पड़ता। वह ज्यों की त्यों अपनी जगह स्थित रहती है। तात्पर्य है कि जो निरन्तर बहता है, वह "असत्" है और जो निरन्तर रहता है, वह "सत्" है। यह सत्य नित्य रहने वाला, सबसे परिपूर्ण, अचल, स्थिर और अनादि है।

साधक स्नान के लिये जल ऋतु के अनुसार प्रयोग कर सकता है, किन्तु ठण्डा जल ताजगी देने वाला माना जाता है। जो लोग शीत ऋतु में ठण्डे पानी से स्नान करने में कष्ट का अनुभव करते हों, वे कुछ गर्म पानी का प्रयोग कर सकते हैं। स्नान का महत्व स्वास्थ्य की दृष्टि से ही नहीं है, अध्यात्मिक दृष्टि से और भी अधिक है। यदि कोई जप, पूजन, उपवास आदि करना चाहते हो, तब तो स्नान और भी अधिक अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि स्नान किये बिना यह सभी कर्म निष्फल ही माने जाते हैं।

अगर हम देखें तो जीवन में आहार और विहार का सर्वाधिक महत्व है। ज्योतिष के हिसाब से दूसरा भाव आहार का और सप्तम भाव विहार का होता है। सारे रोग, शोक आहार और विहार से ही उत्पन्न होते हैं। आहार और विहार से साधक का मानस बनता है।

मानसिक शुद्धि का तात्पर्य विचारों की शुद्धता से है। सांसारिक वासनाएं मनुष्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि की उत्पत्ति करती हैं, जिनके कारण उसके विचार अशुद्ध हो जाते हैं। अगर काम-वासना रहती है तो साधक उसी में डूबा रहता है। उसे उससे अतिरिक्त अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता। अगर काम में व्यवधान पड़ता है तो झुंझलाहट और क्रोध की उत्पत्ति हो जाती है। लोभ उससे भी अधिक साधक को अन्धा बना देता है। जब वह रहता है तो मनुष्य यह नहीं सोचता कि हम जिस धन के लिये लालायित हैं, अगर अधर्म से उसका उपार्जन किया जाएगा तो पाप के अर्जित होने के कारण सदा ही अशान्ति का हेतु बना रहेगा।

शरीर शुद्धि और मानसिक शुद्धि पर ध्यान दिया जा सके तो जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है। इनके अतिरिक्त एक आहार-शुद्धि और है। यह भी बहुत आवश्यक है। प्रत्येक अनुष्ठान में मंत्र-जप के लिये माला की आवश्यकता होती है। बिना माला के किसी प्रकार का जप नहीं हो सकता।

मालाएं अनेक प्रकार के मनकों से बनाई जाती हैं, जिनमें सौम्य कर्मों में मुख्य रूप से प्रयोग में लाई जाने वाली मालाएं तुलसी, चंदन, कमलगट्टा, स्फटिक आदि की होती हैं। मालाएं तीन प्रकार की मानी जाती हैं—

अष्टोतरशतं कार्या चतुष्पंचाशदेव वा।
सप्तविंशतिमाना वा ततो हीनाधमा स्मृता।।

माला एक सौ साठ मनकों की अथवा चौवन मनकों की बनावें अथवा सत्ताईस मनकों की बना लें। इससे कम मनकों की अथवा उक्त तीन संख्या से भिन्न संख्या की माला अधम कही जाती है। माला के लिये जो मनके लिये जायें वे टूटे-फूटे, खण्डित न हों! सभी देखने में समान, सुन्दर और स्वच्छ होने चाहियें। धन की सिद्धि के उद्देश्य से पैंतीस मनकों की माला प्रयोग करें।

तंत्र माला की प्राण-प्रतिष्ठा

मनके अभिमंत्रित करने के मन्त्र

1. ओमंकार मृत्युंजय सर्वव्यापक प्रथमेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
2. ओमांकार कर्षणात्मक सर्वपगत द्वितीयेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
3. ओमिंकार प्रष्टिदा क्षोमहर तृतीयेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
4. ओमींकर वाक्प्रसाद कर निर्मल चतुर्थऽक्षे प्रतितिष्ठ।
5. ओमुंकार सर्वबलप्रद सारतर पंचमेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
6. ओमूंकारोच्चाटनकर दुःसह षष्ठेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
7. ओमृंकार संक्षोमकर चंचल सप्तमेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
8. ओमृंकार सम्मोहन करोज्जवलाष्टमेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
9. ओलृंकार विद्वेषणकर गुह्यक नवमेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
10. ओलृंकार मोहकर दशमेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
11. ओमेंकार सर्ववश्यकर शुद्ध सत्वैकादशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
12. ओमैंकार शुद्ध सात्विक पुरुषवश्यकर द्वादशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
13. ओमोंकाराखिल वाङ्मय नित्यशुद्ध त्रयोदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
14. आमौंकार सर्व वाङ्मय वश्यकर शान्त चतुर्दशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
15. ओमंकार गजादि वश्यकर मोहन पंचदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
16. ओमःकार मृत्युनाशनकर रौद्र षोडशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
17. ओं कंकार सर्वविषहर कल्याद सप्तदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ
18. ओं खंकार सर्व क्षोमकर व्यापकाष्टादशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।

19. ओं गंकार सर्व विघ्नशमन महत्तरैकोनविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
20. ओं घंकार सौभाग्यदस्तम्भनकर विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
21. ओं ङ्कार सर्व विषनाशनकरोग्रैकविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
22. ओं चंकाराभिचारघ्न क्रूर द्वाविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
23. ओं छकार भूतंनाशकर भीषण त्रयोविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
24. ओं अंकार कृत्यादिनाशकर दुर्धर्ष चतुर्विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
25. ओं झंकार भूतनाशकर पंचविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
26. ओं ञंकार मृत्यु प्रथमन षडविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
27. ओं टंकार सर्व व्याधिहर सुभग सप्तविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
28. ओं ठंकार चन्द्र रूपाष्टाविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
29. ओं डंकार गरुड़ात्मक विषघ्न शोभनैकोनविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
30. ओं ढंकार सर्व सम्पत्प्रद सुभग त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
31. ओं णंकार सर्व सिद्धिप्रद मोहकरैक त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
32. ओं तंकार धनधान्यादि समत्प्रद प्रसन्न द्वात्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
33. ओं थंकार धर्मप्राप्तिकर निर्मल त्रयस्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
34. ओं दंकार पुष्टिवृद्धिकर प्रियदर्शन चतुस्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
35. ओं धंकार विषज्वघ्न विपुल पंचत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
36. ओं नंकार भक्तिमुक्तिप्रद शान्त षट्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
37. ओं पंकार विषविघ्ननाशन भव्य सप्तत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
38. ओं फंकाराणिमादि सिद्धिप्रद ज्योतिरूपाष्टत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
39. ओं बंकार सर्वदोषहर शोभनैकोनचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
40. ओं मंकार भूत प्रशान्तिकर भयानकचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
41. ओं मंकार विद्वेषिमोहनकरैकचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
42. ओं यंकार सर्वव्यापक पावन द्विचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
43. ओं रंकार दाहकर विकृत त्रिचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
44. ओं लंकार विश्वंभर भासुर चतुश्चत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
45. ओं वंकार सर्वाप्यायनकर निर्मल पंचचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
46. ओं शंकर सर्वफलप्रद पवित्र षट्चत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
47. ओं षंकार धर्मार्थ कामद धवल सप्तचतवारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ
48. ओं संकार सर्वकारण सार्ववर्णिकाष्टचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ।
49. ओं हंकार सर्व वाङ्मय निर्मलैकोनपंचादशक्षे प्रतितिष्ठ।
50. ओं लंकार सर्वशक्तिप्रद प्रधान पंचादशक्ष प्रतितिष्ठ।

51. ओं क्षंकार परात्पर तत्त्वज्ञापक परंज्योतीरूप शिखामणौ प्रतितिष्ठ।

सवार्थसिद्धि के लिये सत्ताईस दानों की और अभिचार कर्म के लिये पन्द्रह दानों की माला काम में लावें। सकाम में चौवन दाने की माला उपयुक्त रहती है, किन्तु तांत्रिकों का मत है कि एक सौ आठ मनकों की माला सभी प्रकार की सिद्धियों के उद्देश्य से उपयुक्त है।

किसी भी प्रकार की माला बनानी हो, उसके दानों का विधिपूर्वक पूजन करना चाहिये। सर्वप्रथम मनकों का चयन कर उन्हें गोमुख, गोमूत्र, दूध, दही, शुद्ध घी में डालकर क्रमशः शुद्ध करें अथवा पांच गायों का दूध मिलाकर उसमें डालकर दायें हाथ से धीरे-धीरे मलें और फिर गन्ध-मिश्रित जल से स्नान करावें और स्वच्छ स्थान पर धातु पत्र पर प्रतिष्ठित करें तथा गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि से पूजन कर उन्हें निर्दिष्ट मंत्रों से भावित करें। "अ" से "क्ष" पर्यन्त जो इक्यावन अक्षर हैं, उनके मंत्रों द्वारा क्रमशः एक-एक मनका भावित कर-करके पिरोते चलें। वस्तुतः "अ" से "ल" पर्यन्त मनकों को भावित कर पुनः उल्टा लौटना होता है। "क्ष" सुमेरू है, इसलिये उसके उल्लंघन का निषेध है। इस प्रकार जब सौ मनके भावित हो जायें तब शेष आठ मनकों को अंकार, कंकार, चंकार, टंकार, तंकार, पंचकार, यंकार और शंकार से भावित करके सुमेरू को क्षंकार से भावित किया जाता है। प्रत्येक मनका इस प्रकार पिरोते हुए, चाहें तो मध्य में गांठ भी लगाते चलें। गांठ ढाई या तीन फेरे की दें या ब्रह्मगांठ लगावें' अन्त में तो ब्रह्मगांठ लगाकर ही सुमेरू को गूंथा जाता है।

माला तीन प्रकार की होती हैं—करमाला, मणिमाला और वर्णमाला। इनमें प्रथम—करमाला का तात्पर्य अंगुलियों पर जप संख्या की गणना करते रहने से है। यह दो प्रकार की है—एक में अंगुलियों से गणना होती है और दूसरे में अंगुलियों के पर्व से। अक्षमाला या मणिमाला का अभिप्राय उस माला से है, जो सूत, रेशम अथवा सोने-चांदी आदि के तारों में गूंथ कर बनाई जाती है। तीसरे प्रकार की माला वर्णमाला का वर्णन सनत्कुमार तंत्र में इस प्रकार मिलता है जिससे 'अ' से 'क्ष' पर्यन्त सभी वर्णों में अनुस्वार लगाकर अनुलोम-विलोम क्रम से जप करें, वह माला श्रेष्ठ समझनी चाहिये।

यहां पर तंत्र-मंत्र साधना के समय यह प्राचीन परम्परा रही है कि शुद्ध घी का दीपक नेत्रों के सामने होना चाहिये। इसमें रहस्य यह है शब्द मूलतः वायु तत्व प्रधान होते हैं, इनको तेजोमय बनाने के लिए अग्नितत्व प्रधान दीपक की लौ के सामने शब्द उच्चारित किये जाते हैं। उसके ऊपर गुरते हुए शब्द तेजोमय रूप को धारण कर समस्त वायुमण्डल में फैल जाते हैं।

साधक को भूतकाल में किये हुए कर्मों की याद आने से जो सुखः-दुःख होता है, चिन्ता होती है, यह वास्तव में अहंकार के कारण है। वर्तमान में अहंकार विमूढ़ात्मा होकर अर्थात् अहंकार के साथ अपना सम्बंध मानकर ही साधक सुखी-दुःखी होता है। स्थूल दृष्टि से भी देखें तो जैसे अभीभूत काल का अभाव है, ऐसे ही भूतकाल में किये गये कर्मों का अभी प्रत्यक्ष अभाव है। अतः भूतकाल के अभाव को भावरूप से देखना, भूतकाल की घटनाओं को सत्ता देकर राजी-नाराज होना बिल्कुल गलती की बात है।

सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तो जैसे भूतकाल में वर्तमान का अभाव था, ऐसे ही भूतकाल का भी अभाव था, इसी तरह वर्तमान में जैसे भूतकाल का अभाव है, ऐसे ही वर्तमान का भी अभाव है, परन्तु साधना नित्य-निरन्तर भाव है। साधक भूतकाल की स्मृति में ऐसा आरोप कर लेता है और सुखीः-दुःखी होता है तो यह उसकी बड़ी भारी भूल है। कारण कि यह अहंकार विमूढ़ात्मा की स्मृति है, तत्व की नहीं।

यह एक सर्वमान्य सिद्धांत है, जो वस्तु हम देखते हैं अथवा पकड़ते हैं, वह छोटी होती है, अगर वह बड़ी होगी तो पकड़ में कैसे आएगी? कहने का तात्पर्य यह है पकड़ में आने वाली चीज छोटी होती है और पकड़ने वाला बड़ा होता है। नेत्रों से वही वस्तु दीखती है, जो नेत्रों की पकड़ में आती है। इन्द्रियों से उसी वस्तु का ज्ञान होता है, जो इन्द्रियों से छोटा होता है। कार्य में कारण तो रहता है, पर कार्य के अन्तर्गत कारण नहीं आ सकता, जैसे—घड़े में पृथ्वी तो रहती है, पर घड़े के अन्तर्गत पृथ्वी नहीं आ सकती।

तंत्र-मार्ग में भी साधक बड़ा होता है, सिद्धि छोटी है। साधक, साधना और सिद्धि तीन स्थिति अलग दीखते हुए भी एक है। साधक साधना के मार्ग से सिद्धि के क्षेत्र में प्रवेश करता है। जिस प्रकार कोई मनुष्य रॉकेट में बैठकर पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से बाहर निकल जाता है, तो वह चन्द्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति में प्रवेश कर जाता है अर्थात् उसका आकर्षण चन्द्रमा की तरफ हो जाता है। ऐसे ही सांसारिक बातों की निवृत्ति होने पर जब साधक संसार के आकर्षण से बाहर निकल जाता है, तब उसका आकर्षण स्वतः ही साधना की तरफ हो जाता है। संसार के आकर्षण से बाहर निकलने का मार्ग साधना है और सिद्धि की तरफ आकर्षण होना ही सफलता है। साधना में एकरस है और सिद्धि में आनन्द ही आनन्द है।

साधक का कर्त्तव्य है—साधन विरुद्ध कार्य न करना अर्थात् जो कार्य सिद्धि की प्राप्ति में बाधक हो, उसका त्याग करना। साधना विरुद्ध कार्य का त्याग

करने पर साधन करना नहीं पड़ता, प्रत्युत स्वतः होता है। स्वतः होने वाले साधन करने से अभिमान नहीं आता। वास्तव में साधना सिद्ध है। साधक को जो देश, काल, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि मिली है, उसका सदुपयोग करना चाहिये। सदुपयोग करने का तात्पर्य है—प्राप्त वस्तु आदि को अपनी न मानकर, प्रत्युत अभावग्रस्तों की ही मानकर निःस्वार्थ भाव से उनकी सेवा में लगा देना।

साधक को इस बात की सावधानी रखनी चाहिये कि उसके द्वारा कोई साधना विरुद्ध कार्य न हो। साधना विरुद्ध कार्य न करने से साधक की स्वतः उन्नति होती है और साधन विरुद्ध काम करने से साधक का स्वतः पतन होता है। साधकों के सामने प्रायः यह समस्या आती है कि हम साधना करते हैं, ध्यान करते हैं फिर भी सिद्धि अनुभव नहीं हो रहा है, वास्तविक स्थिति नहीं हो रही है, क्या कारण है? कहां और क्या बाधा लग रही है? इस समस्या का मूल कारण है—सुख की लोलुपता। विनाशी वस्तु के विषय से होने वाला जो सुख है, उस सुख की जो लोलुपता है, भीतर से जो इच्छा है कि यह सुख मिले, यह सुख बना रहे, यह सुख बढ़ता रहे—यही बाधा है। इसी के कारण वास्तविक स्थिति का अनुभव नहीं हो रहा है।

आप मेरी इस बात को परख कर देखें। सुख का आना बुरा नहीं है, प्रत्युत सुख का भोग और उसकी इच्छा बुरी है। यह सुख की इच्छा बहुत दूर तक साधक के लिये बाधक होती है। जहां उसने सुख भोगा, वहीं बाधा लग जायेगी।

जैसें पैर में कांटा गड़ जाये तो उसको काटे से ही निकालते हैं। इसलिये कांटा निकालते समय बड़ी पीड़ा होती है, परन्तु कांटा निकल रहा है—इस बात को लेकर उस पीड़ा में भी सुख का अनुभव होता है। प्रसव के समय गर्भवती को बेतरह पीड़ा होती है, परन्तु उस समय जब वह यह सुनती है कि लड़का जन्मा है, तब उसको उस पीड़ा में भी आनन्द का अनुभव होता है। हम कर्जा चुकाते हैं तो घर से पैसे देने पड़ते हैं, पर कर्जा उतर गया इस बात से बड़ी प्रसन्नता होती है। घर से सौ रुपये निकल जायें तो दुःख होता है, पर सौ रुपये निकलने पर ऋण उतरता हो तो आदमी को बड़ा सुख होता है कि बहुत अच्छा हुआ।

अनेक साधक मुझसे प्रश्न करते हैं, साधना में सफलता कब तक मिलेगी? इस सन्दर्भ में मैं एक कथा बताता हूं। ध्यानपूर्वक सुनो।

एक साधक वृक्ष के नीचे बैठकर साधना कर रहा था। एक दिन वहां नारदजी आ गये। उसने नारदजी से कहा कि आप इतनी कृपा करें कि जब भगवान के पास जायें, तब उनसे पूछ लें कि वे मुझे कब मिलेंगे? नारद भगवान के पास गये और पूछा कि अमुक स्थान पर एक भक्त साधना कर रहा है, उसको

आप कब मिलेंगे? भगवान ने कहा कि उस वृक्ष के जितने पत्ते हैं, इतने जन्मों के पश्चात् मिलूंगा। ऐसा सुनकर नारदजी उदास हो गये। वे उस साधक के पास गये, पर उससे कुछ कहा नहीं। साधक ने प्रार्थना की कि भगवान ने क्या कहा है, कह तो दो। नारद बोले कि तुम सुनोगे तो निराश हो जाओगे। जब उसने बहुत आग्रह किया, तब नारद बोले कि इस वृक्ष के जितने पत्ते हैं, उतने जन्मों के बाद भगवान की प्राप्ति होगी। साधक ने उत्सुकता से पूछा कि क्या भगवान ने स्वयं ऐसा कहा है? नारद ने कहा कि हां, स्वयं भगवान ने कहा है। यह सुनकर वह खुशी से नाचने लगा कि भगवान मेरे को मिलेंगे, मिलेंगे, अवश्य मिलेंगे! क्योंकि भगवान के वचन कभी झूठे नहीं हो सकते। इतने में ही भगवान वहां प्रकट हो गये। नारद ने देखा तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे भगवान से बोले कि भगवन्! अगर यही बात थी तो मेरा अपमान क्यों कराया? आपको मिलना था तो मिल जाते। मेरे से तो कहा कि इतने जन्मों के पश्चात् मिलूंगा और आप अभी आ गये। भगवान ने कहा कि नारद! जब तुमने इसके विषय में पूछा था, तब यह जिस चाल से साधना कर रहा था, उस चाल से तो इसको उतने ही जन्म लगते, परन्तु अब तो इसकी चाल ही बदल गयी। यह तो भगवान मेरे को मिलेंगे-इतनी बात पर ही मस्ती से नाचने लग गया। इसलिये मुझे अभी ही आना पड़ा है। कारण कि उद्देश्य की सिद्धि में जो अटल विश्वास, अनन्यता, दृढ़ता, उत्साह होता है, उससे साधना तेज हो जाती है।

प्रिय पाठकों! ज्ञान अभ्यास से उत्पन्न नहीं होता, प्रत्युत जो वास्तव में है, उसको वैसा ही जान लेने का नाम "ज्ञान" है। यह तंत्र ज्ञान वास्तव में है ही ऐसा। यह कोई नया बनाया हुआ ज्ञान नहीं है, प्रत्युत स्वतः सिद्ध है। अतः तांत्रिकों की वाणी से हमें इस बात का पता लग गया कि सब कुछ साधना ही है, यह कितने आनन्द की बात है। यह ऊँचे-से-ऊँचा ज्ञान है। इससे बढ़कर कोई ज्ञान है ही नहीं। कोई भले ही सब शास्त्र पढ़ लें, पर अन्त में यही बात रहेगी कि सब कुछ साधना ही है, क्योंकि वास्तव में बात है ही यही।

अतं में मैं शाबर मंत्रों की साधना का विधान बतलाकर अपने अगले अध्याय की ओ चलता हूं। शाबर मंत्रों की साधना के लिए बड़े विधि-विधान नहीं है। मंत्र तो सरल है ही, यह भी कह सकते हैं कि इनकी साधना का विधान भी सरल है, परन्तु कुछ बातें आवश्यक हैं। इनकी पूर्ति करके ही शाबर मंत्र सिद्ध किए जा सकते हैं और वे निश्चित ही फलदायक होंगे।

शाबर मंत्र की शक्ति को बनाए रखने के लिए वर्ष भर में कम से कम एक बार उसे उसी दिन, पर्व या ग्रहण पर सिद्ध मंत्र का जागरण पर्व या ग्रहण

के दिन ही होना चाहिए। साधक इस बात का भी ध्यान रखें कि मंत्र, प्रचार दुरुपयोग और प्रदर्शन से शक्तिहीन हो जाते हैं। इसलिए मंत्र की साधना पद्धति की साधना करने के बाद साधक को चाहिए कि वह उसे सूर्यग्रहण के दिन पुनः सिद्ध कर ले। साधक जो दिन साधना के लिए चुने उस दिन स्नान करके, धुले वस्त्र पहनकर, एकान्त एवं पवित्र स्थान में कंबल के आसन पर उत्तर दिशा में मुंह करके साधना करे। अभीष्ट मंत्र की 21 माला कम से कम जपे। जप के पश्चात् लोहबान, गुग्गुल, गुलाब की धूपबत्ती या हवन सामग्री से मंत्र का उच्चारण करते हुए अग्नि में आहुति दे।

शाबर मंत्र विभिन्न प्रकार के संकटों से व्यक्ति की रक्षा तो कर ही सकता है, दूसरों का भी कल्याण कर सकता है। हां जो छुरी आपका बचाव कर सकती है वह दूसरे को मार भी सकती है। आशा है आप मेरी बात समझ गये होंगे।

❑❑❑

3

अघोर एवं मंत्र-मार्ग में कुण्डलिनी जागरण

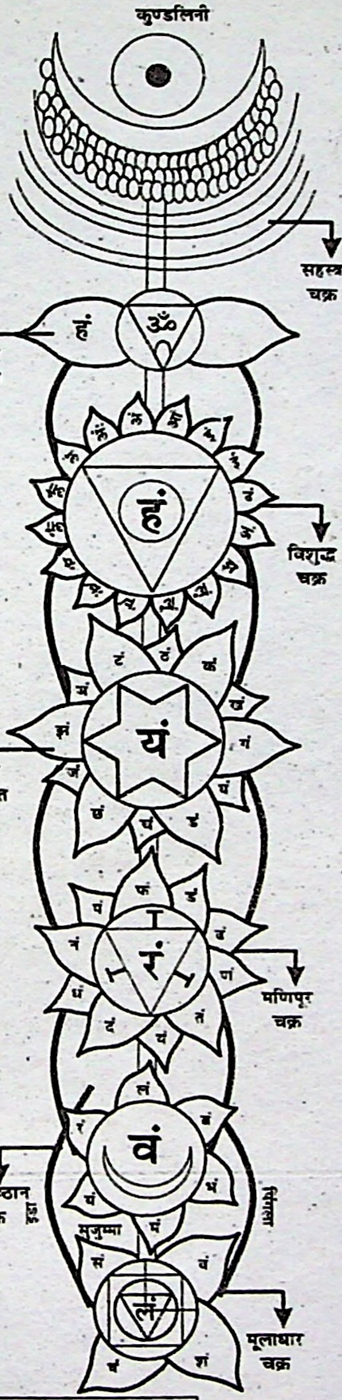
तंत्र भैरवी के मादक सौन्दर्य, घनी केश राशि के साथ-साथ तंत्र में उसके अद्भुत ज्ञान को देखकर मैं बेतरह चकित था। इतनी छोटी आयु में इतना बड़ा ज्ञान अचरज था।

सूरज पश्चिम में अस्त हो रहा था। चिड़ियां अपने-अपने घोंसलों में जाने के लिए उतावली थीं। काम-काज से निवृत्त होकर पहाड़ी लोग अपने-अपने घरों को लौट रहे थे, तभी अद्भुत मादक, शृंगार किये तंत्र भैरवी मेरे समीप आ गयी।

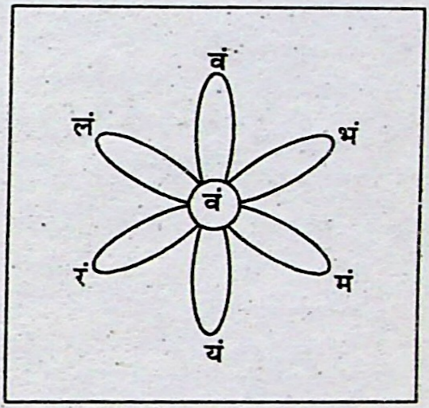


किसी भी प्रकार की तांत्रिक या मांत्रिक साधना प्रारम्भ करने से पूर्व तंत्र की प्रारम्भिक क्रियाओं का ज्ञान होना परम आवश्यक है। बिना इन सिद्धान्तों को जाने जो व्यक्ति साधना मार्ग में प्रवृत्त होता है उसे किसी भी प्रकार सिद्धि नहीं मिल सकती।

तंत्र शास्त्र मूल रूप में शांति, पुष्टि, वशीकरण, मोहन आकर्षण, विद्वेषण, मारण और उच्चाटन पर







आधारित है। इनमें से शांति, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण षट्कर्म कहलाते हैं। जिन क्रियाओं के द्वारा रोग, कृत्या एवं ग्रह-दोष आदि का निवारण किया जाता है वह शांतिकर्म कहलाता है। जिसके द्वारा सभी प्राणियों को वशीभूत किया किया जाता है उसे वशीकरण कहते हैं। इसके तीन स्वरूप हैं—वशीकरण, मोहन और आकर्षण। स्तंभन में प्राणियों को उनकी स्वाभाविक क्रियाओं आदि का नाश करके विरोध उत्पन्न किया जाता है। उच्चाटन कर्म में किसी व्यक्ति को स्थान, वस्तु, भूमि, देश आदि से विरक्त किया जाता है। मारण कर्म में व्यक्ति अपने

शत्रु का नाश करता है। आज की रात मेरी मंजिल यह सब नहीं थी वरन् कुण्डलिनी तंत्र थी।

भैरवी ने मेरी ओर मुस्कुराकर देखा और पूछा, भैरव! क्या आज 'भैरवी चक्र' की साधना करोगे? देखो आज मैंने कितना मादक शृंगार किया है। मेरी वेणी और मेरे शरीर से कैसी सुगन्ध निकल रही है। क्या यह सब तुम्हें आकर्षित नहीं करती है? सिद्ध भैरवी चक्र के लिए विवश नहीं करती?

नहीं भैरवी आज की रात मुझे केवल कुण्डलिनी तंत्र की साधना आकर्षित कर रही है। तुम मेरे पास हो, आयु भी काफी शेष है, फिर इतनी शीघ्रता किस लिए?

ठीक है भैरव, आओ मेरे और समीप आ जाओ। मेरी जंघाओं पर सिर रखकर लेट जाओ। मैं तुम्हें दुलारती भी रहूंगी और कुण्डलिनी तंत्र का ज्ञान भी बरसाती रहूंगी। प्रिय! मेरा यह ज्ञान बरसाती नदी की तरह, जिसका बहाव एक बार शुरू होकर फिर किसी भी तट बंधन को नहीं मानता। मैं भैरवी की सुपुष्ट जंघाओं पर सिर रखकर लेट गया। भैरवी के कोमल हाथ धीरे-धीरे मेरे सिर पर घूमने लगे।

मैंने अजीब-सा नशा अनुभव किया। भैरवी की वाणी वातावरण में गूंजने लगी।

कुण्डलिनी परमात्मा की गोपनीय शक्ति है इसे शुद्ध चैतन्य भी कहते हैं।

यह शुद्ध चेतना शक्ति ब्रह्म की महान सृजन शक्ति है। जिस प्रकार ताप को अग्नि से भिन्न नहीं कह सकते उसी प्रकार कुण्डलिनी शक्ति परब्रह्म, शुद्ध चेतना शक्ति या परमात्मा से भिन्न नहीं है और उसमें यह विश्व सृजन करने की शक्ति रहती है।

कुण्डलिनी शक्ति को प्रकृति भी कहते हैं। यह दो प्रकार की बतलाई गई है—माया और अविद्या। प्रकृति में जब सत्वगुणों की प्रबलता होती है तब इसे माया शक्ति कहते हैं और जब इस पर रजस् व तमस् गुणों की प्रबलता होती है तब इसे "अविद्या" के नाम से पुकारा जाता है।

वही शुद्ध, चैतन्य (परमात्मा) अविद्या तथा त्रिगुणों के आवरण में जीवात्मा के रूप में दीखता है। यही जीवात्मा साक्षी रूप से मानव शरीर के आध्यात्मिक हृदय जहां दोनों पसलियां मिलती हैं उस स्थान से लगभग एक अंगुल दायीं ओर स्तर के नीचे आध्यात्मिक हृदय की स्थिति मानी गई है। उसी स्थल पर निवास करती है। स्मरण रहे जीवात्मा मन के द्वारा विषय ज्ञान प्राप्त करता है। मन एक सूक्ष्म शक्ति है जिसके साथ चैतन्य जुड़ा हुआ है। सभी इन्द्रियां मन के द्वारा संचालित हैं और मन इन्द्रियां (पांच कर्मेन्द्रियां—कान, नाक, आंख, त्वचा, जिह्वा तथा पांच ज्ञानेन्द्रियां—ध्वनि, स्पर्श, दृष्टि, स्वाद, घ्राण के द्वारा विषय ज्ञान प्राप्त करके जीवात्मा को देता है। वहां से इन्द्रियों द्वारा मन सारा ज्ञान चित्तरूपी कुण्डलिनी

शक्ति जोकि स्मृति का गोदाम है जहां जन्म-जन्मान्तर के संस्कार व वासनायें अंकित हैं, से प्राप्त करता है।

जब प्रकृति में त्रिगुणों की प्रबलता नहीं होती तब उसे "ईश्वर" कहते हैं। ईश्वर सृष्टि का अधिष्ठाता है। वह सृष्टि की सारी जड़ व चेतन वस्तुओं पर आधिपत्य रखता है, उनको अपनी इच्छानुसार नचाता है, इसी ईश्वर के सूक्ष्म रूप को "हिरण्यगर्भ" कहा जाता है। उसके स्थूल रूप को "विराट्" की संज्ञा दी गई है। सभी जीवों को सामूहिक रूप से "विराट्" ही कहा गया है।

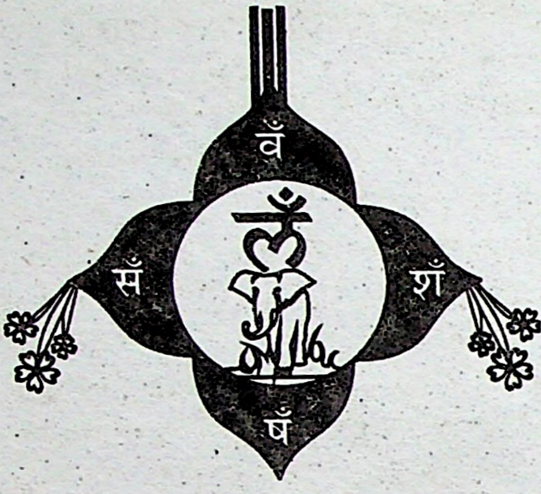
सहस्त्रार चक्र (सिर में चोटी के स्थान पर) के स्थान पर शुद्ध चैतन्य का निवास स्थान है। यही कुण्डलिनी शक्ति उसके साथ एकाकार होकर (सामरस्य भाव में) रहती है। यह अपने ही धरातल पर सारे विश्व की सृष्टि करती है। यह अपने में से ही विश्व को उत्पन्न करती है। यह स्वयं ही विश्व के सभी रूपों को धारण करती है और हम अपने चारों ओर जो सृष्टि देखते हैं उसमें वह विभिन्न रूप धारण कर दृष्टिगोचर होती वही "प्राण" बन जाती है जो प्रधान शक्ति के रूप में समस्त सृष्टि को जीवित रखती है। इसी को विश्व चेतना अथवा चित की लौकिक शक्ति भी कहते हैं।

कुण्डलिनी शक्ति मंत्रमयी, यंत्रमयी तथा शब्दमयी है। ध्वनि रूप में वह "ब्रह्म कहलाती है, मंत्रों में वह अक्षर के रूप में होती है और वाक्य रूप में वह ज्ञान का रूप है। वही नादरूपी शब्द भाषा, अक्षर आदि की उत्पत्ति करती है। जब कुण्डलिनी में (रीढ़ में सुषुम्ना के भीतर) विभिन्न केन्द्रों में भिन्न-भिन्न तत्वों की सृष्टि करती है। जैसे बुद्धि, आज्ञाचक्र पर आकाश तत्व विशुद्धि चक्र पर वायु तत्व अनाहत चक्र, पर अग्नि मणिपूर चक्र नाभि चक्र पर, जल स्वाधिष्ठान चक्र लिंग मूल पर और पृथ्वी लां बीज मूलाधार कन्द स्थान पर उत्पन्न करती हैं।

कुण्डलिनी सुषुम्ना मुख के निकट मूलाधार चक्र पर प्रसुप्त अवस्था में सोई रहती है। वह 72,000 नाड़ियों के द्वारा सारे कार्य-कलाप चलाती है तथा उस पर नियंत्रण रखती है। वह सब शक्तियों का भण्डार है। इसी को चित्त भी कहते हैं। हमारे जन्म-जन्मान्तर की वासनायें व संस्कारादि यहां अंकित हैं। इनकी जानकारी हमें कुण्डलिनी से ही मिलती है। यह स्मृति का गोदाम है।

जब साधना द्वारा यह जाग्रत होती हैं तब रीढ़ में अवस्थित सुषुम्ना नाड़ी के मुख में प्रवेश कर उसके अन्तर्गत विभिन्न चक्रों पर आरोहण करती हुई (एक तत्व को दूसरे तत्व में लय करती हुई) अन्त में सहस्त्रार स्थित परमात्मा के साथ फिर में एकाकार हो जाती है, सामरस्य भाव में अवस्थित हो जाती है।

कुण्डलिनी के दो रूप कहे जा सकते हैं, एक तो बाहरी स्थूल रूप, दूसरा



मूलाधार चक्र का स्वरूप

आध्यात्मिक अन्तरमुखी, सूक्ष्म रूप। इसका लौकिक कार्यक्रम सही रूप में चल रहा है लेकिन आन्तरिक सूक्ष्म कार्यक्रम सुप्त अवस्था में पड़ा है। कुण्डलिनी की आध्यात्मिक आत्मिक अवस्था की ही साधना द्वारा चैतन्य अथवा जाग्रत करना होता है। कुण्डलिनी का बाहरी रूप स्थूल सृष्टि के रूप में हम सब देख पाते हैं लेकिन उसका आन्तरिक सूक्ष्म सुप्तावस्था का बोध उसकी अति सूक्ष्मता के कारण दृष्टिगोचर नहीं होता है अथवा अनुभव में नहीं आता है, केवल साधना, ध्यान व अतीन्द्रिय ज्ञान द्वारा ही हम उसे समझ सकते हैं। तांत्रिक भी यही कहते हैं कि हमें स्वयं साधना द्वारा उसके अस्तित्व को जानना होगा, अनुभव करना होगा।

जब कुण्डलिनी शक्ति अन्तरमुखी साधना द्वारा आन्तरिक रूप से जाग्रत होती है तब हमारे शरीर में विभिन्न यौगिक क्रियायें शुरू हो जाती हैं और अन्त में हमें परमात्मा के साथ मिला देती है। केवल कुण्डलिनी शक्ति के माध्यम से ही हम परमात्मा या शुद्ध चैतन्य में प्रवेश पा सकते हैं। यही कारण है कि कुण्डलिनी की जानकारी सबसे अधिक महत्व की है। कुण्डलिनी साधना का उद्देश्य ब्रह्म प्राप्ति अथवा परमात्मा की प्राप्ति है।

कुण्डलिनी दिव्य चेतना है जो विश्व की सृष्टि करती है। इसकी सूक्ष्म व दिव्य कार्यप्रणाली शरीर शास्त्र अथवा मनोविज्ञान का विषय नहीं है। कुण्डलिनी शक्ति अति सूक्ष्म सत्ता है उसे स्थूल आंखों से नहीं देखा जा सकता है। इसकी तो केवल योग्य अनुभवी गुरु के निदेशन में साधना द्वारा अनुभूति की जा सकती है। शुद्ध आचार, विचार व सात्विक जीवन द्वारा मन को विचाररहित (मनोनिरोध, चित्त निरोध) कर पवित्र बनाने से कुण्डलिनी शक्ति के अस्तित्व का आभास पा सकते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक इस सर्पिणी रूपी कुण्डलिनी शक्ति के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते।

कुण्डलिनी शक्ति चैतन्य करने के लिए मंत्र, तप, स्वाध्याय, निरन्तर अनुसंधान में लीन रहना, संकीर्तन व भजन, ज्ञान योग, कर्म योग, राज योग, हठ योग की विभिन्न क्रियायें तथा मुद्रा, बंध, शक्ति चालन मुद्रा प्राणायाम आदि का उपाय है।

कभी-कभी एकाएक गिर जाने से भी अनायास कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है। कुण्डलिनी साधना प्रारम्भ करने से पहले साधक को आसन सिद्धि तथा नाड़ी शोधन प्राणायाम द्वारा नाड़ीशुद्धि अवश्य कर लेनी चाहिए, ताकि साधक जाग्रत कुण्डलिनी की प्रचण्ड शक्ति को सहन कर सके अन्यथा हृदय रोग या अन्य कोई हो सकता है, शरीर को हानि पहुंच सकती है।

किसी भी सुखासन में दीर्घकाल तक सुखपूर्वक बैठने का अभ्यास करना चाहिये। अगर आप किसी भी आसन में सुखपूर्वक लगातार तीन घण्टे तक बैठ सकते हैं तो समझ लें कि आपको आसन सिद्धि हो गई है। अनाड़ियों को शुरू-शुरू में एक आसन में बैठना कष्टदायक हो सकता है। उनके घुटनों के जोड़ों में तथा स्नायुओं में पीड़ा हो सकती है। उनको लचीला और मुलायम बनाये रखने के लिए नियमित मालिश करनी चाहिए। साथ ही अगर शेषनाग को अपने सिर पर पृथ्वी धारण किए हुए ध्यान में कल्पना करें (अथवा नन्दी पृथ्वी को अपने सिर पर धारण किये हैं—यह कल्पना भी कर सकते हैं) इस प्रकार आसन सिद्धि शीघ्र मिल जाती है।

पद्मासन में सीधे बैठकर अपने दायें हाथ के अंगूठे से दायां नथुना बंद कर लो और बायें नथुने से बहुत धीमे-धीमे दीर्घ श्वास खींचो ताकि फेफड़ों में अधिक से अधिक वायु भर जाये तत्पश्चात् अनामिका और कनिष्ठिका से बायां नथुना बंद करके दायें नथुने से धीरे-धीरे बिना झटका दिये छोड़ दो। श्वास छोड़ने के साथ ही उसी नथुने से दीर्घ श्वास खींचो और बायें से छोड़ दो। यह एक आवर्त्ति हुई। इस प्रकार सात आवृत्तियां करो। दो प्रणायाम के बीच में किसी प्रकार का विराम न हो। स्मरण रहे इस प्राणायाम में भीतर रोका जाता है और ना ही बाहर रोकते हैं अर्थात् इसमें बिना कुंभक किये सिर्फ पूरक और रेचक किया जाता है। इस प्राणायाम को करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रेचक के समय फेफड़ों की सारी वायु निष्कासित हो जाये और श्वास के आने-जाने की गति पर आपका लक्ष्य रहे। यह प्राणायाम हृदय को बलवान बनाता है। इस प्रणायाम का छः महीने लगातार अभ्यास करने से नाड़ी-शोधन हो पाता है। भस्त्रिका प्राणायाम व हृदय स्तंभक प्रणायाम भी करें तो फिर क्या कहना। अश्विनी मुद्रा मूल बंध तथा उड्डियान बंध भी कुण्डिलनी जाग्रत करने में सहायक हैं।

मलद्वार के स्नायुओं को बारी-बारी कसें व ढ़ीला छोड़ें। अगर एक ही श्वास में आप गुदा का संकुचन व शिथिलिकरण कर सकते हैं तो क्या कहने? इस अभ्यास से सुप्त कुण्डलिनी पर चोट पड़ती है जिससे वह यथाशीघ्र चैतन्य हो जाती हैं इसी प्रकार मूलबंध तथा उड्डियान बंध का अभ्यास कर लेना चाहिए।

कुण्डलिनी साधकों को नित्य प्रति सुषुम्ना स्वर चलाकर ज्योतिमंत्र "ॐ

हों" का 108 बार जप करके भूतशुद्धि कर लेनी चाहिए। अथवा निम्नलिखित चार मंत्रों का उच्चारण करने से भी भूतशुद्धि का लाभ मिल जाता हैं।

1. **ॐ भूत शृंगाटाच्छिर सुषुम्नापथेन जीव शिव परमशिव पदे योज्यामि स्वाहा।**
2. **ॐ यं लिंग शरीर शोषय स्वाहा।**
3. **ॐ रं संकोच शरीर दह-दह स्वाहा।**
4. **ॐ परमपिता सुषुम्नापथेन मूल शृंगाट मुल्य सोल्लास ज्वल-ज्वल प्रज्वल सो अहं हंसः स्वाहा।**

कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करने का अभ्यास रात्रि में ही करना चाहिए। साधना करने से पूर्व अपने गुरुदेव का ध्यान कर उन्हें नमस्कार कर फिर कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान व स्तुति कर उसे प्रणाम करें।

कुण्डलिनी का ध्यान

ध्यायते कुण्डलिनी सूक्ष्मां मूलाधार निवासिनीम।
तामिष्ट देवता रूपां सार्द्ध त्रिवलयान्विताम्।
कोटि सौदामिनी भाषा स्वयं भूलिंग वेष्टितम्।।

कुण्डलिनी स्तवन

ॐ नमस्ते देव देवेशी योगीश प्राण बल्लभे।
सिद्धि दे वर दे प्रातः स्वयंभू लिंग वेष्टिते।।
प्रसुप्त भुजंगाकारे बंदा कारण प्रिये।
कामकलाअन्विते ! देवि ! जन्म संसार रूपकात्।।
प्रसारे घोर संसारे भवरोगान् महेश्वरी।
सर्वदा रक्ष मां देवि ! जन्म संसार रूपकात्।।
इति कुण्डलिनी स्रोत च्यात्वा यः प्रपठेत्सुचिः।
स मुक्तः पापभ्यों जन्में संसार सागरात्।।

निम्नलिखित मंत्र से कुण्डलिनी देवी को प्रणाम करें—

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानंचाखिलेषु या।
भूतेषु संततृतस्य च्याप्ति देव्यै नमो नमः।।

भैरव अब मैं तुम्हें कुण्डलिनी जागरण के उपाय बतलाती हूं।

एकान्त में सिद्धासन पर बैठ दोनों नथुनों से प्राण वायु का आकर्षण करके, बलपूर्वक अपान वायु में मिलाने का प्रयत्न करें और जब तक सुषुम्ना विचर में वायु पहुंचकर प्रकाश न पावें तब तक अश्विनी मुद्रा से धीरे-धीरे गुप्त प्रदेश को सिकोड़ें और फैलावें।

इसी प्रकार सांस रोक कर कुंभक भोग से वायु का निरोध करने से भी कुण्डलिनी शक्ति जाग कर सुषुम्ना पथ से ऊपर की तरफ चढ़ती है। जब कुण्डलिनी शक्ति चैतन्य होकर सुषुम्ना में प्रवेश करती है तो उस समय पीठ की रीढ़ के बीच चींटी-सी रेंगने जैसी सरसराहट होने लगती है।

कुण्डलिनी को 'कूचं बीज हूँ' का जाप करते हुए जगाना चाहिये। हंस का जाप करते हुए उठाना चाहिए और "सो अहं" का जाप करते हुए नीचे उतारना चाहिए। मूलाधार में कामवायु। कन्दर्प वायु रूपी अपान वायु को ऊपर उठाते समय बायीं दिशा की ओर प्रेरित किया जाता है। स्मरण रखें असली प्राणायाम प्राण और अपान के मिलने से होता है। ये दोनों शक्तियां कहां और किस प्रकार मिलाई जाती हैं यही समझने की बात है। साधक अपान शक्ति का स्थान उपस्थ है, यह मूलाधार के संभोग रहती है और इसकी गति नीचे की ओर होती है। प्राण शक्ति हृदय के ऊपर के भाग में काम करती है। दोनों का योग करके सुषुम्ना विचार में प्रविष्ट कराना होता है। सुषुम्ना का प्रवेश द्वारा कुण्डलिनी के स्थान पर है जो मूलाधार के समीप है। प्राण और अपान दोनों को इसी स्थान पर खींचकर मिलाना होता है, जिससे दोनों मिलकर सुषुम्न में प्रवेश करते हैं। ऐसा होने पर योगी के किंचित प्रयास अथवा संकल्प मात्र से प्राण का प्रवाह जहां चाहे वहां सुगमता से होने लगता है।

प्राण वायु की अपान में आहुति देने के लिए उसको नीचे उतार कर मूलाधार में ले जाकर अपान में मिलाना होता है। यह क्रिया पूरक और अन्तर कुंभक करने से भी सिद्ध होती है।

सांस को फेफड़ों में धीरे-धीरे परन्तु दबाव के साथ खींचकर पूरक करना पड़ता है फिर कण्ठ का संकोचन करके जालंधर बंध द्वारा वायु को शक्ति से नीचे दबाया जाता है। इस क्रिया के कुछ अभ्यास के पश्चात् प्राण शक्ति ऊपर के भाग की सब नाड़ियों से इड़ा, पिंगला नाड़ियों में खिंचकर नीचे की ओर उतरने लगती है और धीरे-धीरे कन्द के पास मूलाधार चक्र में एकत्रित होती है वहां पर साधक ने पहले ही सिद्धासन तथा गुदा के संकोच (मूल बंध) द्वारा अपान शक्ति को रोका ही हुआ होता है। इस प्रकार वहां दोनों का योग किया जाता है। यही प्राण की अपान में आहुति हुई।

तत्पश्चात् रेचक द्वारा धीरे-धीरे श्वास को निकाला जाता है और मूल बंध

तथा पेट को पीठ की ओर खींचकर (उड्डियान बंध लगाकर) प्राण से अपान को मिलाया जाता है। इस प्रकार दोनों का फिर योग होता है। यह अपान की प्राण में आहुति देना है। उक्त दोनों का योग करके प्राण का सुषुम्ना में प्रवेश होने से असली प्राणायाम होता है।

तद्नन्तर बाहरी कुंभक करके श्वास की गति रोक दी जाती है, जिससे प्राण और अपान दोनों अपना-अपना बाहरी कार्य त्याग कर अन्तरमुख होने लगते हैं। यही प्राण अपान की गति का निरोध करना है।

केवल कुंभक के सिद्ध होने के पश्चात् स्वयं रुकने लगते हैं और श्वास गति का निरोध होने से प्राण शक्ति का निरोध होता है, पांचों प्राणों का निरोध होने से शरीर का समस्त व्यापार रुककर प्राण का समिष्ट उत्थान होता है और समाधि लगती है। ऐसे साधक मिताहार करके दीर्घकाल तक समाधि का आनन्द लेते हैं। यही प्राणों की प्राणों में आहुति देना है।

इसका केवल इतना भेद है कि केवल कुंभक में प्राण सब चक्रों में एकदम विलीन होने लगता है। इन चारों ही रीतियों से प्राण सुषुम्ना में चढ़ता है।

शांभवी मुद्रा व खेचरी मुद्रा लगाकर भ्रूमध्य पर ध्यान लगाने से शीघ्र कुंभक लगाकर समस्त प्राण आज्ञाचक्र की ओर जाकर अन्त में ऊपर सहस्त्रार में विलीन हो जाते हैं।

शक्ति के जाग कर क्रियावति होने पर उपरोक्त चारों प्रकार के प्राणायाम स्वतः ही बिना प्रयत्न के अर्थात् श्वास-प्रश्वास की गति का आधार सिद्ध होने लगते हैं। अगर 15 घण्टे क्रियाओं का वेग चलता रहे तो एक घण्टे की धारणा, पांच मिनट का ध्यान और 25 सेकण्ड की समाधि है। कोई भी व्यक्ति समाधि में लगातार केवल 21 दिन तक रह सकता है, उसके पश्चात् उसे यह स्थूल शरीर त्यागना होता है बशर्ते कि उसकी समाधि को चांटा मार कर या भृकुटि में चुटकी नोच कर भंग न किया जाये।

बायें पैर की एड़ी से योनि प्रदेश को मजबूती से दबाकर दाहिने पैर को बिल्कुल सीधा और सरल भाव में सामने रखकर बैठें। उसके बाद दाहिने पैर को दोनों हाथों से जोर से दबाये रखें एवं कण्ठ में टुड्डी लगाकर कुंभक से वायु रोकें, पीछे प्राणायाम की चाल से धीरे-धीरे उस वायु को निकाल दें।

इस क्रिया के अभ्यास से भी कुण्डलिनी शक्ति शीघ्र जाग्रत होकर सीधा आकार धारण कर लेती हैं।

जिनको मूल बंधादि साधने में कठिनाई अनुभव हो वे आज्ञाचक्र अथवा सहस्त्रार में ही विधिपूर्वक ध्यान लगाकर अपनी कुण्डलिनी जाग्रत कर सकते

हैं। नवम्बर से मार्च तक का समय कुण्डलिनी साधना के लिये सर्वोत्तम है। वस्ति अथवा एनीमा द्वारा उदर संशोधन करते रहना चाहिए।

सिद्धान्त या पद्मासन में बैठकर प्रश्वास की गति को रोके बिना केवल रेचक पूरक करते हुए मूलाधार आज्ञाचक्र, ब्रह्मरन्ध्र आदि किसी भी चक्र पर अथवा नासिकाग्र भाग पर या नाभि पर ध्यान लगाकर ऐसी भावना करते हुए कि "ओं" से उसी विशेष स्थान पर श्वास आ रहा है और "अम्" से छूट रहा है, "उ" अथवा "सोहं" का मानसिक जाप करें। इस अभ्यास में विशेष आवश्यकता इस बात की है कि अपने नियत स्थान अथवा चक्र पर श्वास-प्रश्वास की गति पर इस भावना से ध्यान देवें।

अगर उपर्युक्त रीति से जाप करने में कठिनाई अनुभव हो तो विशेष चक्र पर केवल "ऊ" अथवा "सोअहं" का मांनसिक जाप करें अथवा ऐसी भावना करें कि वहां "ओम" अथवा "सोअहं" का जाप हो रहा है या "ऊ" अथवा "सोअहं" शब्द को सुन रहे हैं। मुख्य बात यह है कि उस विशेष स्थान अथवा चक्र पर आपका मन ठहरा रहे। जिस विशेष चक्र पर आपका मन स्वतः ही रुक जाये वहीं उपरोक्त विधि से जप व ध्यान करें।

इस प्रकार निरन्तर अभ्यास करने से श्वास-प्रश्वास की गति का स्वयं निरोध हो जाता है और कालान्तर में धीरे-धीरे कुण्डलिनी शक्ति स्वयं जाग्रत हो सुषुम्ना के क्षेत्र में चढ़ जाती है। पहले खुले नेत्रों से साधना करो जब थक जाओ तब नेत्र बन्द कर अन्तरध्यान से साधना करो। अगर आप मणिपुर चक्र का ध्यान करते हैं तो उसके बाद अनाहत चक्र तथा विशुद्धि चक्र पर ध्यान लगाना न भूलें।

"ॐ" अथवा "रा" या "सो" से श्वास लेकर जितनी देर तक शान्तिपूर्वक आराम से रोक सकें, श्वास को रोके रहें (बलपूर्वक न रोकें) उसके पश्चात् "अम्" या "म" या "अहम" से छोड़ दें। क्रमशः कुंभक का समय अभ्यास से बढ़ाते रहें। इसका अभ्यास नासिकाग्र भाग। भृकुटि, ब्रह्मरन्ध्र आदि स्थानों पर गुरु आज्ञानुसार करना चाहिए।

बैठकर करने की अपेक्षा श्वासन में (खुली आंखें या आंखें बन्द करके जैसा चाहो) वह साधना करने से शीघ्र ही सिद्धि मिलती है। जो काम अपने बल पर 4-5 वर्ष में करोगे वह श्वासन में करने से 30 दिन में ही हो जाता है। ऐसा करने से अति शीघ्र ध्यान लगाकर कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती हैं।

ॐ गुरु ॐ का मानसिक जाप करते हुए भ्रूमध्य पर ध्यान लगाने से भी कालान्तर में गुरुकृपा से चित्त निरोध होकर ध्यान स्वयं लग जाता है। कुण्डलिनी भी जाग्रत हो जाती हैं।

चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते प्रत्येक कार्य करते हुए मन ही मन "ॐ गुरु ॐ" का जाप करते रहना चाहिये।

मंत्र जाप द्वारा कालान्तर में ध्यान लगाकर कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती हैं। भक्तिभाव वाली वृत्ति है तो ध्यान अनाहत् चक्र पर लगाओ। ज्ञान की भावना है तो ध्यान भ्रूमध्य पर लगाना चाहिये।

अपने गुरु का चित्र ध्यान से देखते हुए उनका सहस्त्रार में मानसिक ध्यान कर, उन्हें प्रणाम करो। तत्पश्चात् दीर्घशासन लेते हुए मूल बंध लगाओ और "ॐ" का मानसिक जाप करते रहो तदुपरान्त जालंधर बंध लगाकर श्वास रोको (कुंभक करो) जितनी देर आराम से रोक सको और यह भावना करो कि सहस्त्रार स्थिर ईष्ट देवता स्वरूप गुरुदेव के तेजस् शरीर की किरणों से साधक का शरीर पवित्र हो रहा है। तत्पश्चात् "सो" का उच्चारण करते हुए श्वास त्यागो और उक्त तेजस् को आकाश में छोड़ दो, मूलबंध सतत् लगा रहे। "अहं" करते हुए श्वास खींचो। फिर "अहं" करते हुए ही श्वास छोड़ दो। फिर "सः" करते हुए खींचो।

इस प्रकार "सोअहं" "हंस" का जाप करते रहने से कालान्तर में गुरुकृपा से कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती हैं।

चक्र चोकोर है, उसमें कमल की चार पंखुड़ियां हैं, "लंः" बीज है (लेकिन "लं" का ध्यान करना आवश्यक नहीं है) गणेशजी बैठे हैं (जिधर साधक की पीठ है उधर ही उनकी पीठ है), उनकी लम्बी सूंड है और उनका पेट आगे बढ़ा है पंखुड़ियां सुनहरी आभा लिये हैं।

बस ध्यान में आंखें मूंद कर बैठ जाओ और उपरोक्त मूलाधार का ध्यान करो और साथ ही साथ गणेशजी की सूंड से "सो" का मानसिक रूप से उच्चारण करते हुए सांस खींचो फिर "अहम्" करते हुए श्वास त्याग दो। फिर वहीं से "अहम्" कहते हुए सांस खींचो और "सः" कहते हुए श्वास छोड़ो। बस ध्यान में बैठे हुए इस प्रकार श्वास-प्रश्वास लेते रहने से स्वयं कुण्डलिनी जाग्रत होगी। चक्र ध्यान में स्पष्ट होगा। गुफा में नीचे बैठकर ध्यान करने से गुरुकृपा से स्वतः ही शक्ति कार्य करने लगती है। ऐसी मान्यता है।

भूतशुद्धि करने के बाद, किसी भी सुखासन में बैठकर ब्रह्मरन्ध्र में गुरु का ध्यान कर, उनको प्रणाम करें फिर अपने ईष्ट मंत्र के आगे-पीछे "ई" बीज लगाकर हृदय में सात बार जप करें। ऐसा करते हुए अपने शरीर को कामकला (षट्कोण) के रूप में भावना करें इसके पश्चात् धीरे से दीर्घ श्वास खींचते हुए अपान वायु को अधिक से अधिक ऊपर खींच लायें ओर दृढ़ मूल बंध लगा लें (ताकि अपान वायु वापस न जाये) और तदनन्तर जालंधर बंध लगाकर भावना करो कि प्राण वायु नीचे उतरकर

अपान वायु से मिल रही है और इन दोनों के मिलन से "हूँ" (नाद) की ध्वनि हो रही है तथा सहस्त्रार में जाकर गूंज रही है। इस गूंज को सहस्त्रार में सुनने का प्रयास करें।

साथ ही साथ मानसिक भावना करो कि विद्युत किरण जैसी कुण्डलिनी शक्ति मूलाधार में स्वयम् लिंग से लिपटी हुई है तथा "सो" मंत्र से श्वास भीतर खींचते हुए मूलाधार सुषुम्ना पथ में विद्युत किरण की तरह ऊपर जाते हुए अन्त में सहस्त्रार में परमशिव से लिपट कर एकाकार होते देखो फिर "अहं" मंत्र से श्वास छोड़ते समय कुण्डलिनी रूप विद्युत किरण को सहस्त्रार से उतरकर सुषुम्ना पथ से होते हुए सभी चक्रों को भेदते हुए वापस मूलाधार में स्वयं भूलिंग से लिपटते हुए देखो। ऐसा बार-बार करने से सट्चक्र स्पष्ट दीखने लगते हैं, कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती हैं।

श्री दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक का अपने ईष्ट मंत्र से संपुटित कर एकाग्रचित्त होकर नित्य नियमित रूप से पाठ करते रहने से कालान्तर में प्राणों का प्रवेश सुषुम्ना विवर में होकर कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती हैं। मंत्र जप साधक के रोम-रोम में स्वतः होने लगता है।

केवल तंत्र में वासना रहित मैथुन की योजना की गई है। तंत्र साक्षात् योनि की पूजा, मंत्र जाप करते हुए उसके साथ मैथुन कर बिन्दु सिद्धि की योजना है। वीर भाव में स्त्री के साथ पूजन के बाद मैथुन की योजना है जिसके द्वारा साधक ऊर्ध्वरेता बनने की साधना करता है। दिव्य भाव में कामकला ध्यान एवं मानसिक मैथुन की योजना है। यह सब वासनारहित भावना से किया जाता है।

वैष्णवों में शृंगार साधन द्वारा ऊर्ध्वरेता बनने की साधना प्रचलित है। उर्ध्वरेता होने के लिये प्राणों का सुषुम्ना पथ में प्रवेश आवश्यक है। प्राणों का सुषुम्ना के क्षेत्र में प्रविष्ट होने से ही मंत्र चैतन्य होता है और प्राणों का सुषुम्ना में संचार होना ही कुण्डलिनी जागरण है।

कुण्डलिनी साधना में 3 से 12 वर्ष का समय लगाने से सिद्धि सफलता मिलती है। यह साधना व्यर्थ नहीं जाती। सद्गुरु चाहे तो शक्तिपात करके साधक की कुण्डलिनी जाग्रत कर सकते हैं। लेकिन शिष्य को नित्य नियमित रूप से साधना बनाये रखनी चाहिये।

अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा में मत पड़े रहो। साधन में आलस्य न करो। साधना को कल पर न छोड़ो। कल कभी नहीं आता।

आत्म-निरीक्षण करते रहो कि साधना ठीक चल रही है या नहीं? तामसिक वृत्तियों, कामवासनाओं, लोभ, मोह आदि विकारों में कमी रहती है तो ठीक है। उपदेशक वृत्ति विघ्नकारी है।

स्मरण रहे, कभी भूलकर भी किसी सफलता का अभिमान मन में न आवे या किसी को चमत्कार बताने की कोशिश भूलकर भी न करें, भले ही अपना कितना ही बड़ा अपमान या नुकसान क्यों न होता हो।

सिद्धि के चक्कर में पड़कर किसी को शाप अथवा आशीर्वाद न दे लगना, नहीं तो हाथ मलकर पछताना पड़ेगा।

अभिमान न करो, नहीं तो गिर जाओगे। अपने मुंह अपनी प्रशंसा करना अभिमान है।

मोह को विचार से (संसार की नश्वरता पर विचार करने से), विचार को यथार्थ बोध से, क्रोध को क्षमा से, लोभ को संतोष से और अंहकार को नम्रता से जीत सकते हैं।

अगर मन विषयों की ओर भागता हो तो प्रत्येक विषय का तुरन्त निम्नलिखित ढंग से प्रतिकार करें—

कामवासना सताये तो आंखों की उल्टा दो अथवा दायें गट्टे पर मुक्के मारें। क्रोध आये तो अपनी जीभ की उल्टा दो (खेचरी लगा लो)। जीभ की अवस्था में नासिका को दो अंगुलियों से बन्द करें, मोह वृत्ति जागे तो सिर में मुक्के मारें। अहंकार की अवस्था में कान मरोड़ें।

साधना नित्य नियम से करनी चाहिये। जब तक सारे पुराने संस्कार धुलकर उनके स्थान पर शुभ संस्कार दृढ़ नहीं हो जाते, तब तक प्रायः साधना का परिणाम देखने में नहीं आता।

अगर आप अपने निज रूप को पहचानने की इच्छा रखते हैं तो आपको अपना मन शुद्ध करना होगा, उसे सूक्ष्म व एकाग्र कर निर्विकल्प समाधि प्राप्त करनी होगी।

जब रोम-रोम से अपने ईष्ट मंत्र का जाप होता अनुभव हो, सर्वत्र नीला प्रकाश नज़र आये और दिव्य आनन्द की अनुभूति हो तो पहचानो कुण्डलिनी जाग्रत हो गई हैं।

जब कुण्डलिनी चैतन्य होती हैं तो किसी-किसी को संचित संस्कारों के कारण कोई रोग भी उत्पन्न हो जाता है।

षट्चक्रों को भेदने के लिये नाड़ी-शोधन योग और ध्यान आवश्यक है। एक एक चक्र को सिद्ध करने के लिये कम से कम छः माह का समय लगता है।

षट्चक्र का ध्यान करने वालों को चाहिये कि कम से कम पांच मिनट तक एक-एक चक्र पर ध्यान द्वारा चित्तवृत्ति को ठहराते हुए चतुर्दल से सहस्त्र

दल पर्यन्त आधे घण्टे में जायें। ऐसा अभ्यास कर लेने से प्राण और मंत्र दोनों ऐसे निरुद्ध हो जाते हैं कि जिसका आनन्द अकथनीय है।

ध्यान रखें, ढेरसारी पुस्तक पढ़ने के बजाय थोड़ी-बहुत साधना, अभ्यास नियमित रूप में नित्य प्रति करना कहीं अधिक लाभदायक है। तंत्र द्वारा कुण्डलिनी जाग्रत करने के लिए केवल तांत्रिक की ही पुस्तकें पढ़ें।

ध्यान रखें, ईष्ट शास्त्रों में नहीं है, शास्त्र तो केवल ईष्ट के प्रति निष्ठा व जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं। शास्त्र पढ़कर पण्डित, विद्वान तो बना जा सकता है, साधक नहीं। शास्त्रवित होना एक बात है और आत्मवित होना बिल्कुल अलग बात है। प्रभु में विश्वास रखें और अपने कार्य करते रहें, जो परिणाम सामने आयें उन्हें जैसे प्रभु की इच्छा व व्यवस्था मानकर स्वीकार करने का स्वभाव बना लें, तो इस संसार में रहते हुए भी हम दुःखों से बच सकते हैं।

प्रायः जब कुण्डलिनी शक्ति प्रथम बार चैतन्य होती है तो साधक को ऊंघ-सी आती है। यह प्राण के ऊपर चढ़ने से होता है और कुण्डलिनी जाग्रत होने का लक्षण है। जब मूलाधार में झटके या स्पन्दन-से अनुभव हो और सारा शरीर जोर-जोर से हिलने लगे, कुंभक स्वतः ही लग जाये। श्वास की गति अति तीव्र हो जाये और नियंत्रण में न रहे तो समझो यह क्रियायें कुण्डलिनी चैतन्य होने के लक्षण हैं।

जब आपका आसन स्थिर हो जाये, आंखें और दृष्टि भ्रूमध्य पर स्थिर हो जाएं। मन विचार विकाररहित हो जाये, केवल कुंभक स्वतः बिना चेष्टा के लग जाये, तो समझो कुण्डलिनी जाग्रत हो गई हैं।

जब आपको सहस्त्राराकी और प्राण की धारायें चढ़ती हुई अनुभव हों और स्वतः ही "ॐ" का उच्चारण होना शुरू हो जाये और मन आनन्द ही आनन्द की अनुभूति करे, तो समझो कुण्डलिनी जाग्रत हो गई हैं।

अपनी साधना-प्रणाली को दूसरों की साधना-प्रणाली से हीन न समझें। बार-बार साधना प्रणाली न बदलें। साधना में उन्नति का मापदण्ड है हमारे भीतर की बढ़ती हुई क्षमता। साधना में बैठने से पहले **ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः** का जप करना चाहिये और तीन बार "कण्ठ, कूप, भूख, प्यास निवृत्ति" ऐसा कहना चाहिये। दीर्घ श्वास अथवा प्राणायाम करें। साधना में बैठने से पूर्व सुषुम्ना स्वर चला लिया करें। दिन-रात में सुबह 6 बजे से प्रति डेढ़ घण्टे के बाद स्वस्थ व्यक्ति का सुषुम्ना स्वर चलता है और उस समय मन विचाररहित हो जाता है। यह समय सद्गुरु से निर्देश प्राप्त करने के लिये बहुत उपयुक्त है।

आप अभ्यास द्वारा (अपने संकल्प बल से) नासिकाग्र पर ध्यान जमाकर

जब चाहें तब अपना सुषुम्ना स्वर चला सकते हैं। साधना के समय शरीर, मस्तिष्क और गर्दन एक सीध में रखकर रीढ़ को सीधा लेकिन तनावरहित रखें। एक ही आसन में साधना करने का अभ्यास डालें।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व मन में दृढ़ संकल्प करें कि मैं इतने समय तक साधना में बैठूंगा। मन पर संयम पाये बिना आपकी अपने निज रूप में स्थिति नहीं हो सकती। हर जीव को अपने मूल रूप की ओर लौटना ही होगा भले ही वह आज पहुंचे अथवा कल, इस जीवन में पहुंचे या अगले जन्मों के पश्चात् लेकिन मानव को निज रूप तक पहुंचना अवश्य ही पड़ेगा।

इतना कहकर भैरवी मौन हो गयी। मेरा सिर उसने अपनी गोद से उठाकर एक ओर रख दिया। उसके मस्तक पर ठण्ड के बावजूद पसीने के कण चमक उठे थे। उसका चेहरा लाल हो गया था। मैंने पूछा, क्या भैरवी चक्र के लिये भीतर चलोगी? वह तमक कर बोली, धत् कैसी भैरवी साधना? अब तो जागरण का समय है। भगवान दिवाकर धीरे-धीरे जाग रहे हैं और चन्द्रमा नींद की गोद में जा रहा है। अब हम भीतर चलेंगे तंत्र साधना के लिए। भैरवी के सिद्ध चक्र के लिये ही तो रात बनी है।

भैरवी चली गयी थी। आश्चर्य हुआ मुझे। कहां चली गयी वह? भीतर जाकर चारों ओर खोजा, मगर वह कहीं नहीं मिली मुझे। निराश-हताश होकर वापस लौट आया। जहां अभी तक बिखरी हुई थी इत्रों की मायावी सुगंध। पूरे दिन नींद नहीं आई। बराबर करवटें बदलता रहा—और यह सोचता रहा कि क्यों और किस लिए वह अलौकिक अनुभव कराया था मुझे भैरवी ने? फिर मुझे बतलाएं, मुझसे कुछ कहे बिना चली कहां गयी वह? कहने की आवश्यकता नहीं—इन तमाम घटनाओं को घटित हुए पूरा दिन बीत गया है। मगर भैरवी के दर्शन नहीं हुए मुझे। लेकिन अब भी उस महातंत्र साधिका की तमाम स्मृतियां सुरक्षित हैं मेरे मस्तिष्क में। मेरा दिन बीत जाने के बाद भी उस महाभैरवी का रूप मेरे मानसपटल पर छाया हुआ है। जब कभी मैं उसकी स्मृतियों के सागर में डूब जाता हूं तो ऐसा अनुभव होता है कि वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी है और मेरी ओर देखकर मंद-मंद मुस्कुरा रही है। मैं पुनः रात की तैयारी में लग जाता हूं। सोचता हूं, अब मुझे रात इतनी प्यारी क्यों है? इसका कारण कहीं तंत्र भैरवी तो नहीं?

❑❑❑

4

मंत्रोक्त श्री आपदुद्धारक बटुक भैरव

अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

तांत्रिक सम्प्रदाय, अघोरी, औघड़, साधु सम्प्रदाय अथवा नाथ सम्प्रदाय हो, इन सभी में एक बात समान रूप से पायी जाती है, यह सभी श्री भैरवनाथ के अनुयायी होते हैं। आप देखें हर देवी का एक भैरव अवश्य होता है। कहते हैं, एक समय भगवान शिव तथा माता पार्वती मेरू पर्वत पर बैठे थे। उस समय कल्याणार्थ माता पार्वती ने दुःख, दारिद्रय, भय को हरण करने वाले शिव रूप भगवान भैरव को प्रसन्न करने की कथा भगवान शिव से "कहने को कहती" है। भगवान शिव व पार्वती सम्वाद को वृहदारण्यक ऋषि ने इस प्रकार कहा है—

॥ वृहदारण्यक उवाच ॥

मेरूपृष्ठ सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
शंकर परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्।।

वृहदारण्यक ऋषि कहते हैं—मेरू पर्वत के शिखर पर आनन्दपूर्वक बैठे हुए जगत गुरु भगवान शंकर से पार्वती ने पूछा—

॥ पावर्तत्युवाच ॥

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रागमादिषु।
आपदुद्धारणं मन्त्र सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्।।
सर्वेषां चैव भूतानां हितार्थ वाञ्छितं मया।
विशेषतस्तु राज्ञां वै शान्तिपुष्टिप्रसाधनम्।।
अङ्गन्यास करन्यास देहन्यास समन्वितम्।
वक्तुमर्हसि देवेश मम हर्षविबर्धनम्।।

हे भगवन! आप सर्वधर्मों के ज्ञाता, आगम शास्त्रों के ज्ञाता हैं, ऐसा स्तोत्र बताइए जिससे लोगों का आपत्तियों से उद्धार हो सके और उन्हें सर्व प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हो सकें। समस्त प्राणियों के हित के लिए राजाओं की शांति पुष्टि के लिए ऐसे स्तोत्र को जानने की मेरी इच्छा है। उस मंत्र के अंगन्यास, करन्यास, देहन्यास की विधि भी बताएं।

॥ शंकर उवाच ॥

शृणु देवि महामन्त्रमापदुद्धारहेतुकम्।
सर्वदुःख प्रशमनं सर्वशत्रु विनाशनम्।।
अपस्मारादिरोगाणां ज्वरादीनां विशेषतः।
नाशनं स्मृतिमात्रेण मन्त्रराजमिमम् प्रिये।।
ग्रहराजभयानां च नाशनं सुखवर्धनम्।
स्नेहद्वक्ष्यामि ले मन्त्र सर्वसारमिमम् प्रिये।।
स्वार्थ कामदं मन्त्रं सर्वभोगप्रदं नृणाम्।
आपदुद्धारणमिति मन्त्रं वक्ष्याम्यशेषतः।।

भगवान शंकर कहने लगे, हे देवि! सुनो आपत्तियों से रक्षा करने वाला महामंत्र मैं तुम्हें बतलाता हूं जो सब दुःखों का शमन करता है और शत्रुओं का विनाश करता है। मिरगी आदि रोग तथा मुख्य रूप से ज्वर पीड़ा इस मंत्र राज के जप करने से नष्ट हो जाते हैं। ग्रहों का प्रकोप तथा राज-भय नष्ट होकर सुख में वृद्धि करता है, है प्रिये! तुम्हारे स्नेहवश इस स्तोत्र का समस्त सार तुम्हें बतला रहा हूं, इससे समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं तथा यह समस्त भोग प्रदान करता है। इस आपदुद्धारक मंत्र का विवेचन अब मैं करता हूं—

प्रणवं पूर्वमुद्घृत्य देवीप्रणवमुद्धरेत्।
बटुकायेति वै पश्चादापदुद्धाराणाय च।।
कुरुद्वयं ततः पश्चाद् बटुकायेति वै पुनः।
देवीप्रणवमुद्घृत्य मन्त्रोद्धारमिमं प्रिये।।
मन्त्रोद्धारमिमं देवि त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
अपकाश्यमिमं मन्त्रं सर्वशक्तिसमन्वितम्।।
स्मरणादेव मन्त्रस्य भूतप्रेतपिशाचकाः।
विद्रवन्त्यतिभीतानि कालरुद्रादिव प्रजाः।।

मंत्र के आदि में प्रणव "ॐ" फिर देवी प्रणव "ह्रीं" लगाकर बटुकाय उसके पश्चात् आपदुद्धारणाय लगाएं, इसके पश्चात् दो बार कुरु कहें, पुनः बटुकाय कहकर देवी प्रणव "ह्रीं" का उच्चारण करें। हे प्रिये! इस प्रकार मंत्र पूर्ण हो जाता है (दृष्टव्य—पूरा मंत्र इस प्रकार बनता है—"ॐ ह्रीं" बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं) हे देवी! यह मंत्र त्रैलोक्य में अत्यन्त दुर्लभ है और यह सर्वशक्तिमान मंत्र अत्यन्त गोपनीय है। इस मंत्र का जप करने से भूत-प्रेत और पिशाच बाधा किसी के द्वारा हानि का भय हो, यह सब उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे कालरूद्र का स्मरण करने से भयभीत पूजा का भय दूर हो जाता है।

पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि पूजयेद्वापि पुस्तकम्।
नाग्निचौरभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा।।
न च मारीभयं किञ्चितत्सर्वत्र सुखी भवेत्।
आयुरारोग्यमैश्वर्य्यं पुत्रपोत्रादिसम्पदः।।
भवन्ति सततं तस्य पुस्तकस्यापि पूजनात्।
न दारिद्रयं दु दौर्भाग्यं नापदो भयमेव च।।

इसका पाठ करने से या किसी अन्य के द्वारा पाठ करवाने से, और इस ग्रंथ का पूजन करने से अग्नि-भय, चोरों का भय, नवग्रह तथा राज्य का भय नहीं रहता। उसे महामारी का भी भय नहीं रहता और चारों ओर सुख ही सुख प्राप्त होता है, आयु तथा आरोग्य में वृद्धि होती है। ऐश्वर्य बढ़ता है तथा पुत्र, पौत्रादि सम्पत्तियों से पूर्ण रहता है और उसे दरिद्रता, दुर्भाग्य तथा आपदाओं का भी भय नहीं रहता है।

॥ पार्वत्युवाच ॥

क एष भैरवो नाम आपदुद्धारणो मतः।
त्वया च कथितो देव भैरवः कल्प उत्तमः।।

तस्य नामसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च।
सारमुद्धृत्य तेषां वै नामाष्टशतकं वद।।
यानि संकीर्तयन्मर्त्यः सर्वदुखःविवर्जितः।
सर्वान्कामानवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च।।

पार्वतीजी कहने लगीं—हे देव! आपने अपने विचार से जिन भैरव को आपत्तियों से उद्धार करने वाला बतलाया है उनका नाम सेवन किस प्रकार करना चाहिए, उसकी सर्वोत्तम विधि क्या है? उनके सहस्त्रों नहीं बल्कि करोड़ों, अरबों नाम हैं। इन नामों का सार रूप केवल 108 नाम मुझे बताइए। जिन नामों का उच्चारण करने मात्र से मनुष्य सब दुःखों से छूट जाए तथा साधक की समस्त मनोकामनायें पूर्ण होकर उसे सिद्धि प्राप्त हो जाए।

॥ शंकर उवाच ॥

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
आपदुद्धारणस्येदं नामाष्टशतमुत्तमम्।।
सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापत्तिनिवारणम्।
सर्वकामार्थदं देवि साधकानां सुखावहम्।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वोद्रवानाशनम्।
आयुःकरं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम्।।
नामाष्टशतकस्यास्य च्छन्दोऽनुष्टुप प्रकीर्तितम्।
बृहदारण्यको नाम ऋषिर्देवोऽथ भैरवः।।
अष्टबाहुं त्रिनयमिति बीजं समाहितम्।
शक्तिक कीलकं शेषमिष्टसिद्धौ नियोजयेत्।।

शंकर जी कहने लगे—हे देवि! इस भैरव महात्म्य को सुनो। उनके 108 सर्वोत्तम नाम मैं तुम्हें बताता हूं जिनके स्मरण मात्र से आपत्तियों से उद्धार हो जाता है। यह नाम संग्रह समस्त पापों को हरण करने वाला और पुण्य का दाता है तथा समस्त आपत्तियों का विनाश करता है, सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करता है और साधक के सुख में वृद्धि करता है। सभी प्रकार से मंगल करता है और उपद्रवों का नाश करता है। आयुवर्धक, पुष्टिकर्त्ता, लक्ष्मीदाता तथा यश बढ़ाने वाला है। इन नामों के संग्रह का नाम अष्टोत्तरशतनाम स्त्रोत है, यह अनुष्टव छन्द है, वृहदारण्यक इसके ऋषि हैं और भैरव देवता हैं। अष्टबाहु त्रिनयन बीज हैं, शक्ति (ह्रीं) कीलक हैं, इष्ट सिद्धि-प्राप्ति के लिए इसका उपयोग होता है।

॥ अथ देहन्यासः ॥

भैरवं मूर्ध्नि विन्यस्य ललाटे भीमदर्शनम्।
नेत्रयोर्भूतहननं सारमेयानुगं भ्रुवोः।।
कर्णयोर्भूतनाथं च प्रेतवाहं कपोलयोः।
नासापुटौष्ठयोश्चैव भस्माङ्गं सर्पभूषणम्।।
अनादिनाथमास्ये च शक्तिहस्तं मले न्यसेत।
स्कन्धयोदैत्यशमनं बाह्वोरतुलतेजसम्।।
पाण्योः कपालिनं न्यस्य स्तनयः कामचारिणम्।
उदरे च सदातुष्टं क्षेत्रेशं पार्श्वयोस्तथा।।

देहन्यास इस प्रकार करें—"भैरव", "मूर्धिनी", "भीमदर्शन" कहकर ललाट का भूतहनन कहकर दोनों नेत्र का और "सारमेयानुगम्" कहकर भवों का न्यास (स्पर्श) करें। "भूतनाथ" कहकर कानों का, "प्रेतवाहु" करकर कपोलों का, "भस्मांग" कहकर नासापुटों का, "सर्पभूषणम्" कहकर ओष्ठो का स्पर्श करें। "अनादिनाथ" कहकर आस्य का, "शक्तिहस्त" कहकर कण्ठ का, "दैत्यशमनम्" कहकर कन्धों का, "अतुलतेजस्" कहकर बाहुओं का न्यास करें। "कपालिन" कहकर करों का, "कामचारिणं" कहकर स्तनों का, "सदातुष्टं" कहकर उदर का, "क्षेत्रेशं" कहकर दोनों पार्श्वों का न्यास करें।

क्षेत्रपालं पृष्ठदेशे क्षेत्रज्ञं नाभिदेशके।
पापौघनाशनं कट्यां बटुकं लिङ्गदेशके।।
गुदे रक्षाकरं न्यस्य तथोर्वो रक्तलोचनम्।
जामुनोघुर्घुरखं जंघथो रक्तपायिनम्।।
गुल्फयोः पादुकासिद्धं; पाद्पृष्ठे सुरेश्वरम्।
आपादमस्त चलं आपदुद्धारणों तथा।।

"क्षेत्रपाल" कहकर पीठ का, "क्षेत्रज्ञ" कहकर नाभि प्रदेश का, "पापौघनाशन" कहकर कटि का तथा "बटुकं" कहकर लिंग का स्पर्श करें, "रक्षाकरं" कहकर गुदा का, "रक्तलोचनं" कहकर उरू का "घुर्घुरखं" कहकर जानु का, "रक्तपायिनम्" कहकर जंघाओं का न्यास करें। "पादुकासिद्धं कहकर गुल्फों का "सुरेश्वरम्" कहकर पैर के पीछे के भाग का तथा "आपदुद्धारणं" कहकर मस्तक से पैर तक का न्यास करें।

॥ अथ दिगन्यासः ॥

पूर्वे डमरूहस्तं च दक्षिणे दण्डधारिणम्।
खड्गहस्तं पश्चिमे च घण्टावादिनमुत्तरे।।
आग्नेय्यामग्निवर्णं च नैर्ऋत्त्याञ्वाष्टसिद्धिदम्।
वायव्यां सर्वभूतस्थं ईशान्या शूल धारिणाम्।।
ऊर्ध्वं खेचारिणं व्यस्य पाताले रौद्ररूपिणम्।
एवं विनयस्य देहे स्वें षडङ्गेषु ततो न्यसेत्।।

दिगन्यास इस प्रकार करें—हाथ जोड़कर "डमरूहस्तं" कहते हुए पूर्व दिशा का न्यास करें, "दण्डधारिणम्" कहते हुए दक्षिण दिशा का खंगहस्त कहते हुए पश्चिम दिशा का, "घण्टावादिनं" कहते हुए उत्तर दिशा का न्यास करें। "अग्निवर्ण" कहते हुए आग्नेय कोण का, "इष्टसिद्धिदम्" कहते हुए नैर्ऋत्य कोण का, "सर्वभूतस्थं" कहते हुए वायव्य कोण का तथा "शूलधारिणम्", कहते हुए ईशान कोण का न्यास करें। "खेचारिणम्" कहते हुए आकाश की दिशा का, "रौद्ररूपिणम्" कहते हुए पाताल का न्यास करें। इस प्रकार देहन्यास तथा दिगन्यास करके षडंगन्यास निम्न प्रकार करें—

रूद्रमङ्गुष्ठयोर्न्यस्य तर्जन्योश्च दिवाकरम्।
शिवं मध्यमयोर्न्यस्य अनामिक्योस्त्रिशूलिनम्।।
ब्राह्मणं तु कानिष्ठिक्यो करतलयोस्त्रि पुरान्तकम्।
मांसाशनं कराग्रेषु करपृष्ठे दिंगम्बरम्।।

"रूद्रम" कहकर दोनों अंगूठों का, "दिवाकरम" कहते हुए तर्जनी अंगुलियों का, "शिवं" कहते हुए मध्यमा अंगुली का, "त्रिशूलिनम्" कहते हुए अनामिका का न्यास करें। "ब्राह्मण" कहते हुए कनिष्ठिका का, "त्रिपुरान्तकम्" कहते हुए करतल का, "मांसाशनं" कहते हुए कराग्र का तथा "दिगम्बरम्" कहते हुए पृष्ठ का न्यास करें।

॥ अथ नामागन्यासः ॥

हृदये भूतनाथाय आदिनाथाय मूर्द्धनि।
आनन्दवरपूर्वाय नाथाय च शिखासु च।।
सिद्धशाबरनाथाय कवचे विन्यसेत्ततः।
सहजानन्दनाथाय न्यसेन्नेत्रत्रये तथा।।

परमानन्दनाथाय अस्त्रे चैव प्रयोजयेत्।
एवं न्यासविधि कृत्वा यथावत्तदनन्तरम्।।
ध्यायेच्चैव महेशानि साधकः सर्वसिद्धये।
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्या पठेन्नरः।।

नामांगन्यास इस प्रकार करें—"भूतनाथाय" कहते हुए हृदय का, "अदिनाथाय" कहते हुए मस्तक का, "आनन्दवरपूर्वायनाथाय" कहकर शिखा का न्यास करें। "सिद्धशाबरनाथाय" कहकर कन्धे का तथा "सहजानन्दनाथाय" कहकर तीनों नेत्रों का न्यास करें। "परमानन्दनाथाय" कहकर ॐ अस्त्राय फट् बोलकर न्यास करें। इस प्रकार विधिपूर्वक न्यास करें। इसके पश्चात् महेश का ध्यान करें जिससे समस्त सिद्धियां प्राप्त हो सकें। इसके पश्चात् भैरव देवता का आगे कहे हुए ध्यान के अनुसार स्त्रोत पाठ करें।

॥ अथ ध्यानम् ॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्त्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्।।
अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालबदनं नूपुराख संकुलम्।।
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरूहम्।
दिगम्बरं कुमारेशं बटुकाख्यं महाबलम्।।
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः।
डमरूं च कपालं च वरदं भुजगं तथा।।
अग्निवर्ण समोपेतं सारमेय समान्विसम्।
ध्यात्वा जपेत्सुसन्तुष्टः सर्वान कामानवाप्नुयात्।।

बटुक भैरव का ध्यान इस प्रकार करें—शुद्ध स्फटिक के समान पारदर्शक शरीर सहस्त्रों सूर्यो के समान तेजयुक्त जिनका नीले बादल के समान श्यामवर्ण है, नीले सुरमे के समान कान्ति वाले भैरवजी का मैं ध्यान करता हूं। आठ भुजाओं, तीन नेत्रों, चार भुजाओं और दो भुजाओं वाले, बड़े-बड़े दांतों के कारण विकराल मुख वाले नूपुर के शब्द से शब्दायमान भैरवजी का मैं ध्यान करता हूं। सर्प की मेखलाधारी अग्नि जैसे वर्ण की शिखाधारी चारों दिशाओं तथा आकाश के बालकरूपी राजा महाबली बटुक भैरव का मैं ध्यान करता हूं।

खट्वांग कोड़ा तथा अपने दक्षिण भाग में भालाधारी डमरू कृपालधारी,

वरदाता, नागधारी भैरव का मैं ध्यान करता हूं। अग्निवर्ण स्वरूप तथा श्वान को साथ रखने वाले भैरव का मैं स्मरण करता हूं। इस प्रकार ध्यान कर संतोषपूर्वक जप करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

॥ मूल नामावली स्तोत्र ॥

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियों विराट् ।।1।।

श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकृत।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः ।।2।।

कंकालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रों बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः ।।3।।

शूलपाणिः खड्गपाणिः कंकाली धूम्रलोचनः।
अमीरूभैरवीनाथो भूत्तपो योगिनीपतिः ।।4।।

धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारा नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत् ।।5।।

कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधि।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च तिलोकपः ।।6।।

त्रिनेत्रतनयो डिम्भशान्तः शान्तजनप्रियः।
बटुको बहुवेषश्च खटवाङ्गवरधारकः ।।7।।

भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धर्तो दिगम्बरः शूरो हरिणः पांडुलोचनः ।।8।।

प्रशान्तः शाक्तितदः सिद्धः शंकरप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिनिधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः ।।9।।

अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखः।
भूधरो मूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मज ।।10।।

कंकालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतवान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भो मारणः क्षोभणस्तथा ।।11।।

शुद्धनीलाञ्जनप्रख्यो देत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालोऽबालपराक्रमः ।।12।।

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिका तः कामिनीवशकृद्वशी ।।13।।
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो मायामन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभविंष्णुरितीव हि ।।14।।

॥ फलश्रुति ॥

अष्टोत्तरशत नाम्नां भैरवस्य महात्मनः।
मया ते कथितं देवि! रहस्यं सर्वकामदम्।।
या इदं पठति स्तोत्रे नामाष्टशतमुत्तमम।
न तस्य दुरितं किञ्चिम्न रोगेभ्यो भयं भवेत।।
न च नारीभयं किञ्चिन्न च भूतभयं क्वचित्।
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्प्राप्नुया मानवः क्वचित्।।
पातकेभ्यो भयं नैव यः पठेत्स्तोत्रमुत्तमम्।
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये।।

हे देवि! अभी मैंने तुम्हें बटुक भैरव का अष्टोतशत नाम स्तोत्र बताया है, यही मनुष्य की समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने का रहस्य है। जो व्यक्ति बटुक भैरव के 108 नाम वाले इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करता है उसे किसी दुराग्रह में फंसे या किसी रोग में ग्रसित होने का भय नहीं रहता, उसे महामारी होने का तनिक भी भय नहीं रहता और न उसे भूत-प्रेत बाधा सता सकती है। उसे शत्रुओं द्वारा हानि पहुंचने का भय भी नहीं रहता। उस पर कोई झूठा आरोप लगने का भय नहीं रहता, महामारी राज्य की ओर से किसी प्रकार का भय, चोरों का भय, आग लगने का भय भी इस सर्वोत्तम स्तोत्र का पाठ करने वाले को नहीं रहता।

औत्पातिके महाघोरे तथा दुस्वप्नदर्शने।
बंधने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।।
सर्व प्रशममायाति भयं भैरवकीर्तनात्।
एकादशसहस्त्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।।
यस्त्रिसन्ध्य पठेद्देवी संवत्सरमतन्द्रितः।
स सिद्धिंप्राप्नुयादिष्टांदुर्लभामपि मानवः।।
षणमासं भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्।
राजशत्रु विनाशार्थ पठेन्मासाष्टकं पुनः।।

भयंकर उत्पातों, डरावने स्वप्न देखने, राज्य द्वारा घोर बंधन में डाल देने पर इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। भैरव का गुणगान करने से सर्व प्रकार के भय शान्त हो जाते हैं। इस स्तोत्र का पुरुश्चरण ग्यारह हजार का है। नियमपूर्वक एक वर्ष तक तीनों कालों में जो इसका पाठ करता है उस मनुष्य को दुर्लभ सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। जिस मनुष्य को भूमि प्राप्त करने की इच्छा है उसे छह मास तक इसका पाठ करना चाहिए, तो उसे भूमि मिल जाएगी और अगर राज्य की ओर से कोई झगड़ा-मुकदमा लग गया है तो आठ महीने तक इसका पाठ करने से वह झगड़ा समाप्त हो जाता है।

रात्रो वास्त्रय चैव नाशयत्येव शात्रवान।
जपे मास त्रयं भृत्यों राजानं वशमानयेत्।।
घनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी चापि मानवः।
पठे मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि।।
धनपुत्रां स्तथा दारान्प्राप्नुया नात्र संशय।
रोगी रोगात्प्रमुच्चंयेत बद्धो मुच्चयेत बंधनात्।।
भीतो भयात् प्रमुच्चयेत तत्तदापन्न आपदः।
निगडैश्चापि बद्धो यः कारागृहनिपातितः।।

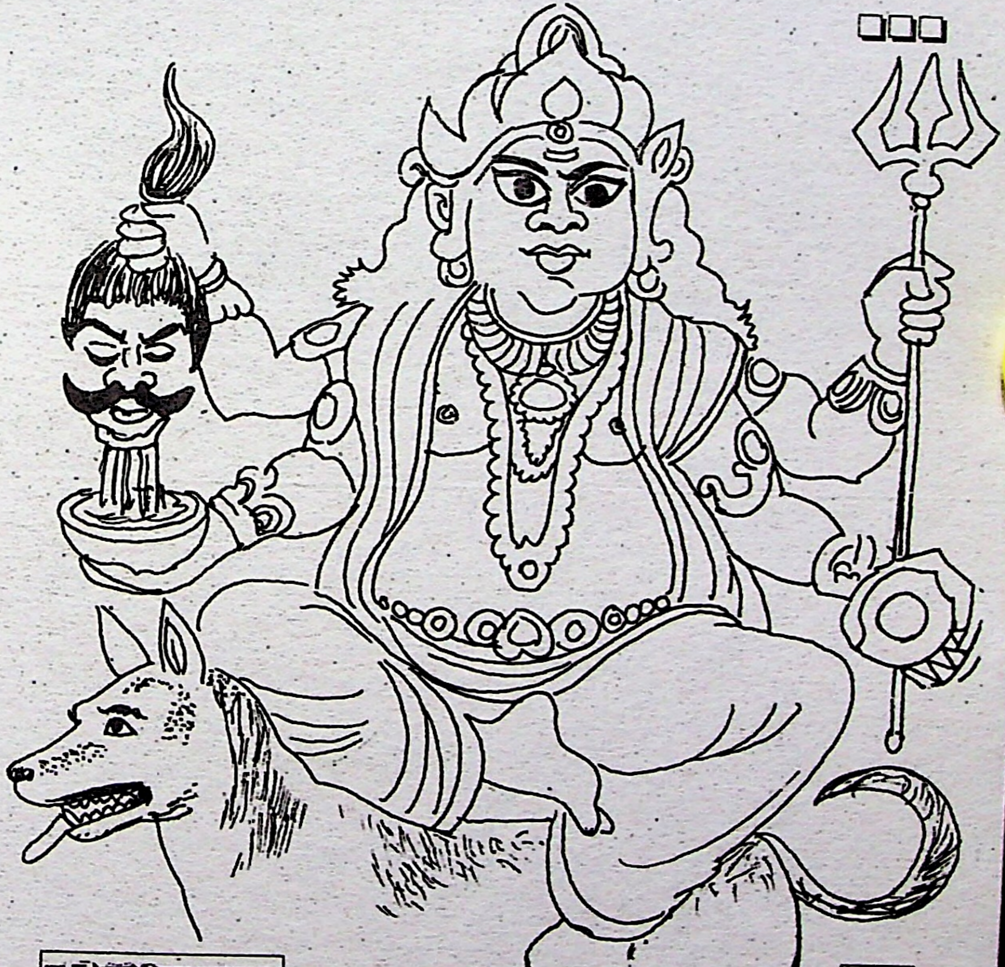
रात्रि में तीन बार पढ़ने से शत्रुओं का विनाश होता है, सेवक द्वारा तीन मास तक जप करने से स्वामी उसके वश में हो जाता है। धन की इच्छा रखने वाले, पुत्र-प्राप्ति की इच्छा रखने वाले तथा पत्नी-प्राप्ति की इच्छा रखने वाले मनुष्य को तीन मास तक प्रत्येक दिन तथा रात्रि में एक बार इसका पाठ करना चाहिए। इस प्रकार जप करने से निश्चित रूप से साधक को धन, पुत्र तथा पत्नी प्राप्त होती है, रोगी को रोग से मुक्ति मिलती है तथा बंधक बनाकर रखे गए मनुष्य के बंधन कट जाते हैं। भयभीत मनुष्यों के भय दूर होते हैं तथा आपदाएं समाप्त हो जाती हैं। हथकड़ी-बेड़ी में बंधा हुआ और जेल में बन्द व्यक्ति भी इसके पाठ से मुक्ति पा जाता है।

शृंखलाबंधनं प्राप्तः पठेच्चैव दिवानिशम्।
यान्यान्समीहते कामांस्तानाप्नोति मानवः।।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं न देय यस्य कस्यचित्।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजव दम्भवर्जिते।।
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकामफल प्रदम।
य इदं पठते नित्यं, धनधान्यमवाप्नुयात्।।

इस प्रकार जंजीरों में बंधे व्यक्ति को इसका पाठ रात-दिन करते रहन चाहिए। जो-जो मनुष्य जिस-जिस कार्य की इच्छा से इसका पाठ करता है उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। इस मंत्र को हर किसी व्यक्ति को न बताएं तथा गुप्त रखें। कुलीन, शान्त, लोभ, मोह, द्वेष तथा अहंकार से रहित सुपात्र व्यक्ति के समक्ष ही इस मंत्र को प्रगट करना चाहिए। इस स्तोत्र का पाठ करने से पुण्य मिलता है तथा समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। जो इसका नित्य पाठ करते हैं उनका घर धन-धान्य से भरा रहता है।

इति श्रीरूद्रयामले तन्त्रे ईश्वर-पार्वती सम्वादे आपदुद्धारक बटुक भैरव स्तोत्र समाप्तम्

❑❑❑



5

गोपनीय शाबर तंत्र-मंत्र प्रयोग

अनेक तांत्रिक मंत्रों के विद्यमान होते हुए भी शाबर मंत्रों के शीघ्र व चमत्कारी प्रभाव से सारा समाज चमत्कृत है। सर्प-बिच्छु के झाड़े से लेकर भूत-प्रेत शांति करने हेतु शाबर मंत्रों का ही प्रयोग होता है। ग्रामीण सभ्यता शाबर मंत्रों से ही अधिक प्रभावित है। शाबर मंत्रों की गुप्त अन्तर्गर्भित शक्ति एवं इनकी उत्पत्ति का रहस्य विद्वानों के लिए आज भी शोध का विषय बना हुआ है।

कदाचित् कोई भी सम्प्रदाय अपने मूल रूप में जो होता है, वह कुछ समय के बाद नहीं रह जाता, क्योंकि उनमें समय के अनुसार कई मान्यताएं, पद्धतियां भी प्रविष्ट होती जाती हैं तथा धीरे-धीरे कोई भी सम्प्रदाय सार्वजनिकता की ओर बढ़ने के कारण अपने मूल चिन्तन से कुछ न कुछ हट जाता है।

अन्याय सम्प्रदाय की ही भांति नाथ सम्प्रदाय का भी एक सुनिश्चित दर्शन तो रहा ही है, साथ ही इस पंथ में अद्वितीय साधक, तपस्वी भी उत्पन्न हुए हैं। ये साधक न केवल शिवत्व की ही साधना करते थे, वरन् शक्ति तत्व के महत्व को भी स्वीकार करते थे तथा-सर्वोच्च महत्ता को ही महत्व देते थे। इसी कारणवश नाथ पंथ में शाबर तंत्र साधना के प्रमाण मिलते हैं तथा शिव साधना के भी।

ऐसी ही एक मान्यता यह भी है, कि नाथ पंथी साधक उग्र, हठीले, कठोर, मनमौजी, बात-बात पर झगड़ने वाले होते हैं। अगर किसी व्यक्ति से पूछिये, तो प्रायः वह पंथी और अघोरियों में भेद भी नहीं कर पाते और प्रायः उन्हें एक ही समझते हैं। यह एक नितान्त दुःख की बात है, कि जिस सम्प्रदाय का प्रचलन गोरखनाथ जैसे

युगपुरुष के माध्यम से हुआ, उसके विषय में कालान्तर में किन्हीं कारणोवश ऐसी धारणाएं व्याप्त हो गईं, जबकि गुरु गोरखनाथ एवं परवर्ती नवनाथों द्वारा समाज के कल्याण के लिए जो कुछ भी किया गया वह अकल्पनीय और अद्‌भुत है।

एक मान्यता के अनुसार भगवान् शिव और पार्वती ने जिस समय अर्जुन के साथ किरात वेश में युद्ध किया था, उस समय पार्वती व शिव के मध्य आगम-चर्चा को लेकर आपसी प्रश्नोत्तर हुए। चूंकि तंत्र विद्या के देव उस समय शाबर वेश में थे तथा पार्वती शाबरी वेष में थी। अतः उनके द्वारा प्रदत तांत्रिक मंत्र शाबर मंत्र कहलाने लगे।

कुछ मान्यताएं ऐसी भी होती हैं, जो समाज के विश्वास में घर बना लेती हैं और युग बीत जाने के पश्चात् भी समाज न तो उनमें संशोधन करना चाहता है, न ही उनको कसौटी पर परखना चाहता है। जबकि विद्वान पुरुष तो वह होता है, जो किसी भी बात के दोनों ही पक्षों पर निष्पक्षता से विचार करे तथा जो सत्य हो, उसे स्वीकारने के साथ-साथ उसकी त्रुटियों को भी स्वीकार करे।

तांत्रिकों के एक बहुत बड़े वर्ग की यह मान्यता है कि कलियुग के सिद्ध ओघड़ तपस्वी श्री मत्स्येन्द्रनाथ के काल से शाबर मंत्रों की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, क्योंकि वैदिक काल में ऐसे मंत्रों की चर्चा कहीं नहीं मिलती है। श्री मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गोरखनाथ सिद्ध योगी व चतत्कारी तांत्रिक के रूप में विश्वविख्यात हुए। गुरु गोरखनाथ ने जनहित में लोकभाषा में कुछ मंत्र बनाये। वे मंत्र आगे चलकर शाबर मंत्रों के नाम से विख्यात हुए। कालांतर में अनेक योगियों, यतियों व पीरों के नाम शाबर मंत्रों के साथ जुड़ते चले गये। नाथ पंथ के योगी अपने "गुरु" के रूप में ही भगवान शिव के ही अर्द्धनारीश्वर रूप की ही साधना करते हैं।

शाबर मंत्र साधना द्वारा किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। अभीष्ट सिद्धि के लिए इससे शक्तिशाली साधन और कोई नहीं है। लेकिन आरम्भ में इस विद्या का प्रयोग केवल ब्रह्मज्ञान, ईश्वर सह्यिा और कृपा प्राप्त करने के लिए किया जाता था।

शाबर मंत्र पर आधारित कुछ ग्रंथ इस प्रकार हैं। समय की धूल इन पर भी पड़ी, आज इनमें से अधिकांश लुप्त हैं—

1. नागार्जुन, 2. जड़भरत, 3. हरिश्चन्द्र, 4. सत्यनाथ, 5. भीमनाथ, 6. गोरखनाथ, 7. चर्पटनाथ, 8. अवघटनाथ, 9. कन्यधारी, 10. जलन्धरनाथ, 11. मलयार्जुनाथ।

हालांकि मंत्र साधना का मुख्य लक्ष्य आध्यात्मिक सिद्धि की प्राप्ति रहा है तथापि इसके प्रणेताओं ने लौकिक जीवन की उपेक्षा नहीं की, उन्होंने सभी लोगों के लिए, लोकहित के लिए भी उचित मार्ग अपनाये हैं।

दैहिक दृष्टि से भौतिक सिद्धान्तों की प्राप्ति और उपयोग के मार्ग भी बताये हैं। रोगी और विरागी सभी के लिए साधना के लाभ सुलभ हैं। कोई भी किसी भी प्रकार की साधना कर सकता है। स्मरण रहे कि प्राचीन युग में आज जैसी कुत्सा नहीं थी। अतः हिंसा अपराध से परे प्रायः समस्त साधक लोक कल्याण की भावना से ही तपश्चर्य करते थे, व्यक्तिगत स्वार्थ से वह सर्वथा मुक्त थे।

शाबर मंत्रों में एक प्रकार की गाली-गलौज जैसी भाषा का प्रयोग किया जाता है तथा साधक अपने देवता को सौगन्ध देता है कि मेरा अमुक कार्य करो और वह अपशब्द बेझिझक बोल जाते हैं। उठ रे हनुमान जति, मेरा यह काम नहीं करे तो माता अंजनी का दूध करे हराम। सति की सेज पर पांव धरे। महादेव की जटा छूटे मेमदा पीर की आन। सुलेमान पैगम्बर की दुहाई। सुलेमान पीर की पूजा पांव ठेली। गुरु गोरखनाथ लाजे, आदि आदि।

कुल मिलाकर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि शाबर मंत्र सहज सुलभ "अनमोल" सिद्ध हुए। अब कुछ शाबर मंत्र प्रस्तुत हैं—

प्रेत बाधा निवारण

अपनी रसोई का बचा हुआ जल, बच की जड़ डालकर दो घण्टे तक छोड़ दें। इसके पश्चात् किसी एकान्त स्थान पर बबूल के पेड़ के नीचे का स्थान साफ करके गोबर से लीप दें। अब अड़हुल के 108 फूल एकत्र करें। जल से बच की जड़ निकालकर रख लें। निम्न मंत्र का जाप करें—

अनहद कुल नाथ कहत सुन।
तीन पताका चौथी बिंदिया, सिंदूर की।।
जागन पूरब की दिसिया, शब्द सांचा।
पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

चालीस दिन तक यह क्रिया करें। 41वें दिन आप आसन बिछाकर उपर्युक्त क्रिया करें, किन्तु जल बबूल के पेड़ की जड़ में न डालें। अगर भूत-प्रेत सामने आकर जल मांगें, तो समझ लें, मंत्र सिद्ध हो गया।

पीलिया झाड़ने का मंत्र

जिसको पीलिया रोग हुआ हो उसके सिर पर एक कांसे की कटोरी में तिल का तेल लेकर कटोरी रखें और कुशा से उस तेल को चलाते हुए अग्रांकित मंत्र को 31 बार पढ़ें। ऐसा तीन दिन तक करने से तेल पीला पड़ जायेगा और पीलिया झड़ जायेगा।

काली रात एक नदी, दो तीर सात समुद्र का।
जगमग नीर, कामाख्या रानी का गौरी।।
पिण्डा, भैरवनाथ हरो सब पीरा, शब्द सांचा।
पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

अधरंग उतारने का मंत्र

इस मंत्र का 1371 बार मिट्टी की माला पर जप करें तथा शुद्ध घी, मिश्री, गऊ के दूध का हवन करने से संकल्पित व्यक्ति का अर्द्धांग का रोग दूर हो जाएगा।

मंत्र इस प्रकार है—

एक ठों सरसों सोल सोला राई, मोरी पटवर कोरे जाई।
खाय खाय पड़े, भार जे ते, मरे उलट विद्या ताही परे।।
शब्द सांचा पिंड काचा, तो हनुमान का मंत्र सांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

डाकिनी को सजा देना

छतरी का बाजा बजे, तिनक की भांग।
चढ़े, भैरव का बल बढ़े, गोरख की बात।।
रहे, हलर हलर लहर लहर टिनक टिनक।
झिमक झिमक, चार के चार गोड़ दुई हे।।
माथे पड़े, सबद सांचा पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा।।

इस मंत्र से गुग्गुल को अभिमंत्रित करके ऊखल में डालें और मूसल से उसको कूटें। डाकिनी को चोटें लगेंगी तथा वह पीड़ित व्यक्ति के शरीर को छोड़ देगी। गुग्गुल कूटते समय यह मंत्र इक्यावन बार बोलें।

पत्थर-ईंट रोकना

मंगलवार के दिन जो मनुष्य मर जाये, तो उसके पीछे श्मशान घाट जावें। मुर्दे को जहां विश्राम दिया जाये, उस स्थान की मिट्टी लें, तालाब की मिट्टी लें तथा गधे के पेशाब में मिलाकर, गोली बनाकर, जिस घर में फेंकेंगे वहां पत्थरों

व ईंटों की वर्षा शुरू हो जायेगी। नीचे लिखे मंत्र को नई ईंट पर राख से लिखकर जिस घर में रख आवें, उस घर में ईंट-पत्थर बरसना शुरू हो जायेगा।

मंत्र इस प्रकार है—

ओम ऐं ह्रीं श्रीं हां हूं हें हौं हः।
महाबला पराक्रमाय भूत-प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी।।
यक्षिणी, पूतना, मारी, महामारी, यक्ष, राक्षस।
भैरव, ग्रह, बेताल, राक्षसादिकम्।।
हन भैजय भैजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय।
महामारेश्वर रूद्रावतार हूं फट् स्वाहा।।

रक्षा मंत्र

भूत-प्रेत, पिशाच, डाकण का सामना करने के पूर्व तथा श्मशान-साधना करने के पहले शरीर की रक्षा चौकी बहुत ही आवश्यक है, अन्यथा साधक कई बार बड़ी विपत्ति में फंस जाता है।

रक्षा मंत्र यह है—

झरझर बहे कपाल फटे, नाथ का बुंदा पांव।
पड़े, गोरख राज सत्य, कहे, तिरिया का।।
रूप वही धरे, शब्द सांचा पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

धन-लाभ-प्राप्ति का मंत्र

अगर रुपयों की आवक में रुकावट होती हो, तो निम्न मंत्र का प्रतिदिन 1108 जप 41 दिन तक लगातार करें। लक्ष्मी प्रसन्न होकर धन देंगी।

मंत्र इस प्रकार है—

"ॐ नमो कुबेर देव मम् साधना सफल करोति।।"

मुकदमा जीतने का मंत्र

"ॐ नीली-नीली, महानीली (प्रतिपक्षी का नाम) जीभि तालू सर्व खिली, सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा।"

इस मंत्र को सिद्ध करके, विवाद के समय 31 बार मन में बोलें, तो जीतकर आवें।

व्यापार-वृद्धि का मंत्र

शुक्ल पक्ष की रात्रि को एकांत में बैठकर 21 हजार मंत्र जपें। दुकान खोलते व बन्द करते समय निम्न मंत्र के 54 बार जाप करें, तो व्यापार बढ़ेगा।

"श्री शुक्ले महाशुक्ले, कमल दल निवासे श्री महालक्ष्म्यै नमो नमः। लक्ष्मी-माई, सत्य की सवाई, आवो माई करो भलाई न करो तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खावोगी तो नौ नाथ चौरासी की दुहाई।"

चुड़ैल, प्रेतिनी निवारक मंत्र

बैर बैर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी।
कहूं तुझे सुनु सर्वनामी मेरी मांसी।।
वर बेल करे तू कितना गुमान।
काहे नहीं छोड़ती यह जन स्थान।।
जो चाहे तू देखना आपन मान।
पल में भाग कैलाश लै अपनो सान।।

चुड़ैल, प्रेतिनी-डाकीनी द्वारा कष्ट से पीड़ित व्यक्तियों के कष्ट को दूर करने के लिए इस मंत्र को सिद्ध कर प्रयोग करने पर लाभ होता है।

भण्डार भरा रहे

निम्नलिखित मंत्र जप कर माता अन्नपूर्णा को भोग लगाएं। फिर एक भाग कुएं में डालकर, एक लौटा जल भर लाएं। तत्पश्चात् चौमुखा दीप जलाकर भण्डार में अन्नपूर्णा का पूजन करें और 1108 बार निम्न मंत्र का जप करें। इससे भण्डार सदा भरा ही रहेगा।

ओम नमो आदेश श्री गुरु को।
गजानन बीर बसे मसान अवदो।।
ऋषि को वदान जो जो' मांगू।
सौ सौ आन पांच लड्डू।।
सिर सिंदूर हाटा बाटका।

मटी मसान को सब ऋषि-सिद्धि।।
हमारे पास पठे व शब्द।
फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।।

शत्रुओं के शमन हेतु

मंत्र इस प्रकार है—

हनुमान पहलवान, बारह बरस का ज्वान।
मुख में बीड़ा, हाथ में कमान।।
लोहे का द्वार, वज्र का कीला।
जहं बैठे, हनुमान हठीला।।
बाल राखों, सीस राखो।
आगे जोगिनी राखो।
जो कोई छल करे।।
तिनकी बुद्धि-मति बांधो।
दोहाई हनुमान वीर की।।
शब्द सांचा पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।।

अपने उन्नति के मार्ग को निष्कण्टक बनाने के लिए यह आवश्यक है, कि जीवन में आने वाले सभी शत्रुओं से रक्षा हो और वे सिर न उठा सकें। कुमकुम से कागज पर त्रिभुज बनाकर उसके तीनों सिरों पर 'ह्रों' लिखें। फिर उपरोक्त मंत्र का पांच दिन तक जप करें।

सर्वकार्य सिद्धि हेतु

हो सकता है, कि आपके अनेक प्रयत्न करने पर भी आपको किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो और प्रत्येक बार लक्ष्य के समीप जाकर भी आप पुनः उसी स्थान पर वापस आ जाते हैं, तब आप निम्न मंत्र का जाप मूंगे की माला से शुक्ल पक्ष के मंगलवार को करें। यह 7 मंगलवार नियमित करें।

मंत्र इस प्रकार है—

हनुमन्ता-गुणवन्ता, कुंडली, कपाट से कमान। बैठे बांध। श्मशान का

घाट। जल बांध, थल बांध, फिरती दुनियां बांध, आक्या बीर बांध। बावन वीर बांध, बावन भेस का बांध। कौन बांधी, हनुमान वीर बांधी। ना बांधी, तो सीताराम की आन। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

निम्न यंत्र को दातून की कुंची से खेत के पत्थर पर लिखें और उस पर रोगी को बैठाकर स्नान कराएं। दांत का दर्द दूर हो जाएगा।

अधिक अन्न उपज के लिए यंत्र

इस यंत्र को रविवार के दिन अष्टगंध से अखण्डित भोजपत्र पर लिखकर जंगल में गाड़ दें तथा कुलदेवता की पूजा करें, तो उस खेत से अधिक अन्न की उपज प्राप्त होगी।

25	75	8	13
7	3	84	23
81	26	6	1
4	17	16	80

घर से भागे व्यक्ति की वापिसी के लिए यंत्र

इस यंत्र को अपने हाथ की मध्य उंगली से रेतीली भूमि पर लिखकर गंगाजल से छींटा मारें तो घर से भागा हुआ व्यक्ति घर वापिस लौट आता है।

62	66	2	8
6	3	66	65
68	63	8	1
4	5	54	67

नजर से रक्षा के लिए यंत्र

ॐ

72	81	33	42
68	82	6	11
25	37	46	50
45	27	6	1

ॐ ॐ

ॐ

उपरोक्त यंत्र को तांबे के पत्र पर लिखकर कण्ठ में पहना दें। बुरी नजर से रक्षा होगी और आरोग्य रहेगा। शत्रु की शक्ति-नाश के लिए इस यंत्र को मंगलवार के दिन जंगली धतूरे के रस से लिखकर अपने कण्ठ में धारण करने से शत्रु का बल नष्ट होता है।

सम्मान-प्राप्ति के लिए यंत्र

श्री

40	50	2	7
6	3	47	43
46	41	8	1
4	6	42	48

श्री श्री

श्री

इस यंत्र को देशी कपूर और कस्तूरी से अनार की कलम से शुभ समय में भोजपत्र पर लिखकर पास में रखें तो कहीं भी जाने पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

विद्या-बुद्धि के लिए यंत्र

8	11	12	13
13	2	7	6
11	16	8	14
10	5	4	5

इस यंत्र को चौथे घर से प्रारम्भ करके नित्य 108 दिन तक असगन्ध से अखण्डित भोजपत्र पर लिखने से विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है।

आधा सिरदर्द निवारक यंत्र

38	46	26	71
3	8	4	7
1	8	2	3
11	7	20	68

इस यंत्र को रविवार के दिन लिखकर आधा सिरदर्द वाले रोगी के कण्ठ में बांधने से दर्द से मुक्ति मिलती है।

दांतदर्द निवारक यंत्र

65	72	2	7
6	3	69	68
71	66	8	1
4	5	67	70

मिर्गी के लिए

मिर्गी एक असाध्य रोग है, जिसके रोगी को किसी भी समय, दौरे पड़ सकते हैं। ऐसे में उसकी चेतना आंशिक रूप से लुप्त हो जाती है तथा शरीर कांपने लगता है। यह एक स्नायु रोग है, जिसकी जड़ें मस्तिष्क के तन्तुओं से जुड़ी होती हैं, इस रोग के निवारण अगर यदि निम्न मंत्र को जपा जाए, तो सफलता मिलती है।

यह एक शाबर मंत्र है, जिसका प्रभाव शीघ्र होता है। इस प्रकार यह प्रयोग 31 दिन तक करें।

मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ हलाहल सरगत मंडिया। पुरिया श्री राम फूंके।
मिर्गी, बोई सूखे, सुख होई। ॐ ठः ठः ठः स्वाहा।।

स्त्री-रोगों के लिए

प्रायः स्त्रियां कई प्रकार के गुप्त रोगों से पीड़ित रहती हैं या गर्भ सम्बंधी कई दोषों से ग्रस्त रहती हैं, और संकोच के कारण चिकित्सा से वंचित रह जाती हैं, फलतः कई प्रकार की जटिल शरीरिक व्याधियां हो जाती हैं। इनका शाबर मंत्रों के माध्यम से भी इलाज किया जा सकता है।

रोग की निवृत्ति के लिए यह प्रयोग शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को प्रारम्भ

करें। यह 21 शुक्रवार का प्रयोग है, जो शुक्रवार को ही सम्पन्न करना चाहिए। इसके लिए रोगी स्त्री अपने मस्तक पर कामिया सिन्दूर से तिलक करे, रोग निवृत्ति की प्रार्थना करे, फिर एक पात्र में अदरक का एक टुकड़ा रखकर निम्न मंत्र की 7 माला 21 दिन तक जपें।

नित्य मंत्र जप के पश्चात् उस अदरक के टुकड़े को घर से बाहर अपने ऊपर से उतार कर कहीं फेंक दे। रोज नया अदरक का टुकड़ा प्रयोग में लें। भविष्य में कोई तकलीफ होने पर एक अदरक का टुकड़ा हाथ में लेकर उपरोक्त मंत्र का बिना माला के 31 बार उच्चारण कर लें और अदरक को घर से बाहर फेंद दें, पीड़ा समाप्त होगी।

मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी जहां बसे इस्माईल जोगी। जल बांधूं, जलवाई बांधूं, बांध दूं जल से तीर। पांचों दूत कलुवा बांधूं, बाधूं हनुमन्त वीर। सहदेव की अनुवा, अर्जुन का बाण। रावण रण को थाम ले, नहीं तो वीर हनुमन्त की आण। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा।।

श्री लक्ष्मी शाबर मंत्र

यह शाबर मंत्र भगवती महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने का मंत्र है। आप इसे सिद्ध करके अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं। मंत्र सिद्ध का प्रावधान अन्य मंत्रों जैसा ही है, परन्तु मुख्य रूप से जिस दिन शुक्ल पक्ष का गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन साधना करने से विशेष फलदायक होता है। एकांत कक्ष में बैठकर स्फटिक की माला से मंत्र का जाप 1108 बार करें। यह कार्य 41 दिन तक करने पर मंत्र सिद्ध हो जाता है। नित्य पूजा कर 21 बार मंत्र का जाप सफलता प्रदान करता है।

मंत्र इस प्रकार है—

राम-राम क्या करें, चीनी मेरा नाम।
सर्व नगरी बस में करूं, मोहूं सारा ग्राम।
राजा की बकरी करूं, नगरी करूं बिलाई।
नीचा में ऊंचा करूं सिद्ध गोरखनाथ की दुहाई।

आजीविका-प्राप्ति मंत्र

प्राप्तःकाल पवित्र होकर, धुले वस्त्र पहनकर साधक को आसन पर बैठना चाहिए। मुंह पूर्व की ओर करके अपने इष्ट का ध्यान करें और उपरोक्त मंत्र का 108 बार जाप करें। यह क्रिया 31 दिन तक करें।

मंत्र इस प्रकार है—

काली कंकाली महाकाली मरे सुंदर जिये काली।
चार वीर भैरू चौरासी तब तो पूजूं पान, मिठाई।
अब बोलो काली मां की दुहाई।।

अभिचार कर्म शमन हेतु

निम्न मंत्र की साधना से साधक सिद्ध होकर भूत-प्रेत, डाकिनी, शकिनी द्वारा प्रदत कष्ट को दूर करने में सक्षम होता है। मंत्र की साधना श्मशान भूमि में जलते शव के पास बैठकर 41 दिन तक 1108 बार मंत्र का जाप करने से सिद्ध होती है। मंत्र जाप के पूर्व मांस-मदिरा का नैवेद्य अर्पित करना पड़ता है। हवन भी इन्हीं से की जाती है।

मंत्र इस प्रकार है—

ऊगते तारे,भये मुनसारे जहां अघोरी, आन विराजे।
लकड़ी जरै, मुरदा चिल्लाय, तहां अघोरी, वीर किरकिराय।।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति देख देख रे अघोरी तेरे मंत्र की दुहाई।।

टोना-टोटका निवारण हेतु

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोग दूसरों पर अभिचार प्रयोग कर देते हैं। संबंधित व्यक्ति तब असामान्य होकर कष्ट भोगता है। उसे रोग एवं जड़ता जैसी व्याधियां घेर लेती हैं। इस प्रकार के कष्टों का निवारण जादू-टोना निवारक मंत्र से सम्भव है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो श्री राम उठ उठ धनुष चढ़ाव। धनुष चढ़ाव मृगा मार मृगा मार ॐ ठः ठः स्वाहाः।।

रामबाण सुरक्षा कवच

निम्नलिखित मंत्र किसी भी रविवार, मंगलवार को एक सौ आठ बार जप लेने से सिद्ध हो जाता है। शरीर रक्षा की आवश्यकता पड़ने पर इस मंत्र को 21 बार जप कर हथेली पर फूंक मारने, फिर उसे शरीर के ऊपर फिराने से यह मंत्र कवच का कार्य करता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो आदेश गुरु को बाल में कपाल कपाल में भेजा भेजा में कीड़ा कीड़ा में कर्णपीड़ा सोने की सलाका रुपे का हथौड़ा ईश्वर गढै गौर्जा तोड़े शब्द सांचापिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

भूत-प्रेत बाधा निवारक मंत्र

मंत्र में साधक को चाहिए कि कार्तिक मास में जो दीपावली का पर्व पड़ता है उसी दिन शुद्ध पवित्र होकर किसी एकांत कक्ष या स्थान में उपरोक्त मंत्र का 108 बार जाप करे, फिर 21 बार लोहबान की आहुति दे।

मंत्र इस प्रकार है—

बैर बैर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी।
कहूं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी मांसी।
वर बेल करे तूं कितना गुमान।
काहे नहीं छोड़ती यह जन स्थान।
जो चाहे तू देखना आपन मान।।
पल में भाग कैलाश लै अपनी सान।।
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।।

अथवा

ॐ नमो आदेश गुरु को बांधो आचर बांधो तारा बांधो रक्त बुंद की धारा ऊपर बांधो कामसेन तले बांधों हनुमंत पांचों पण्डों साख दे 'अमुक' की काया बंधे हनुमंत गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

गड़ा धन-प्राप्ति हेतु

गेहूं व तिल का चूर्ण बनाकर और शुद्ध घी में गूंथ कर जिस स्थान पर हवन करें, वहां किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता। जहां धन गड़ा होने की सम्भावना हो, वहां एक हांडी में गेहूं भरकर गाड़ दें। आठ दिनों के बाद जमीन खोदकर हांडी निकालें। अब अगर हांडी में गेहूं होगा, तो वहां जमीन में धन भी अवश्य ही गड़ा होगा, अथवा हांडी खोदते समय कमल के पुष्प जैसी गंधी आए, तो निश्चित रूप से वहां धन गड़ा होगा।

शरद पूर्णिमा को स्वयं मृत्यु को प्राप्त हुए कस्तूरीयुक्त हिरण (मृग) के चर्म पर आसन जमाकर प्राण-प्रतिष्ठित मूंगे की माला से 1108 बार निम्न मंत्र जपें तथा आहुति करें तो जहां धन गड़ा होगा, हाथ वहीं जाकर ठहर जाएगा।

ॐ नमः एवति।
सुमेरू रूपाय सहाकालय।
कंकाल रूपाय फट् स्वाहा।

वशीकरण

"ॐ नमो आदेश गुरु कूं, पीर में नाथ, प्रीत में माथ, जिसे खिलाऊं, वह मेरे साथ, शब्द साचा, पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

मंगलवार को एक सुपारी इस मंत्र से अभिमंत्रित करके 54 बार गंगाजल से, 21 बार गऊ के दूध से मंत्र बोलते हुए स्वच्छ करे, धूप गुग्गुल की धुनी देवें और अभिलक्षित स्त्री को सुपारी खिला दें, वह वश में रहेगी।

विद्वेषण हेतु

हवनकुण्ड को श्मशान की आग से प्रज्वलित करें। खेजड़ी व खैर की लकड़ी, नीम के पत्ते व कड़वा तेल, तिल, जौ, परमल चावल—इन सबको मिलाकर 10,000 आहुति दें। हवन मंगलवार को ही करें। जिस दिन भी हवन करेंगे, दूसरे दिन अभीष्ट व्यक्ति का विद्वेषण हो जायेगा।

मंत्र इस प्रकार है—

आम नमो माणकाय योगिनी संस्थायः।
शाकिनी कल्प वृक्षाय चौसठ योगिनी।

संधि रूद्रकालदठेन साध्य साध्य।
मारन मारच अपि रहस्य रहस्य।
शाकिनी नश्य बारात उग्रंगा उग्रंगा।
ॐ हिं हीं हीं हीं हीं हुर स्वाहा।

प्रेतात्मा भस्म करने हेतु

मंत्र इस प्रकार है—

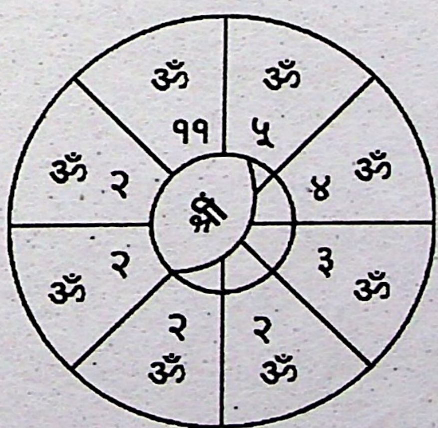
ओम नमो हनुमंताय
महाबलाय
पराक्रमाय
अस्मद्
कुल शाकिनी
नाश कुरु-कुरु।
उशासाख प्रज्वलाय स्वाहा।

जौ के आटे का एक पुतला बनाकर उपरोक्त मंत्र को 31 बार पढ़कर रूई की एक बत्ती बनाएं और उसे पुतले के मुख पर रखकर जला दें। इस प्रक्रिया से प्रेतात्मा भस्म हो जाएगी।

झाड़े का मंत्र

निम्न यंत्र बनाकर पहना दें—

यंत्र



मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ऐं श्री ह्रां ह्रीं स्फे ख्फे ह्सौ ह्र सख्फे ह्र सौ ॐ नमो हनुमते महाबल पराक्रम मम परस्य च भूत-प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, यक्षिणी, पूतना, मारी, महामारी, कृत्य, यक्षराक्षस, भैरव, बैताल, ग्रह, ब्रह्म, ग्रह, ब्रह्मराक्षस, दिक्जात क्रूर बधान क्षणेत हन हन जूम्भय निरासय मारय-मारय बंधय नुद-नुद सुद-सुद धुन-धुन मोचय-मोचय मामेन च रक्षा महामाहेश्वर रूद्रावतार हां हां हां हूं हूं हूं हुं हुं हुं घे घे घे हूं फट् स्वाहा।

हनुमान जी का स्मरण करते हुए बाधाग्रस्त रोगी पर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए सरसों के दानों के कटे हुए निम्न मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। रोगी तुरन्त ठीक हो जाएगा।

सुख-शान्ति हेतु

घर की थोड़ी मिट्टी पर यह मंत्र 54 बार पढ़कर घर में छिड़क दें।

मंत्र इस प्रकार है—

"रहमकुन अए इलाही पाक वारीइस घर के ऊपर अपने फजल से कर तु रहमत जारी। जैसी रहमत की थी तू ने खलील पर, वैसी रहमत कर तू ऐ पर्वतदगार। बहके हकला एलाहा इल्लल्लाहा महम्मदुर रसूल्लाह।"

अधरंग होने पर

किसी भी रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र के समय काले घोड़े की नाल लाकर उसकी अंगूठी बनवाकर रोगी को पहना देने से उसे लकवे का प्रकोप न होगा। सावधानी रखें, आजकल कुछ लोग सड़कों, राजमार्गों पर काले घोड़े लेकर खड़े होते हैं। यह इनका कमाई का माध्यम है। यह वास्तव में रंगे घोड़े होते हैं। इनसे बचें।

रोगनाशक मंत्र

व्यक्ति को जन्म से लेकर सम्पूर्ण जीवन तक विभिन्न प्रकार के रोगों से जूझना पड़ता है। आघात, संकट तथा आपदाओं से वह प्रभावित होता है। कभी-कभार अदृश्य शक्तियां भी परेशान करती हैं। यह मंत्र तांत्रिक मंत्र है, परन्तु शाबर मंत्रों

में भी इसका उल्लेख किया गया है। ऐसे व्यक्ति जो रोग, बीमारी, अभिशाप एवं दुर्भाग्य से कष्टप्रद स्थितियां भोग रहे हैं उनके लिए यह मंत्र बहुत लाभकारी है। इस मंत्र की साधना करने वाले व्यक्ति को मंगलवार के दिन स्नान करके, शुद्ध वस्त्र धारण करके सूर्योदय से पूर्व रेंडी एवं अर्क की जड़ खोदकर प्राप्त करना होता है। जड़ को घर ले आयें और गंगाजल से धोकर मिट्टी साफ कर लें। तत्पश्चात् उसे लाल वस्त्र पर रखकर उस पर सिंदूर चढ़ाएं और फिर धूप, दीप दिखाकर लोहबान से धुआं करें। इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्र का 54 बार जाप करके जड़ों पर जल छिड़कें। तदुपरान्त दोनों जड़ों को इक्कीस-इक्कीस बार मंत्र से अभिमंत्रित करके संकटग्रस्त व्यक्ति को दिखाएं। यह ध्यान रखें कि यह व्यक्ति इनका स्पर्श न करें, केवल आंखों से देखें और आप स्वयं जड़ों को बाएं हाथ में रखकर दिखाएं।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो किष्किंधा पर्वत पर कदली वन को फल दंड तले कुजै देवी तु प्रशाद अगल पावली पारी सादा ठुंठी चोर तेरे कुंजन को देवी नई आज्ञा फिरै।।

शाबर मंत्रों को प्रयोग से पूर्व उपरोक्त वर्णित सभी मंत्रों की सिद्धि परम आवश्यक है। इनको सिद्ध करने के बाद ही अभीष्ट की प्राप्ति के लिए शाबर मंत्र चुनें और उनकी साधना करें। यह शाबर मंत्र विभिन्न प्रकार के संकटों में व्यक्ति की रक्षा करता है। मंत्र साधक इसे सिद्ध करके स्वयं तो अपनी रक्षा कर ही सकते हैं, दूसरों का भी कल्याण कर सकते हैं।

सिरदर्द होने पर

सिरदर्द एक ऐसा रोग है, जो व्यक्ति को इतना परेशान कर देता है कि वह कार्य सम्पन्न करने की इच्छा रखते हुए भी कार्य सम्पूर्ण नहीं कर पाता है और स्वास्थ्य की दृष्टि से इस ओर ध्यान न देने पर इसके गम्भीर परिणाम भी भुगतने पड़ सकते हैं। अगर सिरदर्द आपका स्थायी रूप से बन गया है तो इस पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए आप निम्न मंत्र का 18 बार उच्चारण करें—

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय शाकिनी, डाकिनी, विर्ध्वसनाय, किल किल वाम करेण निषणनायु हनुमत देवाये, ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं हां स्वाहा।

सर्व बाधा शमन हेतु

जो व्यक्ति निरन्तर सफलता की ओर अग्रसर होते रहते हैं, उनके मार्ग में यदि अवरोध उपस्थित होने लगे, तो उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होने लग जाती है। कई बार बाधाओं के कारण इतना अधिक व्यथित हो जाते हैं कि वे कार्य करना चाहते हैं, वह उससे विमुख हो जाता है। अगर आप भी कार्य को सम्पूर्णता प्रदान करना चाहते हैं और आपके कार्य में भी निरन्तर बाधाएं उपस्थित हो रही हैं, तो आप निम्न प्रयोग को सम्पन्न करें। निम्न मंत्र का जप 21 दिन तक 31 बार नित्य करें।

मंत्र इस प्रकार है—

ओम ह्री श्री कलिकुण्ड।
दण्ड स्वामिन आगच्छ।।
आगच्छ आत्म मंत्रान।
रक्ष रक्ष पर मंत्रान।
छिन्द छिन्द्र मम सर्व।
समीहित कुरु-कुरु हुं फट् स्वाहा।।

लोकप्रियता हेतु

जो व्यक्ति जीवन में सफल होना चाहते हैं, उनके लिए आकर्षक व्यक्तित्व होना प्रमुख गुण होता है। केवल आकर्षक व्यक्तित्व ही नहीं ऐसा सम्मोहक स्वभाव भी, जिसके कारण सबकी नजरें आपकी ओर स्ततः ही स्थिर हो जाएं। अगर ऐसा व्यक्तित्व आप भी प्राप्त करना चाहते हैं, तो आप इस प्रयोग को सम्पन्न करें। एक माह तक नियमित निम्न मंत्र का जाप करें—

हल्दी बाण बाण की लिया हाथ उठाये।
हल्दी बाण से नीलगिरी पहाड़ थर्राये।।
यह सब देख बोतल वीर हनुमान।
डाइनयोगिनी भूत-प्रेत मुंह काटोतान।।

शत्रु से रक्षा हेतु

यह प्रयोग उन लोगों के लिए है जिनका कि व्यापार हो और उनके लिए

यह सम्भव न हो, कि वे प्रत्येक स्थान की देखभाल स्वयं करें। जिन्हें प्रतिक्षण यह आशंका रहती है, कि कहीं उनका व्यापार धोखे का ग्रास न बन जाए। उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिए।

इस साधना की मूलभूत साधना सामग्री केवल रूद्राक्ष माला है। साधक मंगलवार की रात्रि में लाल आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे और निम्न मंत्र का जप करे—

।। एक बाग जिया का एक बगैचा गोरख का, एक बाग जोगन का, एक बगैचा गोरख का, चार बगीचा दुई के ऊपर, चार बगैचा गौरख ऊपर, एक बाग मेरे वीर पहलवान का।।

सभी कार्यों के लिए बीज मंत्र

वश में करने के लिए	—हलीं
कर्जदार को अपने अधीन बनाने के लिए	—भूं
विरोधी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने के लिए	—भ्रां
सचिव या मंत्री को अपने अनुकूल बनाने के लिए	—टं
किसी को भी पूर्णतः वश में करने के लिए	—छ सौं
अधिकारी को वश में करने के लिए	—ऐं
मालिक को अनुकूल बनाने के लिए	—श्रीं
नौकर या मुनीम को वश में करने के लिए	—श्रं
पत्नी को अनुकूल बनाने के लिए	—ह्रीं
पुत्र या पुत्री को अनुकूल बनाने के लिए	—प्रीं
प्रेमी को वश में करने के लिए	—कलीं
प्रेमिका को वश में करने के लिए	—श्रं
पति को पूर्णतः वश में करने के लिए	—ब्लीं
मकान मालिक को वश में करने के लिए	—श्रौं
मकान खाली कराने के लिए किराएदार को वश में करने के लिए	—द्रुं
पड़ौसी को वश में करने के लिए	—घ्रां
व्यापारी को वश में करने के लिए	—क्रौं
अनदेखे व्यक्ति को वश में करने के लिए	—ग्लौं
किसी भी स्त्री को अपने अनुकूल बनाने के लिए	—श्रौं

किसी भी पुरुष को अपने अनुकूल बनाने के लिए	—ह्रों
मजदूरों पर वशीकरण प्रयोग करने के लिए	—खं
शत्रु को अपना गुलाम बनाने के लिए	—च्लूं
मुकदमे में सफलता हेतु विपरीत पार्टी को वश में करने के लिए	—क्रीं

सामूहिक आकर्षण हेतु

जीवन में समस्याएं तो आती ही रहती हैं, पर जो इन विपरीत परिस्थितियों में भी विचल भाव से खड़ा रहे और उसके उत्साह, उमंग और उल्लास में कमी न आये, ऐसा व्यक्तित्व अगर आपका हो, तो क्यों न सभी की नजरें आपकी ओर होंगी। अगर आप भी ऐसा व्यक्तित्व प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस प्रयोग को सम्पन्न करिये, फिर देखिये सबकी नजरें आपकी ओर होंगी।

रविवार को भोजपत्र के ऊपर कामिया सिन्दूर से अपना नाम लिखें तथा उसे अपने दाहिने हाथ में लेकर अपलक देखते हुए निम्न मंत्र का सस्वर उच्चारण करें—

ॐ रं चक्रं जाग्रय स्फोटय ॐ फट्।।

घबराहट होने पर

घबराहट किसी प्रकार का शारीरिक रोग नहीं है, अपितु यह एक मानसिक अवस्था है, जिसमें व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से मिलने में स्वयं को असहज अनुभव करता है, किसी अनजान स्थान पर या नये कार्य को करते समय स्वयं को बेचैन अनुभव करता है और धीरे-धीरे वह एकान्तवासी होता हुआ एक ऐसी अवस्था में पहुंच जाता है, जब वह सक्षम होते हुए भी किसी कार्य को करने में असक्षम होता है। आप इस न्यूनता को समाप्त करने के लिए यह मंत्रात्मक प्रयोग अपनाइये। सोमवार के दिन सफेद वस्त्र में शुद्ध केसर से स्वास्तिक बनाकर बांध दें, फिर उसके समक्ष नित्य निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ हां हीं हु हुं है है को हैः ज सि आ उ ता सम्वन्ज्ञानदशन पारित्रेभ्यो हीं नमः।।

सफलता हेतु

कहीं आप यह सोचकर तो अपना मार्ग बदलने नहीं जा रहे हैं, कि अब

मैं इस मार्ग पर चलकर सफल नहीं बन पाऊंगा, जीविकोपार्जन नहीं कर पाऊंगा, इसलिए अब मुझे रास्ता बदल देना चाहिए। जीवन का अर्थ है, संघर्ष। हम जूझ कर, विरोधों के मध्य सफलता प्राप्त करें और उच्च बनें। जिन कारणों से आपको मार्ग बदलना पड़ रहा है, तो उन कारणों को समाप्त करने का उपाय शीघ्र ही कर लीजिए। मंगलवार के दिन 31 बार निम्न मंत्र का जप कर लें—

ॐ क्रां क्रीं हां ह्रीं
उसभमजिय च वंदे
संभवपभिनंदणं च
सुमई च पाउमप्यहं
सुपांस जिर्ण च
चंदप्पहं वंदे स्वाहा।।

स्वयं को जानें

आपके भीतर अनेक प्रकार की क्षमताएं हैं, लेकिन उनके विषय में अनभिज्ञ होने पर आप स्वयं के विषय में स्वयं की योग्यताओं को जान ही नहीं पाते और वे क्षमताएं अस्पष्ट प्रतीत होती हैं। लेकिन आप अपनी समस्त क्षमताएं, योग्यताएं उजागर कर सकते हैं, इस प्रयोग के माध्यम से आप केवल निम्न मंत्र का जप करें—

ॐ श्रीं ह्रीं क्रौं ऐं।

श्री पृथ्वी देवी का मंत्र

धरती की कृपा भी जीवन को सुख-शान्तिमय बनाने में बहुत आवश्यक होती है। एक लाख की संख्या में निम्न मंत्र को जपने से इसकी सिद्धि अवश्य प्राप्त हो जाती है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरिणिधरे धरे स्वाहा।

स्वप्न-सिद्धि मंत्र

वैसे तो साधना के समय इस मंत्र को नियमित जपना चाहिए, परन्तु विशेष रात्रि में शैया पर लेटे-लेटे निद्रा गमन के पूर्व ही इसको 1001 बार जपकर सोना चाहिए। लगातार 12 दिनों तक ऐसा जप करने से देवी जी स्वप्न में साधक को वांछित सूचनाएं दे देती हैं।

स्वप्न सिद्धि के लिए इस मंत्र को रात्रि में जपना चाहिए। एक लाख जप होने पर मंत्र प्रभावशाली होता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ श्री स्वप्नेश्वरी कार्य में वद-वद स्वाहा।

सुरक्षा के लिए

ॐ त्रया देवाअएकादश त्रयस्त्रि शाः सुराधसः। बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सक्तिुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।।

जीवन में अभ्युत्थान के लिए

ॐ उपावीरस्युपदेवान्दै वीर्विशः प्रागुरुशिजोर्बाह्रामान्। देव स्वष्टर्वसु रम रम हव्याते स्वदन्ताम्।।

सब प्रकार के मंगल के लिए

ॐ शं नः सत्यस्य पतयों भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं नः ऋभवः सुकृतः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।

क्रोध-शान्ति हेतु

क्रोध आना स्वाभाविक है, लेकिन अगर क्रोध बढ़ने लगे, प्रत्येक उचित-अनुचित बात पर क्रोध चरम सीमा पर पहुंच जाये, तो यह पूर्णतया गलत है। क्योंकि क्रोध की अधिकता आपको अनेक सुअवसरों से वंचित कर देती है। अगर आप चाहते हुए भी क्रोध को संयमित नहीं कर पाते और खुद का ही अनिष्ट कर बैठते हैं, तो शीघ्र ही इस प्रयोग के माध्यम से उसे नियंत्रित करिये। क्रोध शमन हेतु निम्न मंत्र का 31 बार उच्चारण करें—

ॐ ह्रीं ऐं ॐ जी जीं।
गीं गीं चन्देसु निम्ममलयरा।
आइच्वेसु अहिंय पयासुयरा।
सागरवरगंभीरा सिंहा।
सिद्धि मम्र दिसन्तु।
मनोवांछित पूरय पूरय स्वाहा।

अब आवश्यक और बेतरह इनकी मांग होने के कारण गायत्री मंत्रों को प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा है पाठक लाभ उठाऐंगे।

सभी मंत्रों में मंत्रराज गायत्री मंत्र प्रमुख हैं। जहां किसी मंत्र का उल्लेख न हो, वहां गायत्री का प्रयोग कर सकते हैं। अगर किसी कार्य के लिए कोई निश्चित मंत्र हो और वह याद न आये तो उसके स्थान पर भी गायत्री मंत्र पूर्ण रूप से फलदायी होता है। कैसी भी तान्त्रिक-मान्त्रिक क्रिया हो; उसका प्रयोग किसी भी उद्देश्य से किया जाता हो, केवल गायत्री मंत्र के द्वारा ही उसे सम्पन्न कर सकते हैं। यह मंत्र सन्ध्या में तो मुख्य रूप से प्रयुक्त होता ही है, जप, हवनादि में भी इसका मुख्य रूप से योगदान रहता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही धियो यो नः प्रचोदयात्।

यदि आप किसी देवता विशेष के अनुयायी हैं तो उस देवता विशेष से सम्बन्धित गायत्री मन्त्रों का उल्लेख भी आवश्यक होने के कारण किया जाता है—

गणेश गायत्री

ॐ एक दंष्ट्राय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात्।

ब्रह्म गायत्री

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसारूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात।

विष्णु गायत्री

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

रुद्र गायत्री

ॐ पंचवक्त्राय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

नृसिंह गायत्री

ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि तन्नो, नृसिंह प्रचोदयात्।

वरुण गायत्री

ॐ जलबिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात्।

यम गायत्री

ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात्।

राम गायत्री

ॐ दाशरथये विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।

कृष्ण गायत्री

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।

लक्ष्मी गायत्री

ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे विष्णुप्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

सरस्वती गायत्री

ॐ सरस्वत्यै विद्महे ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

दुर्गा गायत्री

ॐ दुर्गा देव्यै विद्महे शक्तिरूपाय धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

सीता गायत्री

ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे भूमिजायै धीमहि तन्नो सीता प्रचोदयात्।

राधा गायत्री

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात्।

इन्द्र गायत्री

ॐ सहस्त्रनेत्राय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

तुलसी गायत्री

ॐ श्री तुलस्यै विद्महे विष्णुप्रियायै धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

❑❑❑

6

अघोर पंथ में बिन्दु साधना

इस संसार में कोई अपने तन को आभूषणों से सजाता है, कहीं-कहीं आभूषण स्वयं किसी के तन के सौन्दर्य से खिल-खिल जाते हैं। किसी पर श्रृंगार आरोपित-सा लगता है, तो किसी पर श्रृंगार उसके तन पर एक छटा बिखरने लगने लग जाता है, किसी के तो बस पांव यूं ही कभी नृत्य में थिरक उठते हैं, तो किसी की सारी पुष्ट देहयष्टि हर पल कोमल प्यार की भावना लेकर थिरकती रहती है....और भैरवी की सरस देह पर आभूषण और श्रृंगार बस ऐसे की लग रहे थे।

यौवन का भार था कि कटाक्षों का! कि सम्पूर्ण देह किसी थिरकन को मूल ध्वनि से सुनाती जा रही थी। यह तो पता नहीं कितनी ही देर तक मूक बन निहारता रह जाता कि किस अज्ञात बिन्दु से निःसृत हो रही है यह मांसल स्वर लहरी, कि अचानक मेरी मोहनिद्रा उसी मादक स्वर से टूटी जिसे सुन मैं एक शराबी की ही तरह मस्त हो गया था।

कांच की कोमल चूड़ियां की रुनझुन से भी अधिक खनकता हुआ स्वर सहसा मेरे कानों में आकर टकराया और मेरे भीतर के तारों को दूर तक झंकृत कर गया। कोहनी तक अनेक रंगों की चूड़ियों और चांदी के नक्काशीदार कड़ों से भरा वह हाथ अपनी कोमल उंगलियों को इस तरह से लोंच देकर पड़ा था....ज्यों नृत्य की मुद्रा लेकर आ गया हो। मैंने चौंक कर सिर उठाया तो पाया कोई दिल चुरा लेने वाला सौन्दर्य अपनी पूरी मादकता के साथ मेरे सामने खड़ा है।

वह आंखें सौन्दर्य के नशे से दबी-दबी थीं अथवा बिना अवरोध उफनते यौवन के बोझ से, यह तो पता नहीं, किन्तु नेत्रों के संकुचन की कमी को दो रससिक्त होंठ, अधखुले पूरा करने को बेचेन थे, जिनके खिले हुए सांवले रंग में आ मिली गुलाबी छटा उन्हें किसी मदिरा से कम मादक नहीं बनाने के लिए

उतावली होती जा रही थी....ज्यों कोई मदिरा अपनी सहज लालिमा में श्यामलता भी घोल बैठी हो! जो वाणी ऐसे अधरों का स्पर्श लेकर आयी हो फिर उसमें भी मादकता होती ही क्यों न?

बात यह है कि मैं तंत्र भैरवी को पाकर बेतरह बैचेन था। मैं उसके समीप रहकर अधिक से अधिक पाना चाहता था। आज एक बार फिर मुझे अवसर मिल गया था। मैं इस अवसर को खोना नहीं चाहता था। तंत्र भैरवी के सामने आते ही मैंने अपना प्रश्न....यह तांत्रिक बिन्दु क्या है? और इसकी साधना कैसे सम्भव है?

तंत्र भैरवी पहले तो मुस्कुरायी फिर अपनी घनी केश राशि पर हाथ फिराते हुए गम्भीर स्वर में बोली—बिन्दु साधना के मुख्य चार चरण हैं—बिन्दु प्रतिष्ठा, बिन्दु शोधन, बिन्दु क्षोभ और बिन्दु ऊर्ध्वगमन। साधारण साधक का बिन्दु मलिन होता है, अतः प्रकृति के नियमोनुसार संभोग काल में वह क्षुब्ध होकर, अधोगति को प्राप्त होता है—इसी का नाम "च्यूति" है, जिसका पहला परिणाम है—कामज सृष्टि और तदन्तर मृत्यु।

मानव का चित्त एक अति रहस्यमय सूक्ष्म वस्तु है जो चेतन शक्ति से भरा पड़ा है। यह शक्ति मानव शरीर में यूं तो अनेक रूपों में क्रियाशील है, लेकिन उसका मुख्य रूप है—मानसिक शक्ति। अतः उसी मानसिक शक्ति का क्रियात्मक रूप कामशक्ति है। मानसिक शक्ति के मूल में "मन" है। मन का सहज धर्म है, कल्पना और सृष्टि करना। मगर वह तब ही सृष्टि कर सकता जब उसका सम्बन्ध किसी अन्य बाहरी चेतन व अचेतन वस्तु से होता है। मन और पदार्थ के सहज अस्तित्व से जो इच्छा होती है वही काम है। "काम" किसी भी वस्तु या पदार्थ का हो सकता है। धन का काम, यश का काम पुत्र या स्त्री का काम। काम शब्द से दो अथवा दो से अधिक का बोध होता है। विषय के साथ विषयों का भी बोध वासनाओं के मूल में केवल "काम" है और काम के मूल में आकर्षण और यह आकर्षण मैथुन जन्य है। आकर्षण स्त्री-पुरुष में संयुक्त होता है, अतः आदिशक्ति का "काम" अर्थात् सहचर की कामना है। वह सहचर स्त्री या पुरुष होता है। धन आदि भी हो सकते हैं।

साधक आनन्द के लिये ही सब कुछ करता है। आनन्द ही सभी कार्यों की प्राण है। आनन्द ही सभी कार्यों को चलाने वाली प्रेरणा है। इसी के ऊपर वृद्धि नामक शब्द निर्भर करता है। इसका अनुभव "मैथुन" में होता है। मैथुन आनन्द सांसारिक जीवन की पराकाष्ठा का आनन्द है। **डॉ० फ्रायड** के अनुसार, सभी प्रकार के आनन्द मैथुनानन्द के ही रूपान्तर हैं। यह नश्वर संसार वासना है। तंत्र का मत है विश्व वासना की मूर्ति स्त्री है।

तांत्रिक संस्कृति में और तांत्रिक साधना की दृष्टि में आदिशक्ति का आदि विकास "मैथुन" विषयक है। यही विश्व वासना है जिस वेग से काम अपने को अन्य मार्गों में अभिवक्त करता है—वही "लोकर्षणा" है। इस संसार के प्राणियों का सम्बन्ध "मैथुन" सम्बन्ध ही है। समस्त नियम वैषयिक प्रीति आदि जितने सम्बन्ध हैं, सब में कामशक्ति प्रधान है। सभी प्रकार का सम्बन्ध आकर्षणात्मक, कामात्मक और मैथुनात्मक है।

रोद्रात्मक, विसर्गात्मक, रसात्मक प्रवृत्ति पुरुष है। शान्त्यात्मक, आदानात्मक व सहनात्मक प्रवृत्ति स्त्री है। देने वाला है पुरुष और लेने वाली स्त्री। यही नियम शाश्वत है। अनुकूल परिस्थिति में, सम्भोग में अन्य परिस्थितियों में मानसिक एवं शारीरिक संभोग में वही शक्ति प्रकट होती है।

प्रवृत्ति ही काम है और आदिशक्ति कामेश्वरी। निवृत्ति भी काम है और है कामेश्वर। कामेश्वर-कामेश्वरी यही है शिव-शक्ति। सम्पूर्ण विश्व में निवृत्त अपने को प्रवृत्ति के मार्ग से स्थापित करना चाहती है। इसके द्वारा भेद का चरण केवल अभेद सिद्धि के लिये होता है यही महामाया है। यही अज्ञान और अविद्या है। इसी में सभी जीव घूम रहे हैं। मिथुन के नाश के लिये अगर कोई साधन है तो वह मिथुन ही है। द्वन्द्व के मार्ग से हमें अद्वैत की ओर चलना पड़ेगा। भूमि पर गिरने पर उस भूमि के सहारे ही उसका त्याग किया जा सकता है, अन्यथा नहीं।

मेरी इसी विवेचना से स्पष्ट विदित होता है कि काम अविद्या आकर्षण सभी वासनाओं के मूल में है। इसी से काम को आदि देव की संज्ञा मिली। सारे विश्व के मूल में कामेश्वर-कामेश्वरी यानी शिव-शक्ति सम्बन्ध ही है। यह कहकर तंत्र भैरवी गम्भीर हो गयी।

वैसे भी मैं आयु के उस मोड़ पर पहुंच चुका था जहां तक पहुंचकर मन में प्रेम की वह भावभूमि समाप्त हो जाती है जो कि प्रायः सोलह से तीस वर्ष के मध्य में होती है। यं भी न तो मुझे कभी छिछोरेपन में "आस्था" थी और न ही प्रथम दृष्टि के प्रेम में, मैं विवाहित था। घर में पत्नी थी, सामान्य रूप से सुख-संतोष भी था, फिर पता नहीं क्यों मेरा मन सहसा इतना विचलित हो उठा। एक ओर मैं रह-रह कर अपने आपको धिक्कारता था कि इस आयु में, ऐसी सामाजिक स्थिति में ऐसा चिन्तन उचित नहीं, लेकिन मन था जो सभी बंधनों को नकार कर फिर फिर वहीं-तंत्र-मार्ग में आ जाता था। भैरवी द्वारा जो ज्ञान मुझे दिया जा रहा था अपूर्व था, अनूठा था अब तक अप्रकाशित था। भैरवी के स्वर एक बार फिर वातावरण में गूंजने लगे।

आदि वासना निसन्देह—तंत्र मत में वही है जो अध्यात्मिक रूप में पुरुष के संभोग में परिणत होता है।

भूत, भविष्य, वर्तमान सभी काम में प्रवृत्ति रखते हैं, यह काम अस्तित्व का काम नहीं है। यह स्त्री-पुरुष सम्बन्धात्मक है।

सारा जगत शैवशक्ति जगत है। विश्व, स्त्री और पुरुष से उत्पन्न हुआ है। पुरुष परमेशा है और प्रकृति परमेश्वरी है। इन दोनों का मिथुनात्मक सम्बन्ध ही मूल वासना है, वही आकर्षण अथवा काम है।

बिन्दु साधना का आधार भी "काम" है, वह "काम" जो स्त्री-पुरुष के संभोग में प्रकट होता है। काम का आश्रय बिन्दु अथवा शुक्र है। शुक्र के आश्रय से बिन्दु साधना का पहला लक्ष्य है जीवात्मक भाव का मन के द्वारा सीधी आत्मानुभूति। आगे के तथ्य को हृदयतम करने के लिए शुक्र के विषय में समझ लेना परम आवश्यक है।

शुक्र बिन्दु के चौरासी अंश में एक लाख योनियों का संस्कार विद्यमान रहता है जिनको "अणाव मल" कहते हैं। वैदिक भाषा में "सह" कहते हैं। वैदिक विज्ञानानुसार, 84 लाख अंशों में 56 अंश पूर्व पुरुषों से प्राप्त होते हैं। 28 अंश अन्नादि से निर्मित होते हैं। तथोक्त 56 अंशों में 21 अंश पिता के, 15 पितामह के, 10 प्रपितामह के, 6 उनके पिता के, दादा 3 उनके भी पिता के, 1 अंश उनके भी पिता का यानी छठवें पुरुष के होते हैं। इन 34 अंशों में से यह भी संतानोत्पत्ति के लिए, 56 अंशों का शुक्र करता है। जिनमें 21 अंश अपने उपजाति 28 अंशों में से जाएंगे। उनमें भी 15 अंश इस अपने पिता के होंगे, 10 अंश दादा के, 6 अंश परदादा के, 3 अंश अपने से पूर्व पंचम पुरुष के होंगे। अपने से पूर्व छठवें पुरुष का जो एक भाग, अंश इस व्यक्ति में था वह प्रति सूक्ष्म होने के कारण इसकी संतान में नहीं आएगा, यही क्रम आगे चलेगा।

शुक्र-बिन्दु का जो सूक्ष्म अंश है, वह मानव के व्यक्तित्व का आधार है। वह मौलिक अंश है। इसमें मानव के मौलिक संस्कार कर्म-फल, विवेक, बुद्धि अहंकार आदि बीज रूप में विद्यमान रहते हैं। मृत्योपरान्त इसी अंश के अनुसार एवं आधार पर प्राणमय सूक्ष्म शरीर का तदान्तर मनोमय शरीर और वासनामय शरीर का होता है। कालान्तर में स्थूल शरीर की भी प्राप्ति होती है। इस मुख्य शुक्राणु का नाम है—परा कला। वैदिक भाषा में इसी को "शुक्र धरा कला" भी कहते हैं। इसी अंश को "शुक्र" ब्रह्म संतापन कहा गया है। यह शुक्र-बिन्दु सनातन ब्रह्म रूप है। ब्रह्म स्वरूप यही शुक्राश बिन्दु तंत्र साधना का आधार है।

जिस प्रकार पुरुष में शुक्र के 84 अंश होते हैं उसी प्रकार स्त्री के रजो-बिन्दु

के सोलह अंश होते हैं, जिन्हें "षोडस कला" की संज्ञा दी गयी है। इन सोलह अंशों में 4 अंश परदादी के, 8 अंश दादी के और 3 अंश माता के और 1 अंश स्त्री का स्वयं का होता है। इस प्रकार जोड़ने पर कुल पन्द्रह अंश होते हैं। यह अंश अथवा 15 कला चन्द्रमा की 15 कलाओं से सम्बन्धित है। अन्तिम सोलहवीं कला को "परमा कला" कहते हैं। इसी को अमावस्या भी कहते हैं। चौथी कला का सम्बन्ध चतुर्थ तिथि से और आठवीं कला का सम्बन्ध अष्टम तिथि से समझना चाहिए। आप स्वयं देखें तांत्रिक साधना आदि में 4 और 8 तिथि का महत्व इसलिए है। अमावस्या पूर्णकला है। यही परमा कला या परमा शक्ति महामाया है। इसी में नारी का नारीत्व अथवा स्त्री का स्त्रीत्व विद्यमान है। दूसरे शब्दों में, इसी को "मूल शक्ति" भी कहते हैं। इसी प्रकार पुरुष का जो पर कला अथवा शुक्र धरा कला है वह पुरुष तत्व है जिसे शिव तत्व की संज्ञा दी गयी है। पुरुष या पोरुष इसी में निहित है। इसी की सिद्धि पुरुषार्थ है जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रकट होता है।

स्त्री तत्व मय "परमा कला" और पुरुष तत्व मय "परा कला, शक्ति तत्व का सम्बंध मन की अत्यन्त सूक्ष्म अवस्था जिसे अचेतन कहते हैं, से है। इसी प्रकार प्राण की सूक्ष्मावस्था धनण्जय से है। संभोग काल में जिस क्षण स्त्री-पुरुष के अचेतन मन और धनण्जय प्राण का संयोग होता है उसी अवस्था में परा कला और परमा कला एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। यही सनातन आकर्षण है जो आदिकाम के रूप में शिवशक्ति युक्त होने पर प्रकट होता है और इसी अवस्था में स्त्री गर्भ धारण करती है। अगर परमा कला में आकर्षण अधिक होता है तो कन्या और अगर परा कला में अधिक होता है तो पुत्र की उत्पत्ति होती है। यही गर्भ रहस्य है। इतना कहकर तंत्र भैरवी मुस्कुरा उठी।

ज्योतिष के अनुसार स्त्री-पुरुष की परा और कला के आकर्षण का सम्वंध ग्रह ऊर्जा से है। उत्पन्न करती है। गर्भ धारणं के क्षण अगर स्त्री के गोचर में कोई उच्च ग्रह है तो उसकी ऊर्जा परमा कला में पुरुष की परा कला से अधिक आकर्षण उत्पन्न करेगी। इसी प्रकार अगर पुरुष गोचर में कोई उच्च ग्रह है तो उसकी ऊर्जा परा कला में परमा कला से अधिक आकर्षण उत्पन्न करेगी। इसके विपरीत अगर दोनों के ग्रह समान रूप से उच्च हैं तो दोनों का आकर्षण भी समान होगा। ऐसी स्थिति में जो गर्भधारण होगा तो गर्भपात हो जायेगा या फिर जो संतान होगी वह नपुंसक होगी। इसलिए ज्योतिष शास्त्र में गर्भ धारण के निमित अनुकूल ग्रह, नक्षत्रादि के अनुसार, मुहूर्त की व्यवस्था है। इसलिये ही

ज्योतिष में गर्भाधान के मुहूर्त की व्यवस्था है। इसके विषय में फिर कभी अलग से चर्चा करूंगी। भैरवी ने मुझे आश्वस्त किया।

मैंने जिन 84 अंशों का उल्लेख किया गया है उनके प्राण क्रम को श्राद्ध भूमि में सापिण्डय सब्त पौरुषम कहते हैं। उन आणव मलों के क्रमिक प्राण-प्रतिष्ठा होने पर ही अनुभव अथवा आत्मसाक्षात्कार आदि सम्पन्न होते हैं। आणव आवश्यक है और इस आवश्यकता की पूर्ति करना भी बिन्दु साधन का लक्ष्य है। 84 से 83 अंशों में आणव मल रहते हैं, अंतिम 84वें अंश में नहीं—इसमें आणव मल के स्थान पर मूल तत्व अर्थात् स्त्री अथवा पुरुष तत्व रहता है। बिन्दु इसी को कहते हैं। स्त्री के बिन्दु को रक्त बिन्दु और पुरुष के बिन्दु को श्वेत बिन्दु नाम दिया गया है। रक्त बिन्दु शक्ति है और श्वेत बिन्दु शिव है। तांत्रिक दृष्टिकोण से बिन्दु साधना के मूल से यह दोनों बिन्दु ही हैं, जिसकी चर्चा में अब करूंगी।

"शुक्र-बिन्दु" ब्रह्म का और "रजो-बिन्दु" माया का प्रतीक है। स्त्री ब्रह्म माया का पर्याय पुरुष प्रकृति और शिव शक्ति है। जैसे कि पहले बतला चुकी हूं इन दोनों बिन्दुओं का मिलन सूक्ष्म मन और सूक्ष्म प्राण के धरातल पर होता है। सूक्ष्म प्राण धनज्जय है, सूक्ष्म मन अचेतन है और सूक्ष्म शुक्र-बिन्दु परा कला तथा सूक्ष्म रजो बिन्दु परमा कला है। तंत्रोक्त धरातल पर मिलन के समय जो आनन्दानुभूति होती है—वह समान रूप से स्त्री-पुरुष दोनों को प्राप्त होती है। यही अनुभूति घनीभूत होकर गर्भ की सृष्टि करती है। अतः इसी अनुभूति को ब्रह्मनन्द कहा गया है। यह अनुभूति अचेतन मन में होती है। इसलिए संभोग की इस अनुभूति को चरम पराकाष्ठा की आनन्दानुभूति कहते हैं। भौतिक जितने आनन्द है उनमें यह सर्वश्रेष्ठ और चरम आनन्द है। अव्यय पुरुष अर्थात् शिव की पांच कलाओं के नाम—आनन्द, विज्ञान, मन, प्राण और वाक हैं। अतः तंत्रोक्त "आनन्द" शिव की पहली कला है। यही सामरस्यानन्दानुभूति है। इसके अतिरिक्त संभोग काल की आनन्दानुभूति के तीन मुख्य प्रकार हैं—

चुम्बन मर्दन, स्तन मर्दन, आलिंगन, नखच्छेदन आदि से उत्पन्न आनन्दानुभूति। संभोग काल में उत्पन्न आनन्दानुभूति। तीसरे प्रकार की आनन्दानभूति दीर्घाकालीन संभोग के पश्चात् वीर्यपात की आनन्दानुभूति। अल्पकालीन संभोग के बाद वीर्य-पात की आनन्दानुभूति। प्रथम अनुभूति में रोमांच और तृप्ति का अनुभव होता है, किन्तु दूसरे में मानसिक व शारीरिक निर्बलता के कारण अतृप्ति और मानसिक क्लेश का अनुभव होता है। उपयुक्त तीनों प्रकार की अनूभूतियां प्राणजन्य उसके बाद शुक्रजन्य हैं।

प्रकृति संभोग के अन्तर्गत भौतिक स्तर की संभोग आनन्दानुभूति का ही

तंत्र में पशु भाव कहा है। प्रथम सामरस्यानन्दानुभूति के अतिरिक्त संभोग जन्य जो भी अनुभूतियां हैं वे स्त्री-पुरुष में अलग-अलग और अपने ढंग से हुआ करतं हैं। मन का सम्बन्ध न होने के कारण वह घनीभूत नहीं हो पाती हैं। फलस्वरूप उनसे सृष्टि नहीं होती।

भौतिक स्तर पर प्रकृति संभोग में विजय प्राप्त करने के पश्चात् ही व्यक्ति क्रमशः तांत्रिक स्तर, यौगिक स्तर और आध्यात्मिक स्तर पर बिन्दु साधना द्वारा आनन्द प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है अन्यथा कभी भी नहीं। तंत्र साधना का उद्देश्य निर्वाण-प्राप्ति है—अशरीरी हो जाना। इसके दो मार्ग हैं—भौतिक और परालौलिक मार्ग। सिद्धावस्था इसी के अन्तर्गत हैं इच्छा मात्र से सृष्टि करना, पंजीकरण विद्या भी यही है। कर्मों से करे तो सिद्धावस्था है, शक्ति से करे तो पूर्ण विज्ञान।

निर्वाण शरीर, मोक्ष अथवा मुक्ति प्राप्त करना। यह तांत्रिकों का सामान्य भाव और शाक्तों का शिवत्व भाव है। भोग साधना सात शरीरों के स्तर की होती है। प्रथम संभोग भौतिक शरीर का भौतिक शरीर से होता है। यहां स्त्री-पुरुष को बीच से हटा दो।

पुरुष में वायु तत्व और स्त्री में अग्नितत्व प्रधान होता है। वासना में यह दो तत्व प्रधान होते हैं। स्त्रियों में जब कामोन्माद होता है तो उन्हें गर्मी लगती है, उनका श्वास गर्म होता है। यही तो वासना है।

इन वायुतत्व और अग्नितत्व का स्पर्श होते ही वीर्य तुरन्त स्खलित हो जाता है। मन वायु-प्रधान और वीर्य अग्नितत्व-प्रधान है। स्त्री का रज वायुतत्व-प्रधान है। 22 वर्ष की आयु से 41 वर्ष की आयु तक स्त्री का रज अग्नितत्व-प्रधान रहता है। स्त्री का काम उस समय क्षीण नहीं होता। स्त्री का अग्नितत्व बढ़ता ही जाता है।

पुरुष में 16 वर्ष की आयु तक वायुत्व प्रधान होता है। पुरुष का वायुतत्व क्षीण हो जाता है।

स्त्री पुरुष का वायुत्व और पुरुष स्त्री का अग्नि तत्व ग्रहण करता है।

उपरोक्त वर्णित सात शरीरों का शरीर के सात चक्रों से सम्बन्ध है। विवाह में भी सात फेरे होते हैं। प्रथम संभोग का मूलाधार से सम्बन्ध है। यही बिन्दु है। इसी केन्द्र से शरीर निर्माण होता है। वह बहत्तर हजार नाड़ियों का केन्द्र है। इसमें 10000 नाड़ियां ज्ञान तन्तुओं की, 16,000 नाड़ियां प्राण वाहिनी नाड़ियों की है। 16,000 नाड़ियां शून्य नाड़ियां। हैं, 16,000 नाड़ियां मनोवहा नाड़ियां हैं और बाकी 4,000 में से तीन हजार छोड़ दो तो वह 11,000 नाड़ियां सविकल्प

समाधि की है, और एक हजार नाड़ियां तुरियातीत अवस्था अर्थात् भावातीत अवस्था की हैं यही महासमाधि की अवस्था है।

प्रथम शरीर वाली काम जन्म सृष्टि है, वासना तत्व, वासनामय शरीर, इच्छा-रहित शरीर है। वासना का विपरीत है—ब्रह्मचर्य न भोग है न दमन। स्त्री सामने आने पर भी कामवासना न जागे। यही तंत्र-मार्ग अथवा साधना का सूत्र है।

पुरुष की 18 वर्ष तक ब्रह्मचर्य अवसाा है और 19—25 वर्ष तक दीक्षावस्था है। यहां न भोग है न दमन है। स्त्री की 16 वर्ष से 23 वर्ष तक दीक्षावस्था है।

पहली दीक्षा—यज्ञोपवीत दीक्षा (गायत्री मंत्र) शाक्तों में नाभि को अंगूठे से दबाते हैं, यह हुई स्पर्श दीक्षा। फिर है कपाल दीक्षा ब्रह्मरन्ध्र पर हाथ रखकर शक्ति का संचार करते हैं। इसके पश्चात् भैरव दीक्षा है।

स्त्री साधिकाओं के लिए पहली दीक्षा-षोडशी दीक्षा अर्थात् अष्टांग पूजा, इसके बाद मातंगी दीक्षा अर्थात् योनि पूजा, तीसरी दीक्षा है भैरव पूजा अर्थात् गुह्य पूजा।

स्त्री की भग के बाहरी आकार को योनि कहते हैं और भीतर के आकार को गुह्य कहते हैं। तत्पश्चात् इन्हें चक्रानुष्ठान में बिठा देते हैं।

इतना करने के पश्चात् उन्हें पहला आसन देते हैं जिसे युगनद्ध आसन कहते हैं। इसमें साधिका भैरवी को भैरव अपनी गोदी में बिठाता है। चक्र में अब भैरव मंत्र देते हैं। यह साधना मूलाधार से चल रही और मूलाधार का ध्यान भी करना चाहिए। युगनद्ध आसन में लिंग बाहर कभी नहीं रखते। रज के नीचे आयेगा और वीर्य श्वेत बिन्दु ऊपर जाकर केन्द्र पर मिलते हैं और दोनों की सुगम अवस्था ही समाधि अवस्था है। स्त्री में पुरुष तत्व और पुरुष में स्त्री तत्व लीन होता है। तंत्र में इसी को विपरीत रति कहते हैं। कभी-कभी श्वेत बिन्दु (वीर्य) रक्त बिन्दु (रज) की पकड़ में आ जाता है तो इसे भोग समाधि कहते हैं। इसका गुण है कि दोनों अपने आप को भूल जाते हैं, जहां पकड़ शक्तिशाली हुई तुरन्त रक्त बिन्दु श्वेत बिन्दु को अपने स्थान पर ले जाता है। दो विपरीत तत्व मिलते हैं तो एक महातत्व की उत्पत्ति होती है जिसे कला कहते हैं, यही तंत्र का वास्तविक आनन्द है और वैष्णव का सहजानन्द है। शक्ति पकड़ लेने पर श्वेत बिन्दु रक्त बिन्दु ऊपर खींचता है तो स्त्री को सहजानन्द मिलता है। रक्त बिन्दु सफेद बिन्दु ऊपर खींचता है तो पुरुष को सहजानन्द मिलता है। इस प्रकार ऊपर-नीचे की खींचातानी में 15 काल व्यतीत हो जाते हैं। ऊपर खींचना और फिर ऊपर से नीचे आना यही कला कहलाती है। एक अवस्था में दोनों मिल

जाते हैं। अगर ऊपर जाते हैं तो देवता सृष्टि होती है। इसी को पंच योनि कहते हैं। रक्त बिन्दु अपने क्षेत्र में बांधकर ले जाये तो उसे ब्रह्मानन्द कहेंगे।

प्रकृति संभोग में स्त्री की योनि में जो काम तरंग उठाती है वही अर्द्धकला कहलाती है। साधक मन को सदैव बिन्दु में केन्द्रित कर मूलाधार में लगाये रखे तो बिन्दु मन की पकड़ में रहता है। प्रथम अग्नि बड़वानल अग्नि है। प्रथम अमृत की प्राप्ति यहीं पर होती है और यही ओम की अर्द्धकला है जिसे तंत्र में आर्ध्य कहते हैं। इस पर विजय पाने के लिये ब्रह्मचर्य में स्थिति होनी चाहिये और यह वीर्य के स्खलित होने वाले आनन्द के समान आनन्द देता है और फिर स्थायी बनता है। इससे वासना पर विजय प्राप्त करते हैं। यह पहले सिद्ध तांत्रिकों के शरीर की साधना है। यह सिद्ध होने पर दिव्य मोहक गन्ध निकलती है फिर साधक को स्त्री की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती।

बिन्दु साधना के दो लक्ष्य हैं—विन्दु शुद्धि और बिन्दु शोधन। मूलाधार चक्र में पृथ्वी तत्व है। इसका बीज "लं" है। प्राण की गति नीचे की ओर है क्षुब्ध होकर बिन्दु मन से छूट कर प्राण की पकड़ में आ जाता है और उसे नीचे ले जाकर स्खलित कर देता है। प्राण की गति ऊपर करने के लिए इच्छा की आवश्यकता है। जब इच्छा के साथ प्राणशक्ति होगी तब उसकी गति ऊर्ध्व होगी। मन को सदैव बिन्दु में केन्द्रित कर मूलाधार में लगाये रखें तो बिन्दु मन की पकड़ में रहता है।

पृथ्वी तत्व के दो भाग—क्षर तत्व और अक्षर तत्व।

क्षर तत्व	**अक्षर तत्व**
स्थूल सृष्टि	सूक्ष्म सृष्टि
चित तत्व	अचित तत्व
च्युत	अच्यूत

बिन्दु शुद्ध होने पर आभा बढ़ती है, मुख पर आभा झलकने लगती है।

कृति दे देने प्र-उपसर्ग है। विशेष रूप से नाश करने वाली होती है। प्रकृति के बंधन में फंसे साधक को निरा पशु कहते हैं। यह तंत्र का पशुभाव है। प्रकृति नष्ट कर रही है। नाश करते-करते अचानक निर्माण हो जाता है। हम गिरते हैं तो पृथ्वी का सहारा लेकर उसी का सहारा लेकर उठना भी होता है।

वेद की पंचाग्नि विद्या का मूलाधार की प्रथमाग्नि है। यहां प्रथम अमृत की प्राप्ति होती है। इसे वड्वाग्नि कहते हैं। यही अर्द्धकला है। बिन्दु शोधन हो जाने पर अंतिम स्तर पर मुद्रा की आवश्यकता पड़ती है। जब बिन्दु शोधन हो

जाता है तब भैरव और भैरवी दोनों अलग-अलग अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे। तंत्र का वीरासन है, गुदा पर एड़ी रखकर एक पांव पर बैठना। बिन्दु-शोधन हो गया है इसका लक्षण यह है कि निद्रा दूर हो जाती है। फिर निद्रा नहीं सताती है। हां, साभान्य की बात अलग है।

तंत्र में साधिका रजस्वला होने से पहले साधना प्रारम्भ हो जाती है। साधक की 14 वर्ष की आयु से साधना चलती है। इसके पश्चात् रजस्वला होने पर वह भैरवी कहलाती है। उसे दीक्षा देकर शुद्ध कर लेते हैं। साधक 16 वर्ष की आयु से भैरव कहलाने लगता है। तब दोनों एक साथ साधना करेंगे।

तब भैरव, भैरवी दोनों को एकान्त में अंधकारमय कमरे में सात कदम की दूरी पर बैठायें। दोनों वीरासन ही में बैठेंगे। साधिका श्वास छोड़ेगी। दोनों अपने-अपने श्वास-प्रश्वास की गिनती करेंगे। साधना समाप्त होने पर दोनों बाहर आकर अपनी गणना मिलायेंगे। शुरू में दो-तीन बार गणना में अन्तर होगा लेकिन बाद में दोनों की श्वास गणना समान स्तर की हो जायेगी तब समझो शोधन हो गया।

प्रथम भैरव अपनी भैरवी को मानसिक आदेश देगा कि मैं कल अमुक स्थान पर जा रहा हूं, तुम भी वहां पहुंचो। और साधना के अन्त में उससे प्रतिदिन पूछेगा कि तुम्हें अन्तर्मन से कुछ आदेश मिला? क्या तुमने उसके अनुसार कार्य किया? इसका अभ्यास दो महीने से वर्षभर तक करने में सफलता मिल जाती है, इसमें ध्यान योग स्वयं आ जाता है।

गन्तव्य स्थान का पता कभी नहीं देना है, केवल कहना है कि चलो चलें। फिर वहां पहुंचने पर मानसिक स्तर पर आपस में वार्तालाप करेंगे। मनोमय शरीर से क्या बातचीत हुई वह भैरव उससे बाद में पूछेगा। जब वे एक-दूसरे के मन की बात जानने लगेंगे तब समझो कि यह चरण भी सफल हो गया है। जब विचारों का आदान-प्रदान होने लगे फिर एक साथ दूर रमणीक स्थलों की मानसिक यात्रा करें और एक-दूसरे से पूछकर उनका विवरण नोट करें। दृश्य के लिए आदेश दें। अदृश्य के लिए मानसिक आदेश दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ देना होगा, इस क्रिया में देशकाल स्थिति का कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि मन-शक्ति के साथ काम करते हैं।

वैदिक अपनी पत्नी के साथ साधना करने को बतलाते हैं। तंत्र में कहते हैं कि अपनी में वह आकर्षण नहीं में आकर्षण है। वही काम है। इसीलये तो साधना करते हैं। साधक तुम स्वयं अनुभव करो मेरे प्रति तुम्हारा आकर्षण है या नहीं? भैरवी की यह बात सुनकर मैं मौन रह गया। मौन रहना भी था, क्योंकि वह सत्य ही तो कह रही थी।

द्वितीय भाव शरीर का केन्द्र स्वाधिष्ठान चक्र है। इस स्तर पर पुरुष का शरीर स्त्री है और स्त्री-पुरुष का शरीर है इस शरीर से भय, घ्रणा, क्रोध और हिंसा पैदा होते हैं। यह इस शरीर के स्वाभाविक गुण हैं। इसी को प्राणमय शरीर भी कहते हैं। इसे जिम्प्रणी मुद्रा तथा प्रत्यालीढासन में सिद्ध करते हैं। इस आसन में पुरुष स्त्री को अपनी गोद में बैठाकर संभोग करता है।

इसकी उपलब्धि इच्छा सृष्टि की लौकिक उपलब्धि है—जगत से सम्बन्ध टूट जाता है, जगत समान रूप से सामने होता है। खाली भाव रहता है, एक-दूसरे में डूब जाते हैं। इसमें जो आनन्द की अनुभूति होती है उसे दिव्यानन्द कहते हैं। उसमें प्रकृति प्रदत चारों गुण रूपान्तिरित हो जाते हैं—यथा भय-अभय में घृणा प्रेम में, क्रोध क्षमा में, हिंसा अहिंसा में और वासना ब्रह्मचर्य में रूपान्तरित हो जाता है। जैसा कि मैंने बतलाया है वासना का विपर्या ब्रह्मचर्य और उसकी उपलब्धि है—इच्छा सृष्टि अपनी इच्छा मात्र से सृष्टि करना। यह आत्मज सृष्टि से जो पुत्र होता है वही कपाल क्रिया कर मुक्ति दिलाता है। कामज सृष्टि वाले पुत्र द्वारा कपाल क्रिया करने से कुछ लाभ नहीं होता। तब पत्नी भोग न होकर मां हो जायेगी। भय, घृणा, क्रोध, हिंसा के स्थान पर अभय, प्रेम, करुणा, अहिंसा का भाव उदय होगा। इसको सिद्ध कर लेने पर बोध चित की स्थिति प्राप्त हो जायेगी। यहां बिन्दु की प्रतिष्ठा हो जाती है। वीर भाव की प्राप्ति हो जाती है।

मैं नहीं जानता कि मेरे अन्य साथी मेरी ओर ध्यान दे रहे थे या नहीं, किन्तु मैं उसके पश्चात् पूरी तरह अव्यवस्थित हो रहा और उसी अधेड़बुन में वहां सारा समय व्यतीत करके वापस अपने कक्ष में आ गया, किन्तु यह प्रसंग भुलाए नहीं भूलता था। प्रत्येक साधक के मन में सौन्दर्य को लेकर एक कल्पना होती है और वह तंत्र भैरवी उसका साकार रूप थी....ज्यों किसी कवि की कविता सुन्दर देह का आकार ले ले, ज्यों किसी चित्रकार की कृति अचानक सजीव हो जाए।

अभी कुछ ही समय पूर्व किसी ने मुझसे सहसा मजाक में चर्चा छेड़ दी....सोचता हूं तुझे अब वह गोपनीय तत्व बता दूं जिससे किसी भी भैरवी को एकांत में कामोत्तेजित किया जा सकता है। यही विचार कर मैंने सारा रहस्य आप पर प्रकट कर दिया है, जो अच्छे-से-अच्छे सिद्ध तांत्रिक को भी ज्ञात नहीं है।

❑❑❑

7

चुड़ैल का टोना झाड़ने का मंत्र

पर्दा करवाकर जादू-टोना ग्रस्त स्त्री को नमक और गंगाजल से झाड़ा देते हुए निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें तो टोना तुरन्त उतर जाता है। यह प्रयोग किसी अनुभवी तांत्रिक की देख-रेख में ही सम्पन्न कराना चाहिए।

ॐ पूर्व प्रश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग पाताल आंगन द्वार मंझार खाठ विचौना गडई सावनार सागलन ओ जेवनार विरा सोधांवे फ़ुनेल लक्वेग़ सोपारी जे मुंह तेल अवटन उवटन औ अवनहान पहिरणलहगा सारी जान डोरा चोलिया चादरि झानमोट रूई ओढ़न झीन शकर गोरा छेत्रपाला पहिले झारो बारम्बार काजर तिलक लिलार आंखि नाक कान कपार मुंह चोटा कंठ अबर्कष कांध बांह हाथ गोड अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल नाभी नेटी नीचे जोनि चरणि कत भेटी पोठि करि दाव जांघ पेडरी घूटा पावतर ऊपर अंगुरा चाम रक्त मांस डांड गुदा धातुओं जो नहीं छाडु अंतरी कोठरी करेज पित ही पित जिय प्राण सब बित बांत अंक मने जागु बड़े नरसिंह कि आनु कबहुन लागु फांस पितर रॉग कांच लोह रूप सोन साच पार पठ वशन रोग जोग कारण दशन डोठि मूट टीना थापक नवनाथ चौरासी सिद्ध के सराप डाइ न योगिनी चुरइलि भूत व्याधि परि अर जेजत़ भनै गोरख बैन साच प्रगट रे बिलउकाली औ भैरव की हॉक फुरो ईश्वरो वाचा।

अग्नि स्तम्भन प्रयोग

यह अग्नि स्तम्भन मंत्र ग्रहण अथवा होली की मध्य रात में दस हजार बार जप कर लें तो अग्नि बंध जायेगी।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो अगिनये ज्वालामुखी मनाय शंकर सहाय, अग्नि शीतल हो जाय पार्वती की दोहाई नोना चमारिन की दोहाई गुरु गोरखनाथ बाबा शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सर्व बाधा नाशक प्रयोग

निम्नलिखित मंत्र को पहले ग्रहण अथवा होली पर 1108 बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर मंत्र द्वारा, झाड़ा देने से सब बाधा दूर होती हैं—

सतनाम आदेश गुरु का आदेश पवन पानी का नाद अनाहद दुनदुभी बाजै जहां बैठी जोगमाया साजे चौंसठ जोगनी बावन वीर बालक की हरै सब पीर आणे जात शीतला जानिये बंध बंध बारे जात मसान भूत बंध प्रेत बंध छल बंध छिद्र बंध सबको मारकर भसमन्त सतनाम आदेश गुरु का फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

श्मशान बाधा नाशक प्रयोग

निम्न मंत्र को ग्रहण अथवा होली पर जाप करके सिद्ध कर लें। इसके बाद श्मशान बाधा से ग्रस्त रोगी को निम्न मंत्र पढ़कर झाड़ा लगाने से श्मशान बाधा शांत होती है—

सपेदा मसान गुरु गोरखनाथ की आन, यमदण्ड मसान काल भैरों की आन, सुकिया मसान नुनिया चमारी की आन, फुलियां मसान गारे भैरों की आन, हलदिया मसान ककोड़ा भैरों की आन, पीलिया मसान दिल्ली की जोगिनी की आन, कमेदिया मसान कालका की आन, कीकड़िया मसान रामचन्द्र की आन, मिचमिचिया मसान भोले नाथ की आन, सिल सिलया मसान मोहम्मदा पीर की आन।

शस्त्र-स्तम्भन

बांधा कड़ी तूपक उवनी चौसठ सौ योगिनी।
परेशानी अने लोह पहने पावें रक्षा करे श्री गोरखनाथ।।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर गंगाजल, मिट्टी अथवा काले उड़द शत्रु की तरफ उछालने से शत्रु का मुख बन्द और शस्त्र स्तम्भित होता है।

ज्वर का झाड़ा

निम्न मंत्र को ग्रहण अथवा होली पर सिद्ध कर लें। इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर ज्वर से ग्रस्त रोगी को झाड़ा लगावें।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो अजैपाल की दुहाई जो अमुक को ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र गोरखनाथ।

गर्भ स्थिर रहने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु। ॐ सतवर पुरुष पाया की रात्रि थम्बे गर्भ न छोड़े पाप उदवा मास गर्भ वास, पुरा साहि निकास गोरि मास मात माता गर्भ को पूरा माथा हनुमान तीर गर्भ को गंडी बांधो राखि दस मास वीर पाख फुरो मंत्र आदेश गुरु गोरखनाथ को।

कुंवारी कन्या को स्नान कराकर रविवार के दिन सूर्य के सामने बैठाकर सूत कतावें। उस सूत से सात तार का डोरा बट फिर तीन-तीन गांठ के दो गण्डे बनावें फिर उपरोक्त मंत्र से 31 बार अभिमंत्रित कर गुग्गुल की धूनी देकर कमर में बांधे तो गर्भ स्थिर रहेगा।

स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो चौसठ योगिनी, बातन वीन, छप्नन भैरो, सत्तर पीर आय बैठो डाल के बीच हाली हलै न चाली चलै, बाड़ शत्रु सो सिलैं डाल हलै चले तो गोरखनाथ कीदुहाई फुरे।

उपरोक्त मंत्र को ग्रहण अथवा होली पर सिद्ध कर लें। इसके बाद मंत्र पढ़कर जिस पर भी गंगाजल के छींटे दोगे वह स्तम्भित होगा।

रक्षा मंत्र

सार सार महासार बांधो तीन-तीन बारनसरे चोट रक्षा श्री गोरखनाथ।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर अनार की टहनी से कृत खींचने से सुरक्षा होती है।

कुश्ती जीतने का मंत्र

ॐ नमो गदाधारी हनुमन्त वीर, स्वामी बड़ा तेज बड़ा शरीर अद्रष्टिचक्र मातु कालका का जन्म चड़े पैरी न कर थैर में करिहो तेरे जीव का भ्रात मैं करूं तेरे गुरु मोर से मारूं तुझे एक ही तो तीर से मेरा मारा ऐसा घूमे जैसी मंजनी सर्प की लहर पर तोहि हिरत मारूं बाण फरे चले तो गुरु गोरखनाथ की आन।

उपरोक्त मंत्र को होली अथवा ग्रहण पर सिद्ध कर लें। इसके बाद साबुत काले उड़द पर 108 बार पढ़कर दे दें। कुश्ती के समय अखाड़े में उपस्थित अनेक एक मित्र के पास रखवा दें, कुश्ती में जीत होगी।

मूठ लौटाने का मंत्र

ॐ सी आई को लगाई जट जट गट खट उलट पुलट लुका झुका को नार नार सिद्धि गोरखनाथ की दुहाई मंत्र फुरो ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र को पहले किसी भी शुभ मुहूर्त में सिद्ध कर लें। इसके बाद जिस ओर से भी मूठ आवे उस ओर साबुत काले उड़द पढ़कर मारें। मूठ वापस लौट आयेगी।

कीड़े झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो कीड़ा रेकुंडूकु डालो लाल पूछ तेरा मुंह काला। मैं तोहि पूछा कहां से आया तूने सब मांस खाया। अब तू जाय भस्म हो जाय। गुरु गोरखनाथ करे सहाये।

नीम की डाली से 51 बार मंत्र पढ़ते हुए झाड़ें। घाव के सारे कीड़े मर जायेंगे। इस मंत्र को होली, दीपावली, ग्रहण पर सिद्ध करना परम आवश्यक है।

सांप भगाने का मंत्र

ॐ नमो सवरि भूल मधु ममु खबना तेरा कमल का फल सरपा तेरी बांधू दानी जिसने तू गोद खिलाया और बांधू स्तन कटोरा जिसमें दूध पिलाया बीन की तली ऐसी करे जो घाव तेरी दाढ़ भस्म हो जाय गुरु गोरखनाथ भी जाय जलाय। आदेश गुरु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पहले सिद्धि करें फिर उपले की राख पर 31 बार पढ़कर सांप के ऊपर डालें तो वह बंध जावे।

वशीकरण मंत्र

जंगल की योगिनी पाताल में नाग उठ गए मेरे वीर लाओ मेरे पास जहां जहां जाए मेरे सहाई तहां तहां आव कजभरी नजभरी अन्तासों अगरी तक नफे तक एक फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाय वीर गुरु गोरखनाथ की दुइाई।

शुक्ल पक्ष के शनिवार पुष्प नक्षत्र में चौराहे की मिट्टी की पुतली बनाकर उसके वक्ष पर साध्य स्त्री का नाम लिखें, इसके बाद उपरोक्त मंत्र की दस माला जपें। इस प्रकार करने पर प्रबल वशीकरण होता है।

शस्त्र रोकने का मंत्र

निम्न मंत्र को पहले होली अथवा ग्रहण में सिद्ध कर लें। इसके बाद मंत्र को पढ़कर गंगाजल शत्रु की तरफ फेंकें तो शस्त्र नहीं चला पायेगा।

मंत्र इस प्रकार हैं—

ॐ नमो चौंसठ योगी बावन पीर छप्पन सत्तर पीर आय बैठो, ढाल ते तीर। हालो हले न चाली चले चढ़ शत्रु को मिले यह ढाल, चले हले तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

गोरखनाथ का भैरव सिद्ध प्रयोग

ॐ काली काली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव हुक्म हाजिर रहे

मेरा भेजा रक्षा करे आन बांधू बान चलते फिरते के ओसन बांधू दशा सुर बांधू नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधू फल में भेजूं फूल में जाय के डेंजी पढ़ पत्थर कांपे हल हल करे, सिर सिर परे, उठ उठ भागे, बक बक करे, मेरा भेजा सवा घड़ी पहले सब दिन सवा बरस का "अमुक" को बावला न करे तो माता काली की शैया पर पग धरे। वाचा दूखे तो उमा, सुखें वाचा छोड़ कुवाचा करे धौल की नाद चमार के कुड़े मेरा भेजा वावला न करे तो रूवा के नेत्र आंख की ज्वाला बढ़े। सिर की जटा जूट भूमि पर गिरे, गिरे माता पार्वती के घोर पर चोट पड़े बिना हुक्म नहीं मारना तो काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मंत्र गोरख सत्य नाम आदेश गुरु को।

प्रिय पाठकों ! उपरोक्त मंत्र मुझे गंगोत्री के मार्ग में एक अतिवृद्ध घुमक्कड़ साधु ने दिया था। उस साधु के अनुसार यह गुरु गोरखनाथ का भैरव सिद्ध प्रयोग है, जो अपनी भयानकता के लिये विख्यात है। प्रयोग इस प्रकार है–

इस मंत्र को केवल सूर्य ग्रहण में और केवल गंगा के तट पर ही सिद्ध करना चाहिए। तीन ओर से चौका लगाकर दक्षिण की ओर मुख करके बैठ जायें। इस मंत्र की 21 माला जपें। सामग्री और भोग में बूंदी के लडडू, लाल कनेर के फूल, थोड़ा सिंदूर, फूलदार लवंग का जोड़ा और एक चारमुखा दीपक प्रज्वलित कर लें, जाप के बाद दशाशं का हवन करें। हवन सामान्य सामग्री से ही करें। जाप के मध्य अगर भैरव प्रकट हो जाये तो उसके गले में फूल की माला डाल दें और भोग भेंट करें।

एक व्यावहारिक तांत्रिक होने के नाते मैं आपको परामर्श देता हूं कि आप यह साधना किसी योग्य मार्ग-निर्देशक के सानिध्य में ही करें।

बिच्छू का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसे इस्माइल जोगी योगी ने पाली कुत्ती। दस काली दस कावरी दस पीली दस लाल। रंग-बिरंगी दस खड़ी दस टिकावे। भाल। इसका विष हनुमत हरे रक्षा करे गुरु गोरखनाथ।

इस मंत्र को 1001 बार जपें। तेल का दीपक जलायें, मीठे का भोग करें। इस प्रकार जिसके कुत्ते ने काटा उसके घाव के चारों ओर उपलों की राख 31 बार पढ़कर लगा दें तो आराम हो जायेगा।

आंख दुखने का मंत्र

ॐ नमो झलमल जहर नली उलाई अस्ताचल पर्वत से आई जहां बैठा गोरख आयी, फुटे न पाके करे न पीड़ा गुरु गोरखनाथ ठाके पाड़ा।

नीम की डाली से 31 बार झाड़ें, साथ ही मंत्र पढ़ते जायें। यह झाड़ा तीन दिन लगावें।

दाढ़दर्द का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामनी देवी जहां बसे इस्माइल योगी न पाली गाय, नित उठ चरने वन में जाये चरे सूखी घास खाये जिसने गोबर किया जा मैं उपजा मुताला पूंछ पूछाला धड़ है पीला, मुंह है काला, दांत मसूड़ा पीड़ करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरे।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर लोहे की कील पर पढ़कर बबूल के पेड़ में ठोंक दें, तो दाढ़ की पीड़ा दूर हो।

पैर चलाने का मंत्र

ॐ नमो हूं काली चौंसठ योगिनी गोरखनाथ वामन पीर दस गांठ लोहा को झरे मेना झरे तो मारी मारी रे रसिया वीर जाको हाथ धरे। धरे न धीर रक्तयो-रक्तयो रक्त उठ रक्त को चाव मास की बड़ी चलावे चरण चलावे पैर मानन की माटी योग के बली पड़ी।

किसी भी शनिवार की रात को श्मशान की ग्यारह लकड़ियां लेकर 31 बार मंत्र पढ़कर जिसके ऊपर डालें उसी पर पैर चले।

पैर बांधने का मंत्र

मोरी गाददे ईश्वर दे गया वाचा महादेव आप घर गया हुआ शब्द यह सांचा। दस स्त्रियों को चिन्ता भेदी दस मास दहपाछ बीस पंख बाबू इनका पैर अगर खिसे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे ईश्वरी गोरा दिबाताला या गट पिंड का गुरु गोरखनाथ रखवाला शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति सत्य नाम आदेश गुरु का।

उपरोक्त मंत्र को 51 बार 51 दिन तक जपें, तो सिद्ध होता है। इसके बाद प्रयोग करें।

धन-हानि से सुरक्षा हेतु

व्यापारं अथवा दैनिक कार्य शुरू करने से पूर्व निम्न मंत्र का 208 बार जप करें, तो धन-हानि से सुरक्षा होती है और व्यापार-वृद्धि का लाभ भी प्राप्त होता है।

मंत्र इस प्रकार है—

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवसिन्यै महालक्ष्म्यै नमो नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई ना करो तो सात समुन्दर की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि खावोगी तो नौनाथ चौरासी की दुहाई।

स्त्री वशीकरण

रविवार के दिन प्रातःकाल शर्बत बनाकर पियें। रात को गुग्गुल की धूनी दें। बरफी और पान का भोग रक्खें। फिर इलायची, लौंग और सुपारी—इन चीजों का चूर्ण बनाकर, उसके ऊपर 244 बार निम्न मंत्र को पढ़कर फूंकें। अब जिस स्त्री को वश में करना हो, उसके पांव के नीचे की धूति लाकर उसमें थोड़ा-सा तैयार चूर्ण मिलाकर 51 बार अभिमंत्रित कर स्त्री के ऊपर डालें, तो वह वशीभूत हो जाती है।

मंत्र इस प्रकार है—

"मोहिनी मोहिनी कहां चली बरा खुदाई मका कांचली ओर देखें, जले बलै मेरे देख मेरे पायन पड़े छूमत काया बाचा गोरख का सबक सब सांचा सत नाम आदेश गुरु का।"

विष बन्धन मंत्र

गोरखनाथ तुम गुरु हम तोहार चेला।
"अमुक" अंग के विष बाधूं तेरी आन।।
आंवो रे विष हमारे कपड़े में आय।
बांधू विष बांधते घटि जाय।।
आदेश देवी मनसा माई। दुहाई विषहरि राई।।

उपरोक्त मंत्र को 31 बार पढ़कर अपने चादर के खूंट में एक गांठ लगावें, तो विष कम हो जाता है। उपरोक्त मंत्र को प्रयोग में लाने से पहले सिद्ध करना आवश्यक है।

दांत किटकिटाना

सागौर और काकड़ा सिंगी द्वारा दूध पकाकर उस दूध का **"गोरखनाथाय नमः।"** कहकर पांवों में लेप कर देने से रात को सोते समय बच्चों का दांत किटकिटाना बन्द हो जाता है।

पोते छिटकना

पूर्व दिशा में उत्पन्न सम्हालू की जड़ बच्चों के गले में **"जय गुरु गोरखनाथ तू ही जान"** कहकर पहना देने से पोते स्वयं अपनी जगह बैठ जाते हैं।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ धूतिधूरेश्वरी धूली माता परमेश्वरी जहां-जहां लगाऊं तहां-तहां लगे नहीं लगे तो राजा रामचन्द्र की आन।।

आरोग्यता के लिए

ॐ नमो खों खंगार खंगारन कहां गइले नन्दन वन चन्दन वन काटके। किसके सत्ताइस दुआरिया गड़े किसके सत्ताइस दुआरिया गढ़ के हूक काटों फोडा काटों आशा काटों बांसा काटों करो काट कूट के। पिता ईश्वर महादेव की शक्ति गुरु की भक्ति से झारो बलाई जात नहीं तो गोरखनाथ की दुहाई फुरै।

शिव का स्मरण करते हुए 31 बार इस मंत्र का उच्चारण करके फोड़े पर हाथ फेरकर फूंक मारनी चाहिए। इससे शीघ्र लाभ होगा।

पत्थरचूर की जड़ को तांबे के पात्र में भरवाकर चमकीले लाल डोरे से बांधकर बच्चे के गले में लटका देने से दांत निकलने में कष्ट नहीं होता और हरे-पीले रंग के पतले दस्त होना बन्द हो जाता है।

गले में बांधने से पहले 51 बार "जय गुरु गोरखनाथ तेरी आन" अवश्य कहें।

व्यापार में उन्नति हेतु

अग्रांकित यंत्र को भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिखकर व्यापार-स्थल पर



चिपकाने से व्यापार में समुचित उन्नति होती है। इस यंत्र को ताम्रपत्र पर भी उत्कीर्ण कराया जा सकता है। यह एक अनुभूत तुरन्त फलदायी यंत्र है।

वीर्य-पुष्टि एवं गर्भ स्तम्भन हेतु

67	74	2	8
7	3	71	80
73	1	9	1
10	13	9	11

उपरोक्त यंत्र को सोमवार के दिन (केवल शुक्ल पक्ष में) कुमकुम से अनार की कलम से लिखकर चांदी के यंत्र में डाल लें, इसके बाद गर्भवती स्त्री की नाभि प्रदेश में पहना दें। इस मंत्र के प्रभाव से गर्भपात तो होगा ही नहीं, साथ ही पुत्र सन्तति ही पैदा होगी।

मोहनी मंत्र

काली माई कामाक्षा देवी तहां बसे गोरखनाथ योगी, गोरखनाथ

योगी लगाओ बाग ते में फूले तीन फूल, एक फूल हंसता एक फूल बिहंसता एक फूल सखी के हृदय बसता जो सखी ले कलियों की बास, सो आवे हमारे पास हमें छोड़ जो हमसे जाये पेट मार आपन मर जाये हनुमन्त हने हनीटी भैरव हने लिलार नारसिंह की मोहनी जहां पठाई तहां जाये मूढ़े का तेल चूं चूं गिरे गिन गिन बांधे मेरे बान्धे न बंधे तो नारसिंह बैहया लावें बांध देखो रे नारसिंह बैहया तेरी शक्ति तेरे मंत्र की शक्ति मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गोरा पार्वती महादेव बैहया गोरखनाथ की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र से फूल को 21 बार अभिमंत्रित कर स्त्री को दें, तो वह वश में होती है।

वशीकरण मंत्र

कृष्णपक्ष के शनिवार को एक पुतली बनाकर उसके पेट पर साध्य स्त्री का नाम लिखें। 1108 मंत्र पढ़ पुतली को उस स्त्री को दिखावें और पुतली को अपनी छाती से लगाकर रक्खें, तो स्त्री बेचैन हो जावेगी।

मंत्र इस प्रकार है—

जंगल की योगिनी पाताल के नाग, उठ गए मेरे वीर "अमुक" को लाओ मेरे पास जहां-जहां जावे मेरे सलाई तहां-तहां लाज कजभरी अतासो अगरी एक-एक फूंक फिरो मंत्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाय वीर गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

अन्नपूर्णा मंत्र

दीपावली की रात को नग्न स्त्री की काली मिट्टी से मूर्ति बनाकर ऊपर कामिया सिंदूर चढ़ाकर धूप, दीप, पुष्प इत्यादि से पूजन करके निम्न मंत्र का 5121 बार जप करने से भण्डार भरा रहता है—

ॐ नमो गुप्त वीर मंजन सबको ठा यही तेरी आन गंगा की लहर जमुना की प्रवाण या कुठार राजा भण्डार राजा प्रजा लागे हैं पांच राती ऋद्धि लाओ तो नव नाथ चौरासी सिद्धि का पात्र भरो हमारा जो पात्र भरो हमारा जो पात्र ना भरो तो पार्वती का क्षीर चोखा हराम करो।

वशीकरण मंत्र

किसी भी ग्रहण में दस हजार जप करें फिर सुपारी इक्कीस बार पढ़ें जिसे खिलावें वह वश में हो।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमः उर्वशी काम निगारी शुची राजा प्रजा सब रहे पियारी। "अमुकि" को मंत्र पढ़ हृदय लगाऊं उठती-बैठती निज दासी बनाऊं मरे पर उसकी जान जाय मशान, बस न होवे तो गुरु गोरखनाथ की आन।

पागल कुत्ते के काटे का मंत्र

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कुत्ते ने जहां पर काटा हो वहां पर झाड़ें तो विष उतर जाता है।

ॐ नमो आदेश गुरु को आदेश कामरू देश का झावरा कुत्ता हुकन बुके सुषपसुसे शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र गुरु गोरखनाथ वाचा।

कार्य हेतु सिद्धि

किसी भी प्रकार के कार्य पर जाने से पहले निम्न मंत्र की तीन माला जप लेने से कार्य सिद्धि होने की प्रबल सम्भावना होती है।

इसके अतिरिक्त 51 बार सस्वर जप कर दोनों हथेलियों पर फूंक मारने और उन्हें मुख पर फेरकर कहीं जाने पर सम्मान प्राप्त होता है। वशीकरण के लिए मंत्र के बाद लड़की अथवा लड़के का नाम लेने से वशीकरण होता है।

मंत्र इस प्रकार है—

"सत्य नाम आदेश गुरु का, ॐ गोरख नाथाय नमः।"

कीड़े झाड़ने का मंत्र

"ॐ नमो कीड़ा रे तू कुण्ड कुंठिला। लाल पूंछ तेरा मुंह काला हम तोसे पूंछू से आया। तोड़ि मांस तू सब काहे खाया। अब जाय तू भस्म

होइ जाय। गुरु गोरखनाथ बाबा के लागू पांय। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

सर्वप्रथम मंत्र को उच्चरण करते हुए झाड़ा लगावें। घाव में पड़े कीड़ों का बेतरह नाश होगा।

उपरोक्त मंत्र को पशुओं के कीड़े झाड़ने के काम में भी लाया जा सकता है। यह मंत्र मेरा अनेक बार परिक्षित है।

जादू-टोना झाड़ने के लिए

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी को आदेश नजर काटो बजर काटो मुहूर्त में देकर पाप रक्षा करें जय दुर्गा मायी नरसिंह ओना टोना बहाय (अमुक) रोग सागर पार चला जाय आज्ञा हाड़िदासी चण्डी दुहाई। फुरो मंत्र गुरु गोरखनाथ वाचा।

सर्वप्रथम उपरोक्त मंत्र को ग्रहण, होली अथवा किसी अन्य शुभ नक्षत्र में सिद्ध कर लें। इसके बाद भूत-प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्तियों को पढ़ते हुए नीम की टहनी से 31 बार झाड़ें। इस प्रयोग से वह ठीक हो जायेगा।

मासिक धर्म में कष्ट हेतु

रात्रि के 12 बजे मूल नक्षत्र में हरताल से भोजपत्र पर निम्न मंत्र लिखें और स्त्री को पहना देवें, मासिक धर्म के समय कष्ट होना बंद हो जायेगा।

मंत्र इस प्रकार है—

अथ कृत्वां—नी कृत्वा भी ह्रीं किए—ह्रीं किम-ह्रीं भीं किम ह्रीं किम गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

गर्भ स्तम्भन हेतु

उपरोक्त मंत्र को भोजपत्र पर किसी भी शनिवार, शुक्ल पक्ष का शनि हो तब अधिक उत्तम है, 21 मर्तबा लिखकर गर्भवती स्त्री को पहना दें। गर्भपात नहीं होगा। इसके अतिरिक्त अगर किसी पशु को पहनाना है, तब निम्न यंत्र भैंस के चमड़े पर 31 बार लिखें और पहना दें। इसके प्रभाव से पशु को गर्भपात नहीं होगा।

यंत्र इस प्रकार है—

रवि—इन्द्र

जय गुरु गोरखनाथ
पुत्र हेतु

निम्नलिखित यंत्र को केवल गुरु पुष्य नक्षत्र में काली गाय के दूध से देशी पान के ऊपर अधिक से अधिक संख्या में लिखें, फिर वह पान गर्भवती स्त्री को खिलायें। पुत्र होने की सम्भावनाएं प्रबल होंगी।

यंत्र इस प्रकार है—

ॐ गोरखनाथ नमः।
........वि........
स्त्री का नाम

भण्डार-वृद्धि कारक मंत्र

ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्नपूरे, धृत पूरे गणेश, जो पाती पूरे ब्रह्मा-विष्णु-महेश। तीनों देवतन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का चालीस दिन तक प्रतिदिन 108 जाप कर सिद्ध करें, फिर भोज समारोह का जो भी सामान बना हो वे सब खाद्य वस्तुएं एक स्थान पर भण्डारगृह में थोड़ी-सी अछूती भोजन सामग्री निकालकर सुरक्षित रखें तथा माता अन्नपूर्णा व भगवान शंकर को भोग लगाकर उस सामग्री में से सभी थोड़ी-थोड़ी वस्तुएं लोटा, डोरी यह सब लेकर कुयें पर जायें। मंत्र को बार-बार पढ़ते रहें, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके थोड़ी सामग्री कुयें में अर्पित कर दें। फिर लोटे को डोरी के सहारें कुएं में पहुंचाकर एक हाथ से ही एक लोटा पानी भरकर बाहर निकालें, डोरी को खोलकर लोटे सहित सामग्री को लेकर घर लोट आएं। अब लोटे को भण्डारघर में रख दें व बची थोड़ी-सी सामग्री भोज रूप होने से पूर्व की जाने वाली पूजा में चढ़ाकर अपना पारम्परिक कृत्य पूरा कर अखण्ड दीपक जलावें, फिर इस मंत्र का 108 बार जप करें।

इसके बाद लोगों को भोजन करायें। इस प्रयोग से भण्डारघर में कोई कमी नहीं होगी।

दाढ़दर्द निवारक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। नौलख ओढे कामरी जहां बैठा गोपाल जमुना-गंगा-सरस्वती तहां ग्वाल अरु बाल, आये गोरख जति जी गौतम ऋषि के पास, दाढ़-दांत के दर्द को आवत होय विनाश आधी दियो धेनू की आधी संतन माही रोग दोष सबही तरै श्री हनुमंत सहाहि मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शीघ्र विवाह कारक मंत्र

शुभ मुहूर्त में एक मिट्टी की हंडिया लेकर आवें और उसमें एक लाल वस्त्र, सात काली मिर्च तथा सात नमक की साबुत डलिया रख दें और इसका मुंह अन्य कपड़े से बांधने के बाद कुल्हड़ पर सात कुमकुम की बिन्दिया लगावें तथा नीचे लिखे मंत्र की पांच माला जाप करें—

ॐ गोरी आवे शिवजी ब्यावे अमुक को विवाह तुरन्त सिद्ध करे, देवन करे जो देर होय तो शिव को त्रिशूल पड़े, गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरे।

पांच माला जप के बाद उस हंडिया को चौराहे पर रख दें। इससे विवाह में आने वाली बाधायें दूर होकर विवाह की सम्भावना बन जाती है।

उपद्रव नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, धरती में बैठया लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ अखन्ता जावन्ता धन्वता हांक देत धार धार मार मार शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंगलवार या रविवार में प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर पूर्वाभिमुख होकर 108 जप करें फिर आम की लकड़ी में इसी मंत्र का 108 बार उच्चारण करते हुए खीर की आहुति देकर हवन करें। इसके प्रभाव से कलह, विद्वेष, दुर्घटनायें आदि समाप्त होकर वातावरण शान्तिमय हो जाता हैं, यह प्रयोग केवल ग्यारह दिन तक करें।

अनाज में कीड़ा नहीं पड़े का मंत्र

ॐ नमो भगवऊ रिद्ध करी सिद्ध करी अणिमा महिमा ए धान सुलै तौ गुरु गोरखनाथ बालिनाथ अचल गुसाईं की आण।

21 दिन तक 108 जप कर सिद्ध करें। नदी के किनारे 21 कंकड़ों को अभिमंत्रित कर अनाज में रखें तो कीड़े नहीं पड़ें।

गर्भ स्तंभन मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, ॐ नमः आदेश अंग में बांधि राख नृसिंह यति भोसते बांधि राख, गुरु गोरखनाथ कांखते बांधि राख, हशलिया राजा सुण्डो से बांधि राख दृढ़ासन देवी यह मन पवन काया को राख थंभे गर्भ ओ बांधे घाव थामे माता पार्वती यह गण्डो बांधू ईश्वर यति, जब लग गण्डो कटि पर रहे तब लग गर्भ काया में रहे, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को ग्यारह दिन तक प्रतिदिन 108 जप कर सिद्ध करें। तदुपरान्त धागा बनाने के लिए पहले स्त्री की चोटी से एड़ी तक 7 बार सूत नापें और कुंआरी कन्या से इसे कतवाकर सात बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके सात बच्चों से गांठ लगवावें, इस विधि से गण्डे को जो स्त्री धारण करती है, उसका गर्भ सुरक्षित रहता है। धागा कमर में धारण करें, जब सन्तान होने का समय हो उस समय धागे को खोलकर चौराहे पर फिंकवा दें।

रोग निवारक मंत्र

बन में बैठी बानरी, अंजनी जायो हनुमंत। बाला डमरू बाधिनी बिलारी। आंख की पीड़ा। मस्तक पीड़ी चौरासी बाय बलि बलि भस्म हो जाए। पंके न फूटे पीड़ा करे तो जति गोरखनाथ रक्षा करे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

झाड़ू से अथवा मोरपंख से मंत्र का 31 बार उच्चारण करते हुए झाड़ा लगायें, निश्चय ही लाभ होता है।

पीलिया का मंत्र

ॐ इन्द्रबस इन्द्र की राणी, जल भर ला पाणी, झड़ो पीलिया गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

इक्कीस दिन तक धूप-दीपादि से पूजन कर प्रतिदिन मंत्र का 108 बार जप करें तो मंत्र सिद्ध हो। इसके बाद कांसे के पात्र में जल भरके नीम के पत्तों को सरसों के तेल में भिगोकर रोगी को इस मंत्र का 31 बार जाप करते हुए झाड़ें। अथवा गन्ने की जड़ अभिमंत्रित कर बांधें तो भी शीघ्र लाभ होता है।

व्यापारवर्धक शाबर मंत्र

ॐ शुक्ले, महाशुक्ले कमल दल निवासिनी श्री महालक्ष्मी नमो नमः। लक्ष्मी बाई सत की सवाई आवों चेतो करो भलाई, ना करो भलाई तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खगैतो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र को आरम्भ कर कम से कम 11 हजार जाप अवश्य करें। महालक्ष्मी का धूप-दीप नैवेद्यादि से पूजन करें।

दुकान जब खोलें तब गद्दी पर बैठकर उपरोक्त मंत्र की एक माला जप कर लेवें।

झाड़े का मंत्र

अग्रलिखित मंत्र पढ़ते हुए मोरपंख के गुच्छे अथवा खुले चाकू से झाड़ा लगावें। इस मंत्र के प्रभाव से अनेक प्रकार के रोगों एवं उपद्रवों की शांति होती है—

गंगा पार बबुर के गाछी।
झड़े कीड़ा झड़े रसोई।।
ईश्वर महादेव, पार्वती गुरु गोरखनाथ की दुहाई।
अद्धौदय बेला सात गोटि पड़ी मारे न रहे।।

थन-थनैला झाड़ने का मंत्र

निम्न मंत्र को पढ़ते हुए स्त्री का स्तन झाड़ने से थनैला रोग समाप्त होता है। मंत्र पढ़ते समय धीरे-धीरे स्तनों पर हाथ भी फेरें—

कंप विलारी वध थनैला पांचवान माहि भैरों दैल कंप विलारी बध थनैला डावा पलट जा घर अपने राजा मनैरी की दुहाई जोड़ावार हे गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

भूत-प्रेत झाड़ने का मंत्र

नयन नागरी पाय घाघरी नदी च काना च काना पहुंच रे नागरे मसाना जात नहीं जतन नहीं दैत्य मसान इसी वक्त उतरून जाय ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

किसी को भूत-प्रेत लगे हों तो उपरोक्त मंत्र को पढ़कर 108 बार झाड़ देने से आराम हो जाता है।

आई आंखें झाड़ने का मंत्र

काली कलकत्ते वाली जय हनुमान जय हनुमान जय चालीसा मेरे गुरु गोरखनाथ की दुहाई। इसी वक्त आंख का रोग चला जाये मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र से 31 बार फूंक मारें, दुखती आंखें ठीक हो जायेंगी।

पुतली का मंत्र

जंगली की योगिनी पाताल के नाग उठ गए मेरे वीर (उस स्त्री का नाम) लाओ मेरे पास जहां-जहां जाए मेरे सहाई तहां-तहां आब कजभरी नजभरी अन्तासों अगरी तक नफे एक फूंक फिरो मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाये वीर गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र की पुतली पर 1108 बार जप करें और मंत्र पर पुतली में एक फूंक मारें तो कार्य सिद्ध होगा। कार्य सिद्ध होने के बाद पुतली को श्मशान में गहरे दबा दें।

जादू-टोना हटाने का मंत्र

जय काली कलकत्ते वाली जय हनुमान जय चालीस तेरा वचन न जाये खाली, अपनी चीज अपना मिल जाये, धरती खोल सुर पाय नखमा खो अपना सो पाई तेरे गुरु का वचन न सुहाई, इसी वक्त जादू-टोना यहां से भग जाई, मारूं हांक गुरु गोरखनाथ की हांक ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।

बाधाग्रस्त के ऊपर से उपले की राख उतारकर बहते जल में प्रवाहित कर दें, 31 बार उतार कर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए।

मोहिनी मंत्र

जती हनुमंत कनेरी मेरे घट पिण्ड का कौन है वैरी छत्तीस पवन मोहि-मोहि जोहि-जोहि दह-दह मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा सत नाम आदेश गुरु का।

चौराहे से 11 कंकड़ी लाकर, पनघट के कुएं पर जाकर उन कंकड़ियों को मंत्र द्वारा 108 बार अभिमंत्रित करके उसी कुएं में डाल दें। उस कुएं का पानी जो भी पियेगा, वह वशीभूत होगा।

कष्ट देने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ को लाल पलंग नौरंगी छाया काढ़ि काढ़ कलेजा तूही चख।

चौका लगाकर उस पर दीपक रखकर जलायें तथा 21 बार **"आओ हनुमान जी"** कहें। फिर 21 बार **"आओ कलुआ वीर रणधीर"** कहें। फिर गुग्गुल की धूनी देकर भोग रक्खें। इस क्रिया को नित्य करते हुए 22 दिनों तक प्रतिदिन 10000 की संख्या में उक्त मंत्र का जप करें तथा जप के अन्त में घृत में लौंग, सुपारी, जायफल, गुग्गुल तथा मिश्री का चूर्ण मिलाकर 1126 बार मंत्र पढ़कर अग्नि में 1126 आहुति दें। 21 दिनों के बाद यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद 21 दिनों तक नित्य 3 माला मंत्र का जप करते रहने से कष्ट प्राप्त होता है।

तलवार बांधने का मंत्र

ॐ नमो धार अधर धार बांधूं सात बार कटे न रोम न भीजे चीर खड़े की धार लेकर हनुमान शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ उवाचा।

रास्ते की धूल पर मंत्र पढ़कर तलवार पर मारें, तो धार समाप्त होगी।

शरीर-रक्षा का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को वज्र वज्रो वज्र किवाड़ वज्रो में बांधा दशों

द्वार को घाले उलट वेद बाही को खात, पहली चौकी गणपति की दूजी चौकी हनुमंत की तीजी चौकी भैरों की चौथी राम रक्षा करने को श्री नरसिंह देव जी आये शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यमान आदेश गोरखनाथ का।

उपरोक्त मंत्र से साधक की रक्षा होती है। मंत्र को पढ़ते समय शरीर पर बार-बार फूंक मारें।

भूत-प्रेत पर झाड़ा

कंकाली-कंकाली कहां चल कजरी वन कजरी वन काहे का चन्दन वृक्षा काटे का चन्दन वृक्षा काहे का काला कोयला करेगा काला कोयला काहे का छपन्न छुरी गढ़ेगा। छप्पन छुरी काहे का नजर काट टोना काट टायर काट मटिया मसान जादू-टोना भूत-प्रेत अलाय बलाय और "अमुक" रोग को काटकर कूटकर खारी समुद्र में न बहाये तो माता काली कंकाली न कहाये दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

इस मंत्र को पढ़ते हुए मोरपंख अथवा खुले चाकू से 108 बार झाड़ें।

गर्भ रक्षा मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का हनुमंत वीर गम्भीर धूजे धरती बंधावे धीर बांध बांध हनुमंता वीर मास एक बांधू, मास दोई बांधू, मास तीन बांधू, मास चार बांधू, मास पांच बांधू, मास छः बांधू, मास सात बांधू, मास आठ बांधू, मास नौ बांधू, अमुकी गर्भ गिरे नहीं ठांह रहे, ठांह का ठांह न रहे मेरा बांधा बंध छटे तो ईश्वर महादेव गोरखनाथ जती हनुमंत वीर लाजें मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उक्त मंत्र में जहां "अमुकी" शब्द आया है, वहां गर्भवती स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

एक डोरे में मंत्र को पढ़कर गर्भवती की कमर में बांधें। जहां "अमुकी" शब्द आया है वहां गर्भवती स्त्री का नाम लें।

शत्रुता शमन मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ का बैरी बांधू जोग फैले वाके घर में रोग कभी न आवें आगे तेरे गुरु के मंत्र फिरेंगे रक्त बिन्दु की बांधू धारा अम्बर बांधू बांधू तारा मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरे मंत्र सांचा पिंड कांचा ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को मंगलवार के दिन से आरम्भ करना चाहिए और 31 दिन तक प्रतिदिन 1108 बार जप करें। प्रतिदिन लड्डुओं का भोग लगाकर बच्चों को बांटें। इस प्रकार करने से शत्रु स्वयं ही झुकेगा।

विष झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का क्यों रे बीछ तें को काट्यो गोद गिरी मुख चाख्यों में काठाने पानी प्याऊं का क्यों उतर जाये उतरे तो उतारूं चढ़े तो उतारूं चढ़े तो मारूं नातर गरुड़ मोर हंकारूं लंका सो कोट समुद्र-सी खाई उतर रे बीछ गोरखनाथ की दुहाई शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र द्वारा पानी को 31 बार अभिमंत्रित करके उसे पृथ्वी पर गिरा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

बिच्छू का विष झाड़ने का मंत्र

सुरही कारी गाइ गाइ की चमरी पूछी ते करे गोबरे बिछी बिआइ बीछो तोरे कई जाति गोरवर्ण अठारह जातिछ कारीछ पीअरीछ भूमाधारीध रत्न पवारी छ छ कुं है कुं हुं छारि उतरू बीछी हाड हाड पीर पीर ते कसमारे लीलकंठ गरमोर गोरखनाथ की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई अनीत टेहरी शडार बन छाई उतरहि बीछी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमंत की।

उक्त मंत्र को पढ़ते हुए झारा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

कण्ठ मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ की धाई करई का चलता करता वज्र वेदन ओ उः उः।

इस मंत्र से अभिमंत्रित कोई भी वस्तु कण्ठ पर लगावें।

भूत-प्रेत बोलने का मंत्र

ॐ धों-धों ध्यान करता अलख यति हांक देते हां कार तथा लत बोल-बोल शब्द सांचा।

लहसुन के रस में हींग मिलाकर जिसको भूत-प्रेत लगा हो उसको लगाएं तो वह बोले।

देहरक्षा का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को ओं अपर केस विकट भेस खंव पत प्रहलाद राखे महादेव जी को कोई इह पिंड प्राण को छड छेवे तो देवदाना भूत-प्रेत डाकिनी-शाकिनी गंडताप तिजारी जूडी एक पहरू द्वे पहरू शांक को सवारा को काजा को कराया, कराया को उलट वाही के पिंड पर पड़े इस पिंड की रक्षा श्री नृसिंह जी करे शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

इस मंत्र से गंगाजल को 31 बार अभिमंत्रित करके पिला दें, सब प्रकार के रोग-शोक आदि से रक्षा होती है।

विषहरण मंत्र

धर पकड़ धसनि धसनि सार, ऊपर धसनि विष नीचे जाय, काहे विष तू इतना रिसाय, क्रोधं तो तोर होय पानी हमारे थप्पर तोर नहीं टिकाना आज्ञा मनसा माई की दुहाई मारूं हांक गुरु गोरखनाथ की हांक ईश्वर गोरा पार्वती महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए, एक थप्पड़ मारें, तो सर्पकाटे व्यक्ति के विष की शान्ति हो जाती है। इसके बाद चिकित्सा हेतु अवश्य ले जावें।

ततैया के काटने पर

आन ततैया मान ततैया कोदन की दुहाई ततैया हनुमान ने कही मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

लोहे की कील से 31 बार झाड़ा देवें, तो ठीक होवे।

चलने में थकान न हो

निम्न मंत्र का 11 हजार जप करें तो मंत्र सिद्ध होगा। फिर सरसों का तेल आंच में पकावें। उस तेल को सिर में, नाक में, कान में और पूरे शरीर में लगाने से चलने में कभी भी थकान न होगी।

तैल थामो तैलाई थाबों अग्नि वैसदर थांभो पांच पुत्र कुती के पांच चले केदार अग्नि चलेते हम चले गोरखनाथ के द्वार।

सर्पभय से रक्षा के लिए

गोरख जले परदेश कुतक मन में भावे बांध बांधू वधाइन बांधू बांध के सातों बच्चा बांधू सोंपा चोरा बांधू दांत बंधाऊ वाट बांधि दऊ दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

प्रयोग से पूर्व इसकी सिद्धि आवश्यक है जो 1108 मंत्र के जप से मंगलवार को होती है। फ़िर मार्ग में जहां भी सर्प या व्याघ्र मिले, उपरोक्त मंत्र का 9 बार उच्चारण करके फूंक मारें। हिंसक पशु अपना मार्ग बदल देंगे।

समस्त शरीर में पीड़ा होने पर

उस पार से आती बुढ़िया छुतारी तिसके कांधे पै सरके पेटारी वह पेटारी कौन कौन शर वाण सु-शर, कु-पोरा शर समान। अमुक के अंग को व्यथा तन पीर। लवटि गिरे उसके कलेजे तीर आज्ञा पिता ईश्वर महादेव की दुहाई फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

अमुक के स्थान पर रोगी का नाम लेकर अनामिका अंगुली से नमक को 31 बार अभिमंत्रित करके फूंक मारें और रोगी को खिलावें तो दर्द शांत हो जायेगा।

ॐ नमो, सत्तर सौ पीर, चौसठ सौ योगिनी, बावन सौ बहत्तर भैरव, तेरह सो तंत्र, चौदह सौ मंत्र, अठारह सौ पर्वत, नौ सौ नदी, निन्यानवें सौ नाला, हनुमान यति गोरखनाथ रंखवाला, कांसे की कटोरी अंगुल साठ चौड़ी कहो वीर कहां ते चलाई गिरनार पर्वत से चलाई अठारहभार वनस्पति चले सोना चमारी को वाचा फुरो कानो कुम्हारी चाक ज्यों फिरे कहां कहां जाय चोर के जाय चांडाल के जाय चोर चांडाल को ले आये गड़ी

धन बताय चाल चालरे हनुमंत बीर जहां चले तहां रहे न चले तो गंगा-यमुना उलटी बहें।

कण्ठबेल का मंत्र

ॐ नको कण्ठबेल तू दुम दुमारी। सिर पर जकड़ी वज्र की ताली। गोरखनाथ गाजता आया। बढ़ी बेलि को तुरन्त घटाया। जो कुछ बचो ताहि मुरझाया। घाटि गई बेल बढ़े नाहि पावे। बैठि तहां उठन नाहि पावे पके फटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को इक्कीस दिन तक प्रतिदिन 1108 मंत्र जप धूप-दीप नैवेद्य सहित एकाग्र मन व श्रद्धाभाव से करें। इस मंत्र का 31 बार उच्चारण करते हुए रोगी को मोरपंख से झाड़ना चाहिए।

कुश्ती जीतें

अगर कभी अखाड़े में उतरना हो या कुश्ती करनी हो और इसमें जीत पाने की आशा कम हो अथवा आशा ही न हो तब किसी कौवे को मार करके उसकी चर्बी निकाल लें और उसे अपनी दोनों हथेलियों तथा दोनों पांव के तलुओं में मल लें। इसके बाद अखाड़े में **'ॐ गुरु गोरखनाथ नमः'** कहते-कहते जायें, तब अवश्य जीत होती है।

ज्वर पर झाड़ा

दोऊ भाई ज्वर सुरा महावीर नाम।
दिन राति खटि मरे महादेव के ठाम।।
कूर छुदसे छत्तिस रूप मुहूर्तमों धराय।
नाराज नामूक के घर दुआर फिराय।।
ज्वाला ज्वरपाला ज्वरकाला ज्वंरविशा की।
दोह ज्वर उभा ज्वर भूता ज्वर झूमकि।।
घोड़ा ज्वर भूता तिजारी ओ चौथाई।
सबन को भंग घोटन शिव ने बुझाई।।
यह ज्वर-ज्वर सुरा तू कौन और तकाव।
शीघ्र अमुक अंग छोड़ तुम जाव।।

यदि अंगन में तू भूलि भटकाय।
तो गुरु गोरखनाथ के लागा तू खाय।।
आदेश कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ि दासी चंडी की दोहाई।।

रोगी का मुख उत्तर की ओर करके 31 बार मंत्र का उच्चारण करके रोगी को झाड़ें। हर प्रकार के ज्वर की प्रवृत्ति होती है।

पीलिया पर झाड़ा

एक कांसे की धातु की कटोरी में तेल लेकर रोगी के सिर पर रखें और कुशा से उस तेल को चलाते हुए अग्रांकित मंत्र को 31 बार पढ़ें। इस प्रकार पीलिया ठीक हो जाएगा—

ॐ नमो वीर वेताल इसराल, नार कहे तू देव खदी वादी।
पीलिया कूं भिदाती कारें, झाड़े पीलिया रहे न नेक।
जो कहीं रह जाये तो हनुमंत की आन।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।।

गर्भ स्तम्भन मंत्र

गौरा काते ब्रह्मा बुने ईश्वर गांठी देय बिन पाके फूटे भुइयां गिरे तो राजा रामचन्द्र तुम्हारे मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर सात गांठें लगाएं और स्त्री के गले में बांध दें, तो गर्भ स्तम्भन होगा।

ओले हांकने का प्रयोग

काली बिलइया लजबत पूंछ, उस पर बैठा हनुमंत वीर इसी वक्त पहाड़ ही पहाड़ नदी ही नदी चली जा मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गुरु गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

जब कभी ओले गिरने लगें तो सात ओले उठाकर और अपनी अनामिका अंगुली का रक्त निकालकर उपरोक्त मंत्र से ओलों को बांधकर नदी की ओर फेंक दें, तो फिर ओले नहीं गिरेंगे।

रोग निवारण

निम्नलिखित मंत्र से रेत को अभिमंत्रित करें। उस मंत्र की कम-से-कम इक्कीस माला जपनी हैं। इसके बाद रेत से सारे शरीर का स्पर्श करावें। रोग-शोक का निवारण होगा।

महादेव कुक्कर लुटे-लुटे कान मोरे निकट आवहु सुनि आवे लोहनपह रक्षा करे गोरखनाथ गुरु।

घाव न होवे

साबुत काले उड़द निम्न मंत्र से अभिमंत्रित करके शरीर पर मारें। घाव नहीं होगा।

काले तिल कवेला तिल गुजरी बैठी बीर पसारै सुई न बेधे माधाई पीर न आवे काली करूइमती भारी दुष्य तिब्रकी लार अवनी बाकों सुई अषषाडें की धार आवे न लोहू न फूटे घाव रक्षा करे गुरु गोरखनाथा।

आंख झाड़ने का मंत्र

सोने की सिलौटी रूपे का जीरा सीता माता बाटे बैठी छर काटें छर बांटे, फूली काटे, माड़ा काटें, लाली काटे, आंखी न काटे होरा काटे मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती गोरखनाथ की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए रोगों की आंखों में 31 बार फूंक मारें, आराम होगा।

गोरख मुण्डी गोखरू और बिनौला को गाय के पेशाब में मिलाकर सुखाकर भूत-प्रेत ग्रस्त रोगी को इसकी धूनी देने से भूत-प्रेतग्रस्त रोगी के भूत भाग जाते हैं।

आंचल झाड़ना

ऊंची-नीची टेकड़ी किसन चरावे गाय, आंचल झाड़े आपनो पीर पराई आये इसी वक्त "अमुक" बाई का स्तर का कोड़ा सूख साख भस्म हो मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

जिस स्त्री के आंचल में जिस आंचल में फोड़ा हो गया हो उसका नाम पूछ लें। फिर अमुक के स्थान पर उस स्त्री का नाम लेकर अपने विपरीत आंचल से राख उतारकर 31 फूंक मार दें, आराम हो जायेगा।

स्तन में फोड़े का मंत्र

ऊंची पीपर जरजरों गैया चरै नौ सौ साठ आंचल का फोड़ा सूख साख इसी दम भस्म हो मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

जिस स्त्री के किसी स्तन में फोड़ा हो गया हो तो अगर उसका दायां स्तन है तो उसके दायें स्तन के ऊपर से उपले की राख उतरवाकर अपने विपरीत स्तन याने बायें स्तन से उतारकर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए उस राख में 31 बार फूंक मार दें, सूख जायेगा।

कुसका झाड़ना

कारी छेरी करगेहीं करिया बैठी चोर, गोरा कहें महादेव से करिया को मार निकालो चोर। मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपले की ताजी राख से उपरोक्त मंत्र द्वारा 31 बार फूंक मारें, ऐसा दो समय करें।

सर्प-विष झाड़ने का मंत्र

परछले बदरिया अन्धेरी रतिया, सांप-सांपिन तू कौन-कौन जतियां। डड्नी खेले झाडू बाई और जितना विष सब रहे पांव की ओर। आदेश विषहारी रानी के विष चल जाये न रहे विष माता मनसा की दुहाई। मारूं हांक ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपले की राख से सर्पकाटे व्यक्ति को 31 बार उपरोक्त मंत्र को पढ़कर झाड़ें।

टिड्डी बांधने का मंत्र

"अज्र बांधू बज्र बांधू बांधू दशो द्वार लोहे का कोड़ा ठोके हनुमान, गिरे धरती लागे घाव सब टिड्डी भस्म हो जाये, बांधू नाला ऊपर ठोकू बज्र का ताला नीचे भैरव किलकिलाय ऊपर हनुमन्त गाजें जो हमारे सीऊं में दाना-पानी खाबे तो दुहाई राजा अजय पाल की फिरे हांक गुरु की हांक ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्रों से चावलों को अभिमंत्रित कर खेत और खलिहान में छींटे मारें और लोहे की कीली को अभिमंत्रित करें, चारों कोनों में गाड़ दें, तो टिड्डी भाग जाती हैं।

सर्प खोलने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का कीलन भई के कलनसा भये कुबाब जाओ सांप चुगन फिरने चौमासा दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खंड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

उपरोक्त मंत्र से अपने बायें पैर की कंकरी को उठाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सर्प की तरफ फेंकने से सर्प खुल जाता है।

सर्प बन्धन

बज्र किकर बजरा कीलू आस-पास सर्पा मेरे होय छार मेरा बांधा पत्थर बंधे पत्थर फूटे न बाधा छूटे दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

उपरोक्त मंत्र को सात बार पढ़कर अपने बायें पैर से कंकरी उठाकर सर्प की तरफ फेंकें तो सर्प बंध जाता है और वह वार नहीं कर पाता है।

भूत-प्रेत बाधा में

निम्नलिखित मंत्र का जाप करें और समय-समय पर इस मंत्र से झाड़ा देवें और अभिमंत्रित जल भी पिलावें।

मंत्र इस प्रकार है—

"ॐ चैतन्य गोरखनाथ नमः।"

दुखती आंख ठीक हो

समुद्र में खाई इस मर्द की आंख आई, पाके न फूटे करे न पीड़ा गुरु गोरखनाथ राखे पीड़ा मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।

सर्प-विष बन्धन मंत्र

दूकर बंध बांधू तिकर बंध बांधू चौथा बंध बांधू पांचवां बंध बांधू छिटवा बंध बांधू सौ बरस का बंध बांधू मेरे बंध से बंध जा माता कूद की आन मेरी आन मेरे गुरु क़ी आन ईश्वर गौरा पार्वती गोरखनाथ की दुहाई।

अगर किसी व्यक्ति को सर्प काट ले और आपको यह खबर लगे कि फलां जगह पर "अमुक" व्यक्ति को सर्प ने काटा है तो तुरन्त ही पहुंचकर उस व्यक्ति के दंशित स्थान से ऊपर बंध बांध देना चाहिये। फिर उपरोक्त मंत्र को पढ़कर 108 बार झाड़ा देवें।

घाव भरने का मंत्र

सार सार विजय सार सार बांधू सात बार फूटे बन्न प उपजे घाव सीर राखे श्री गोरखनाथ शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र पढ़ें फिर घाव पर फूंक दें तो घाव भरेगा, पीड़ा न होगी।

बगल की गांठ बैठाने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को ग्रहण के समय 101 माला जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए तथा जहां बैठकर झाड़ा दिया हो उस स्थान की मिट्टी बांध देना चाहिए। तीन दिन में कंखराई की गांठ बैठ जायेगी।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो कंखराई भरी तलाई जहां बैठा हनुमन्ता आई पके न फूटे न फूटे न पीड़ा रक्षा करे हनुमन्त वीर दुहाई गोरखनाथ की शब्द सांचा पिण्ड कांचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु का।

ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ का ॐ ऊपर के सविकट मेष स्वभपति प्रहलान खावे पाताल राखे पांच देवी जंघा राखे कालिका मस्तक राखे महादेवी जी कोई ये पिंड प्रण को बेधे तो देव-दानों भूत-प्रेत डाकिनी-शाकिनी गंडमाला तिजारी एक पहरू सांझ को सवेरे के लिए कराये को वाहि के पेड़ इसकी रक्षा गोरखनाथ करेंगे शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को 31 बार पढ़कर रोगी को झाड़ दें तो अच्छा हो जायेगा।

गर्भ की सुरक्षा हेतु

ॐ नमो गंगा डाकरे गोरख बलाय धीपर गोरख यती पूजा जाये जयद्रथ पुत्र ईश्वर की माया।

उपरोक्त मंत्र द्वारा गण्डा बनाने के लिये कुमारी कन्या द्वारा काते हुए सूत को 31 बार इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। अगर गर्भ के गिरने की आशंका हो या रक्त प्रवाहित हो रहा हो तो भी इससे लाभ होते देखा गया है।

गर्भपात न हो

ॐ नमः आदेश गुरु को ॐ नमः आदेश अंग में बांधि राख, नृसिंह यती मोसते बांधी राख, श्री गोरखनाथ कांखते बांधि राख हूपलिका राजा सुण्डो से बांधि राख दूढ़ासन देवी यह मन पवन काया को राख थमे गर्भ ॐ बांधे घाव थामे माता पार्वती यह गंडो बांधू ईश्वर यती, जब लग डांडो कट पर रहे तब लग गर्भ काया में रहे, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

गर्भिणी की कमर में डोरा बांधने का विधान यह है कि पहले स्त्री की पूरी लम्बाई तक 7 बार सूत नापें और 31 बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके 7 गांठ लगावें। इस विधि से बनाये गये गण्डे को जो स्त्री कमर में धारण करती है, उसका गर्भ सुरक्षित रहता है।

स्त्री के पैर थामने का मंत्र

गौरी गंडा दे गई ईश्वरी दे गया वाचा महादेव थापा घर गयी हुआ शब्द ये सांचा। दश त्रिया की चिन्ता मेंटी दशमासा बांधू बीस पाख बांधे इसका पैर खिसे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे ईश्वरी गौरा दियो तालवा घट पिण्ड का गुरु गोरखनाथ रखवाला शब्द सांचा पिण्ड कांचा गुरु गोरखनाथ रख शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति सत्य नाम आदेश गुरु का।

31 बार जपकर सूत का गण्डा बनाकर बांधें, तो पैर थमे। इस मंत्र को ग्रहण के दिन जप कर सिद्ध कर लें।

पशुओं के कीड़े झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो कीड़ारे तू कुण्ड कुण्डाला लाल पूंछ तेरा मुंह काला मैं तोय बूझा कहां से आया, लो ही तैने सबका खाया, अब तू आप भस्म हो जाये, गुरु गोरखनाथ कर सहाय।

उपरोक्त मंत्र द्वारा नीम की टहनी से 31 बार झाड़ा लगाने से कीड़ा मर जाये।

नजर दूर करने का मंत्र

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु का। ॐ नमो नजर जहां पर पानी जानी बोले छलसों अमृत वानी कही नजर कहां से आई, यहां की ठोंर तोय कौन बताई कौन जाति तेरी कहा ठान, किसकी बेटी कहां तेरो नाम, कहां से उढ़ी कहीं की जाय अब ही वास कर ले तेरी माय मेरी जात सुनो चितलाय जैसे होय सुनाऊं आय तेलिन तमोलिन चूहड़ी चमारी कायस्थी खतरानी कुम्हारी महत रानी राजा को रानी जाको दोष वाहे के सिर पड़े गोरखनाथ रक्षा करें, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए, मोरपंख के गुच्छे से रोगी को सिर से पैर तक 31 बार झाड़ा लगावें।

चोर का पता चले

ॐ नमो नरसिंह बीर ज्यू ज्यूं तेरी चले पवन चले पानी चले चोर-चित्त चले थहराय चोर ही चाले कथ माया परू करे वीर या नाथ की पूजा मंत्र टेले तो गुरु गोरखनाथ की आज्ञा न चले तो चौरासी सिद्ध का आदेश मिटे।

सन्ध्या के समय कटोरी में चावल लें और उसे उपरोक्त मंत्र से 201 बार अभिमंत्रित करके किसी तुलसी के पौधे में सुरक्षित रूप से रख दें और उसकी सुरक्षा के लिए पूरी रात वहां रहकर जागते रहें, प्रातःकाल संदेहास्पद व्यक्तियों को चावल खिलावें। चोर का पता चल जावेगा।

घाव के लिए

ॐ नमो सार सार विजय सार संसार बांधू सात बार बैड़े अंग न उपजे घाव सिर राखे श्री गोरखनाथ।

किसी भी शस्त्र से घाव हो गया हो तो उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण करके फूंकें, तो घाव भरने लगता है।

कष्ट की निवृत्ति के लिए

ॐ नमो खों खंगारन खंगारन कहां गइले नन्दन वन चन्दन वन काट के। किसके सत्ताइस दुअरिया गढ़े किसके सत्ताइस दुअरिया गढ़ के हूक काटो फोड़। काटो फुट की काटो काशा काटो बांसा काटो करो काट कुट के पिता ईश्वर महादेव की शक्ति गुरु की भक्ति से झारों वलाई जात नहीं तो गोरखनाथ की दोहाई फिरै।

उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण करके चोट के स्थान पर फूंक मारते हुए धीरे-धीरे हाथ फेरें।

सरसों द्वारा वशीकरण

कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसे इस्मायल योगी चल रे सरसों कामरू जाई जहां बैठी बुढ़िया छुतारी माई भेजूं सरसों उसके खप्पर कर रे सरसों अमुकी को वश कर न करे तो गुरु गोरखनाथ बंगाल खंड कामरू कामाक्षा देवी इस्मायल योगी लजाये।

उपरोक्त मंत्र से 31 बार सरसों को अभिमंत्रित कर जिस स्त्री को मारें, वह वशीभूत हो जाती है।

धूल द्वारा वशीकरण

धूल धूल तू धूल की रानी जगमोहन सुन मोरी बानी जल से धुला आन पढूं तब पार्वती के वरदान धूलि पढ़ दूं अमुको अंग आकर रहें फलाने संग मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती गोरखनाथ की दुहाई।

जिसे वश में करना हो उस स्त्री के बायें पैर की धूल और श्मशान की भस्म उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर किसी स्त्री के शरीर पर डाल देने से वह वशीभूत हो जाती है।

रतौंधी के लिए

ॐ भाट-भाटिनी निकली कहे चलि जायो उस पार जाइब जाइब हम जाऊ समुद्र पार। भाटिनी बोली हम बिआइब उसको छाली बिजाइव हम उपस माछी पर मुंडा मुंडा अंडा सोहिला तारा तारा अजय पाल राजा उतर रहे पार, अजय पाल रानी भरत रहे मसकतार यह देख गोरखनाथ बोला गोढ़िया मेला उजाढ़ तैके हम अधोखी जाय रतौंधी ईश्वर महादेव के दुहायी उतरि जाय।

कीड़ा झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो कीढ़रे तु कुण्ड कुण्डाला, लाल पूंछ तेरा मुख काला, मैं तोहि पूछूं कहां ते आया, तोड़ मांस सबको क्यों खाया, अब तू जाय भस्म हो जाय, गोरखनाथ के लाग पाय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए नीम की डाली के माध्यम से 31 बार झाड़ना चाहिए। इससे कीड़े मर जाते हैं।

दांत का कीड़ा झाड़ने के लिए

ॐ नमो आदेश गुरु को वन में।
ब्याही अंजनी, जिन ज़ाया हनुमन्त।।
कीड़ा मकड़ा माकड़ा, से तीनों भरमस्त।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।।

इसका शुभारम्भ दीपावली से करना चाहिए। मंत्र सिद्ध होने पर नीम की डाली से झाड़ने पर कष्ट समाप्त हो जाता है। अगर इस मंत्र का उपयोग करते हुए कटाई के बीजों का धुआं दांतों में दें तो कीड़े भी निकल जाते हैं।

टिड्डी को बैठाने का मंत्र

अगर उड़ती हुई टिड्डियों को बैठाना हो तो निम्नलिखित मंत्र का प्रयोग करना चाहिए—

ॐ नमो आदेश गुरु को अजर कीलनी वज्र का ताला, कीलू टीडी धरू मसान, धर मार धरती सों मार सवा अंगुल पांख धरती में गड़े, ऊपर मोहम्मद वीर की चौकी चढ़े, पथ धरता चाटे खाड़, बायें हाथ में ल्हे हाथ में उठाव, मेरा गुरु उठावे तो उठावे और चक्रसों उठे तो दुहाई गोरखनाथ की फिरे आदेश गुरु को।

गले के रोग में तेल मंत्र

आकाश तेल पाताल तेल मुंह में बाप लगाये तेल सियाल सिन्दूर सिग्गी हीरे फिराय आशा देवी मन्सामाई, आशा विषहारी राई की दुहाई, इसी वक्त गल गण्ड रोग चला जाए मेरी आन गुरु गोरखनाथ की आन ईश्वर गौरा महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र से 31 बार शुद्ध नारियल के तेल को अभिमंत्रित कर, गले में लगावें, तो गले का रोग नष्ट हो जाता है।

अग्नि स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो जल बांधू जलवाई बांधू बांधू तूवा ताई, नोसे गांव का वीर बुआऊं रहो रहो रे कड़ाही, गुरु गोरखनाथ।

इस मंत्र को पढ़ते हुए झाड़े की दुहाई दें। इस मंत्र से अग्नि का स्तम्भन होता है।

तेल द्वारा स्तम्भन

निम्नलिखित मंत्र को 21 बार पढ़ने से कोल्हू से तेल निकलना बन्द हो जाता है—

"तले थांभो तेलाई थांभो अग्नि बैसंदर थांभो पांच पुत्र कुन्ती के पांचों चले केदार अग्नि चलते हम चले अगिया परो तुषार।"

कड़ाही स्तम्भन

बन बांधो बन में दिनि बांधो बांधो कंठाधार तहां थां भी तेल तेलाई और थां भी बैसंदर छार। बन में प्लुशीतल ताते लावे जय पार ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनि अचलकेदार देवी-देवी कामाक्षा की दुहाई, पानी पंथ होई जाइ।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए कोई वस्तु कड़ाही पर मारें। स्तम्भन होगा।

दांत-पीड़ा में

ॐ नमः आदेश गुरु गोरखनाथ की सवारी में शीशी, शीशी में मीची, मीची में सूड़ा, मसूड़ा में पीड़ा कीड़ा मरे पीड़ा टरे फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का प्रयोग रविवार के दिन किया जाता है। पांव लोहे के कांटों के द्वारा 21 बार झाड़ें, उनमें से 9 कांटों को कुएं में डाल दें और दूसरों को खट्टे जल से भिगोकर नीम में गाड़ दें, शेष तीन प्रवाहित कर दें। इस प्रक्रिया से दांत-दर्द की निवृत्ति होती है और अगर दांतों में कीड़े हों, तो वे मर जाते हैं।

मुख बंधन हेतु

निम्नलिखित मंत्र 31 बार पढ़कर शत्रु की ओर फूंक मारें। मुख बंधन होगा—

बांधो तूपक अवनि बार न धरै चोट न परे धाव रक्षा करे गुरु गोरखनाथ।

चौकी देने का मंत्र

दिन की रक्षा करें सूर्य देव रात की धरती माई, लोहे का कोट तांबे की खाई, अब चौकी बजरंग की आई, दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

जहां भी चौकी देनी हो, वहां राई को अभिमंत्रित कर जितनी जगह में चौकी देना हो उतनी जगह के चारों ओर डाल देवें, तो कोई भय नहीं रहेगा। इसके बाद उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए चौकी देवें।

दूध सूखने पर दूध उतारने का मंत्र

अपटवीर झपटवीर हार हार के मरघट के मसान के नटखट ईशान के हाड़ हाड़कर, रोम रोम कर, नस नस कर, कोठा कोठा कर सात सोत का दूध छान छानकर चार सोत से व लायें तो माता काली का पूत काल भैरव न कहाये मेरी मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती गोरखनाथ जी की दुहाई।

जिस औरत का या पशु का दूध सूख गया हो, उसके ऊपर से कण्डी की राख को उतारकर सात बार मंत्र पढ़ते हुए 31 फूंक मारें, तो पुनः दूध उतर आता है, दिन में तीन समय झाड़ा देने से प्रभाव दिखलाता है।

रक्त उतरने का मंत्र

सींक फाड़ धनुआ करौ सीचों कारा नाग खून का दूध बुहारों सोये देव पटकाय अर्जुन जैसे बाणा मारी, झाड़ै झूरा बाण दुहाई अर्जुन पण्डा की गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

उपले की राख को रोगी के ऊपर से उतारकर उपरोक्त मंत्र को पढ़कर 21 बार फूंक मारें, तो फिर से दूध आ जायेगा और खून का आना बन्द हो जायेगा। इसका तीन दिन तीन समय झाड़ा देवें।

बच्चों की डोकी बांधने का मंत्र

आड़ी बांध बाड़ी बांध औरबांध अमराई, इस बच्चे की डोकी बांध गोरखनाथ की दुहाई।

बच्चे के ऊपर से कण्डी की राख उतारकर मंत्र पढ़ते हुए सात बार उस राख को बच्चे की तरफ मंत्र पढ़ते हुए फूंक मारें, तुरन्त ही डोकी बन्द हो जायेगी।

हांडी बांधने का मंत्र

खनाह की माटी चरी का पानी गंध चढ़ि भीख चलानीकाची पाली ऊपर जड़ी वज्र की ताली तुले भरो किलकिले ऊपर नरसिंह गाजे मेरी बांधे हांडी उकल तो गुरु गोरखनाथ की लाज। शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मार्ग में से 7 कंकड़ी लेकर, एक एक कंकड़ी पर 21-21 बार मंत्र पढ़कर हांडी में मारने से चाहे जितनी आग जलाई जाये, फिर भी हांडी गरम नहीं होगी।

नेत्रपीड़ा हेतु

"मर्द की आंख आई, पके न फूटे पीड़ा करे गुरु गोरखनाथ जी की आज्ञा करें गुरु शक्ति की मेरी पूजा करो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

नमक की 11 कंकड़ी से हर बार मंत्र पढ़कर चखें, तो आंख अच्छी हो।

आंख दुखने का मंत्र

"ॐ नमो झलमल जहर नली उलाई अस्ताबल पर्वत से आई जहां बैठा गोरखनाथ जाई, फूटे न पाके करें न पीड़ा यति हनुमंत ठाके पीड़ा।"

नीम की डाली से 21 बार झाड़ें, साथ ही मंत्र पढ़ते जायें।

व्यापारवर्धक लक्ष्मी साधना

ॐ शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवास श्री महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सत की सवाई आवा चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खग तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

इस मंत्र को पूर्वोक्त विधि द्वारा धूप-दीप नैवेद्यादि सहित 55 दिन में सवा लाख जप-नियमों का पालन करके फिर एक माला प्रतिदिन जप करें, तो साधक को अक्षयं सुख प्राप्त होता है।

बाघ भगाने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को 31 बार पढ़कर अपने रेत स्पर्श कराने से बाघ से रक्षा होती है। मंत्र इस प्रकार है—

महादेव का कुक्कर लटै लुटे कान मोरे निकट आबहू मुनि आवे लोहनपह पाठ रक्षा करे थी गोरखनाथ।

पीलिया रोग का मंत्र

ॐ नमो वीर वैताल विकराल नरसिंह देव, खादी पिमिया कूं मिदाती

कारे भार पीलिया रह न नेक निशान। जो कही रह जायें तो गुरु गोरखनाथ की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरों मंत्र ईश्वरो वाचा।

एक कटोरे में तेल लेकर रोगी के मस्तक के ऊपर रखें और फिर उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए तेल को बलाते जायें। जब वह तेल एकदम पीला हो जाये, तब उसे उतार लें। इस प्रकार तीन दिन तक करें।

आंख दुखना दूर होय

ॐ नमो आदेश गुरु का समुद्र में खाई। इस मर्द के आंख आई। पाके न फूटे पीड़ा न करे। गुरु गोरखनाथ जी अच्छा करें। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

नमक की सात कंकड़ियों को अभिमंत्रित करके आंकने से आंखें दुखना ठीक हो जाती हैं।

बंधन का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ने से बंधन होता है—

गोरख चल विदेश कहे सातों दे है बांधि से पांचों चोरविग तथा गोरखनाथ की दुहाई जो काहु सतावें।

सूई छेदने का मंत्र

धार-धार महाधार वार बांधू सात बार अणी बांधू तीन बार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की छः।

इस मंत्र से सुई को 31 बार अभिमंत्रित करके गाल में छेदें तो पीड़ा न हो। छेदने से पूर्व परीक्षा करनी आवश्यक है। परीक्षा ना करने पर अहित सम्भव है।

गागर छेदने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ने से गागर में कभी छेद नहीं होता है—

नीरा धार बांधो नक्षवार न बहै धाऊ न फूटे धार रक्षा करें. श्री गोरखनाथ।

कुत्ते का विष उतारने का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी जहां वसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी न पाली कुत्ता दस काली दस पीली दस लाल दस काबरी रंग-बिरंगी दस खड़ी दस माल ठिकाने रक्षा कर इसका विष हरे गुरु गोरखनाथ शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को ग्रहण की रात्रि में 11008 बार जपकर शुद्ध घी का दीपक जलाकर भोग रखें। इसके बाद इक्कीस दिन तक 1108 बार जप सिद्ध करें। इसके बाद कुत्ते के काटे रोगी के घाव के चारों ओर गोईठा की राख या विभूति लेकर 31 बार मंत्र पढ़ते हुए वह विभूति लगाते जायें।

शस्त्रास्त्र-स्तम्भन मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को 31 बार पढ़कर धूलि स्पर्श करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है—

बांधो तूपक अवनि बार न धरै न परै घाउ करें श्री गोरखनाथ।

सूची बन्धन मंत्र

सूई हाथ में लेकर निम्नलिखित मंत्र को 31 बार पढ़ें, फिर जहां बांधेंगे वहां छेदेगी—

धार धार बांधो सात बार न लागे न फूटे न आवे घाव रक्षा करें श्री गोरखनाथ मेरी भक्ति गुरु की शक्ति हनुमन्त वीर रक्षा कर फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शस्त्र की धार बांधने का मंत्र

माता-पिता गुरु बांधो धार बांधो अस्त्रा वश्ये कटै मुने बांधा हनुमन्तनसुर नवलाख शूद्रेनपाके पाउ रक्षा कर श्री गोरखनाथ एता देइन वाचा नरसिंह के दुहाई हमारी सर्वात आ।

उपरोक्त मन्त्र को 31 बार पढ़ने पर शस्त्र घाव नहीं करता है।

ढाल रोपने का मंत्र

ॐ काली देवी किलकिला भैरू चौसठ जोगनी बावन वीर, तांबा का पैसा वज्ज की लाठी मेरा कीला चले न साथ ऊपर हनुमंत वीर गाजे मेरा लीखा पैसा चले तो गुरु गोरखनाथ लाजे शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

तलवार बांधने का मंत्र

ॐ धार धार अधर धार धार, बांधू सातवां कटे न रोम ना भीजे चीप, खांडा की धार ले गयो गोरखनाथ शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उक्त मंत्र सं 31 बार अभिमंत्रित मिट्टी को अपने शरीर पर लगा लेने से चोट न लगे।

सांप निकालने का मंत्र

ॐ नमो सवरि भूल मधु ममु खबना तेरा कमल का सरपा तेरी बांधू दानीं जिसने तू गोद खिलाया और बांधू तन कटोरा जिसमें दूध पिलाया। बीन की तली ऐसी करें जो तेरी डाढ़ भस्म हो जाय गुरु गोरखनाथ भी जाग्र जलाय। आदेश गुरु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके साल भर तक जप करें, सिद्धि हो जाने के बाद उपले की राख लेकर सात बार सांप के ऊपर डालें, तो वह स्तम्भित हो जायेगा।

सपेरे की बीन बांधने का मंत्र

ॐ नमो वादी प्रभाव राढ़ बैरी का बैठा बड़ पीपल की छाया और बारी न कीजे बांधू तेरा कण्ठ अरू काया बांधू वेन अरू योगी और मसान की बानी अब तो रह बीन सुजान वाले नरसिंह ऊपर गोरखनाथ तो बीन न बजेगी।

उपरोक्त मंत्र को सवा लाख बार जपकर सिद्ध कर लें फिर जब बीन बांधनी हो तो 31 बार मंत्र पढ़कर बीन पर मारें, तो बीन न बजेगी।

दाढ़ के कीड़े का मंत्र

सकोरे सामे में मीने में पानी लीची में कीड़ा करे पीड़ा हरे। शब्द रांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

लोहे की कील मर मंत्र पढ़कर दाढ़ को कीलें तथा उसको कुएं में डाल दें, तो कीड़े मर जायेंगे।

चोरी निकालने का मंत्र

ॐ नमो पतरसी पीर चौसठ योगिनी 52 सौ बीर बहत्तर सौ भैरो तेरह सो तंत्र चौदह सौ मंत्र सत्तर सौ पहाड़ नौ सौ नदी-नाला गुरु गोरख वाला कांसी कटोरी अंगुल बार चोड़ी कहा वीर कहां से आई गिरी पर्वत से मंगवाई अठारह भार वनस्पति चलोना चमारी कानी कुम्हारी कहां जाये चोरे के जाय चांडाल के जाय क्या लावे चोर को पकड़ लावे गड़ा धन जाय बताय बास न जहां हनुमन्त वीर बसे।

कांसे की कटोरी अंगुल भर चौड़ी लेकर दिवाली की रात्रि को कटोरी की पूजा करो फिर इस मंत्र से अभिमंत्रित करके गाड़ दें, चांदी का पता शीघ्र चल जायेगा। इसमें सबसे पहले गोरखनाथ की दुहाई देवें।

चोरी का पता लगाने का मंत्र

ॐ नमो नाहर सिंह वीर, जन जन तू चाले, पवन चाले, पानी चाले, चोर का चित्त चाले, चोर मुख लोही चाले, काया धम वे माया परा करे वीर या गोरखनाथ की पूजा पाई टले, गोरखनाथ की आज्ञा मेरे नौ हाथ चौरासी सिद्ध की आज्ञा।

चावलों को उक्त मंत्र से 1108 बार अभिमंत्रित करें। फिर कटोरी द्वारा चोर का पता लगावें।

चोर का पता लगाने का मंत्र

ॐ नाहर सिंह वीर हरे कपड़े ॐ नाहर सिंह वीर चावल चुपड़े सरसों के फक फक करे शाह को छोड़े चोर को पकड़े आदेश गुरु गोरखनाथ को।

चोकोर सिक्का जिसमें छिद्र न हो, मंगलवार को उसे गऊ के दूध से धोयें तथा लोहबान की धूनी दें। फिर सवा पाव चावल लाकर उन्हें पानी में धोकर गोमूत्र में भिगोकर सुखावें। फिर शनिवार की प्रातः धरती को लीपकर उस पर सफेद कपड़ा बिछावें और कपड़े के ऊपर चावलों को रखकर लोबान की धूप दें फिर उन चावलों को 31 बार अभिमंत्रित कर सिक्के के बराबर चावल तौलकर उन लोगों को चबाने के लिये दें, जिन पर चोरी का सन्देह हो। इस विधि से चोर का पता चल जायेगा।

प्रेत निवारण मंत्र

ॐ नमो आठ खाट की लकड़ी भुजबनी का मुर्दामुरादा नहीं तो गोरखनाथ की आन।

चमेली के फूल, लोहबान की छाल, छवीला लवंग, देशी कपूर, बच आदि लेकर मसान में जायें और साधना करें तो श्मशान सिद्ध होता है।

बिच्छू का विष उतारने का मंत्र

ॐ नमो सुरहगाय पर जाप हरी दूब खाती फिर ताल तलैया पाती पिये सुरहगाय ने गोबर किया उसमें उपजे बिच्छू सात काले-पीले और हरात उतर रे उतर बिच्छू का जाया नहीं गरुड़ उठकर आया, सत्य नाम आदेश गुरु शब्द सांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

दीपावली के दिन इस मंत्र को 1108 बार जपकर सिद्ध कर लें फिर जिसको बिच्छू ने काटा हो इसको पढ़कर पानी पिलायें तो विष उतरे।

विद्वेषण मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु सत्यनाम को बारह सरसों तेरह राई, वाटकी मीठी मसान की छाई पटक, मारू कर जलवार, "अमुक" फुटेन देख अमुक द्वारा मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

सरसों, राई, मेथी और चिता की भस्म लावें और आम की लकड़ी का चूर्ण बनाकर 1108 बार मंत्र पढ़कर हवन करें। फिर जहां मित्र बैठते हों अथवा रहते हों वहां राख को डालें तो दोनों का विद्वेषण हो जायेगा।

डाकिनी भगाने का मंत्र

ॐ नमो लोह सिहाय लोह लाऊ सिसनांद नश्तर मंडा रासवीर ने नस्तर गढ़ाया लक्षमण वीर ने सबसे बजिया मुंड तेरी डाकिनी भाई जिसने दिया। तुझे जनमा और मुंड तेरा गुरु पीर जिन दिया मास कर मुंड तेरा पिता गोरखनाथ से आवो जा लंका जारी मारी मुडिकातग्मिहावीर ध्वजा धीवती देख्या सिर मुंडिरे छप्पड़ भैरो गांव वापर संग लेहरू मुंडेर हनुमन्त वीर जाका जियो धरे न धरे घर बैठा में गींडा मुंह गात बन काहे को ढंडय मंत्र से मुंडय डाकिनी सिहार हनुमन्त यती आन तुम्हारी।

कखलाई का मंत्र

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमन्त आई पके न फूटे चले न पीड़ा रक्षा कर हनुमन्त वार दुहाई गुरु गोरखनाथ को शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु का।

31 बार मंत्र पढ़कर नीम की डाली से झाड़ा देने तथा कखलाई वाले स्थान पर मिट्टी लगा देने से वह शीघ्र बैठ जाती है।

धरन ठिकाने आने का मंत्र

ऊंची-नीची धरणी श्री महादेव की सरनी दली धरन आन् ठोर सत सत भाखै श्री गोरखनाथ।

उपरोक्त 21 बार मंत्र से झाड़ा देकर, चांदी की अंगूठी पांव के अंगूठे में पहना देने से धरन ठिकाने पर आ जाती है।

नारी के पैर बांधने का मंत्र

मोरी गाददे ईश्वर दे गया वाचा महादेव आप घर गया हुआ शब्द यह सांचा। दस स्त्रियों को चिन्ता भेदी दस मांस दहपाछ बीस पंख बाबू इनका पैर अगर खिसे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे ईश्वरो गौरा दिबाताला या गट पिंड का गुरु गोरख नाथ रखवाला शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र को 31 बार इक्कीस दिन तक जपें, तो औरत का पैर थम जाता है, यह मेरा परीक्षित है।

कीड़े झाड़ना

ॐ नमो कीड़ा रेकुंकक़ु डालो लाल पूंछ तेरा मुंह काला। मैं तोहि पूछा कहां से आया तूने सब मांस खाया। अब तू जाय भस्म हो जाए। गुरु गोरखनाथ करे सहाये।

उपरोक्त मंत्र से झाड़ा देने पर कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

नजर दूर करने का मंत्र

ॐ नमो: सत्यनाम आदेश गुरु को ढाम नजर कहां पर पीर न जानी। बोले छत से अमृत बानी, नजर कहां से आई। कहां के ठेरे की अवतांई। कौन जाति तेरे कहां धाम किसकी बेटी कहां से उड़ी कहां जाए अब बास कर ले तेरी माया। मेरी बात सुनो चितलाय जैसी होय सुनाऊं आय। लेकिन तमोलिनी चमारी कायस्थान खमरानी कुम्हारी महतरानी राजा की रानी। जा को दोष वाही के सिर पड़े, पार नजर सो रक्षा करे। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो गोरखनाथ वाचा दे।

उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए सिर से पैर तक झाड़ा दें।

सूई काटने का मंत्र

ॐ नमो पढ़कर चूना लोहार सार गड़े लोहार लोहे का मोड़ मोड़ के किया पानी लोहा चार भस्म कर हानि रायवीर जो जाया मानी लक्ष्मन वीर मुद घाव पाक फूटे वीरडा करे तो रामचन्द्र ही रक्षा करें। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

अभिमंत्रित विभूति की चुटकी लेकर उस स्थान पर फेरें जहां सूई गड़ी हो, तो सूई निकल जाएगी।

घाव भरने का मंत्र

सार सार विजैसार सार बांधू सात बार, फूटे अन्न उपजे घाव, सार राखे श्री गोरखनाथ।

इस मंत्र को 31 बार पढ़कर घाव पर फूंकें मारने से पीड़ा नहीं होती तथा घाव भी भरने लगता है।

नकसीर का मंत्र

ॐ नाम आदेश गुरु को सार सार महासार सार बांधू सातवार अणी बांध तीन वार लोही की सीर बांधू सीर बांधे गोरखनाथ पाके न फूटे तुरत सूखे शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

ग्रहण के दिन 11000 की संख्या में जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। उक्त मंत्र से विभूति (भस्म) को 31 बार अभिमंत्रित कर रोगी की नाक पर लगाने से खून बहना तुरन्त बन्द हो जाता है।

पसली का मंत्र

सत्य नाम आदेश गुरु को ॐ संखारी-संखारी कहां गया सब पर्वतों गजा सवा लाख पर्वतों जाए कहां करेगा सवा भार कोयला कर रहा करेगा हनुमंत वीर नव चन्द्रहास खंड खड्ग नव चन्द्रहास खंडगढ करेगा जातया डरू पसली बाय काय कूट खारी नाखैया तगत गुरु शक्ति मेरी शक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

पहले 31 हजार जपकर सिद्ध करें फिर तिल का तेल लेकर उससे झाड़ा लगावें।

योगिनी मंत्र

जंगल की योगिनी पाताल के नाम उठ गढ मेरे वीर (उस स्त्री का नाम) आओ मेरे पास जहां-जहां जाए मेरे सलाई तहां-तहां अब कजभरी नजभरी अगरी तक नफ एक फूंक फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाए वीर गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

इस मंत्र को काली मिट्टी की पुतली पर 1108 बार जप करें, हर मंत्र पर पुतली में एक फूंक मारें, तो वशीकरण अवश्य होगा।

कीड़ा झाड़ने का मंत्र

उद्द मुद्द जल्ल जलाल पकड़ चोरी धड़ पछाड़ मेज कुद्दा लाओ मुद्दा यकहु हारौ या कहु हारौ।।

चौराहे की 7 कंकड़ियों को इस मंत्र द्वारा 31 बार अभिमंत्रित करके मारें और कहें कि "कीड़ा गया" इस प्रयोग से कीड़े झड़ जाते हैं।

कुत्ताकाटे का झाड़ा

ॐ नमो कामरू देश कामक्ष्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती दश काली दश कावरी दश पीली दश लाल इसको विष हनुमान हरे रक्षा करे गुरु गोरखनाथ शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण के दिन 11000 की संख्या में जपने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र से अभिमंत्रित भस्म रोगी को खिला देने और मल देने से वह ठीक हो जाता है।

महालक्ष्मी का मंत्र

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सत की सवाई आओ चेतो करो भलाई, भलाई ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋद्धि उखगे तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

जब भी व्यापारी अपनी दुकान को खोले तब दुकान की गद्दी पर बैठकर पहले उपरोक्त मंत्र की एक माला जप ले, तत्पश्चात् लेन-देन के काम करे तो उसे पर्याप्त लाभ होगा तथा धन की वृद्धि भी होगी।

अन्नपूर्णा का मंत्र

ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्नपूरे घृतपूरे गणेश देवता पाणी पूरे ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीन देवता मेरी भक्ति गुरु की शक्ति गुरु गोरखनाथ की वाचा फुरे।

पहले 125000 की संख्या में मंत्र का जप करें। जो सामग्री हो, उसमें से अन्नपूर्णा का भोग रक्खें फिर एक भाग कुएं में डालकर, वहां से पानी की लुटिया भरकर लायें। फिर दीपक जलाकर भोजन रखने के स्थान में अन्नपूर्णा का ध्यान कर एक माला मंत्र की जपकर, ब्राह्मणों को भोजन करायें, तो भण्डार में भोजन-सामग्री की कभी कमी न पड़ेगी।

शत्रु वशीकरण

निम्न मंत्र को शुक्ल पक्ष के सोमवार के दिन उल्लू की चोंच पर 1108 बार जप कर दुश्मन के मस्तक पर डाल दें। दुश्मन बड़ी-से-बड़ी शत्रुता भुलाकर वश में होता है।

ॐ नमो महापंखेश्वरी आगच्छ-आगच्छ अतुलबल पराक्रमाय सर्वकामना मम वशं कुरु-कुरु मंत्रेश्वरी औता ठः फट् स्वाहा।।

❑❑❑

8

शाबर मंत्र और साधना

शाबर मंत्र साधना से थोड़े-बहुत रूप में प्रत्येक भारतीय परिचित है। वर्तमान युग में जब निज का लाभ ही सिद्धि का पर्याय हो गया है, तब यह साधना प्रत्येक अविश्वासी व्यक्ति को पूर्ण रूप से विश्वास दिलाने में समर्थ है। पर यह साधना गोपनीय रही है, जिनको ज्ञान है, उन्होंने इस साधना को प्रकाश में लाना ठीक नहीं समझा, क्योंकि इससे उनके हितों का आघात होता था। मैं शाबर मंत्र साधना पूर्ण प्रामाणिकता के साथ प्रकट कर रहा हूं, साधकों को चाहिए कि वे योग्य गुरु के मार्ग-निर्देशन में ही यह साधना सम्पन्न करें, अकेले नहीं।

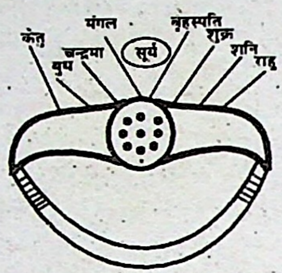
शाबर मंत्र ना तो संस्कृत में है ना हिन्दी और ना ही साधारण भाषा में। कोई इनका अर्थ समझने बैठे तो मस्तिष्क जवाब देने लगता है। ये मंत्र प्रसिद्ध इसलिए हुए हैं कि इनके जप करने से परिणाम लोगों को मिले हैं। पाठकों की जानकारी के लिए कुछ ऐसे मंत्र दिए जा रहे हैं जो साधारण समस्याओं के समाधान के लिए उपयोग में लाये जा सकते हैं।

तनाव हेतु

अगर आप नौकरी के कारण या सामाजिक परिस्थितियों के कारण तनाव-ग्रस्त रहते हैं, तो पीपल के पांच पत्ते रखकर उस पर दूध से बनी मिठाई रखें तथा 15 मिनट तक अपलक देखते हुए निम्न मंत्र का जप करें। उसी दिन मिठाई किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें। मंत्र इस प्रकार है—

"श्यामांडी शशिशेखरां त्रिनयां, रत्नसिंहासन स्थिताम् वेदैर्वाहुदण्डै रसिखेटक पाशांकुशाधराम्।"

यह प्रयोग केवल 7 दिन तक करें। संभव हो तो नवरत्न की अंगूठी धारण करें।



नवरत्न की अंगूठी

लोकप्रियता हेतु

आप जहां उठते-बैठते हैं, वहां लोगों के मध्य आप लोकप्रिय होना चाहते हैं, कि लोग आपसे बात करने के लिए उत्सुक हो जायें, आपको देखने से ही वे स्वयं को प्रसन्न अनुभव करें, तो ब्रह्म मुहूर्त में किसी पात्र में कुमकुम से त्रिभुज बनाकर स्थापित करें। शुद्ध घी का दीपक लगायें तथा निम्न मंत्र का 1011 बार उच्चारण करें। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ हनुमान बारहा वर्ष का जवान। हाथ में लड्डू मुख में पान। आओ आओ बाबा हनुमान। न आओ तो दुहाई महादेव गौरी पार्वती की।

अकाल मृत्यु का भय होने पर

असमय मृत्यु का योग अगर बन रहा है या रोग के कारण स्वास्थ्य बिगड़ गया है कि व्यक्ति मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा है, तो यह प्रयोग करें—

मिट्टी का दीपक जला लें, दीपक का पूजन कुमकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें। पीले रंग के आसन पर बैठकर निम्न मंत्र की 6 माला जप "लाल हकीक माला" से करें। मंत्र इस प्रकार है—

बाघ रोग बिजुली सर्प चोर। पांचों बाघों एक ठौर। धरती माता। आकाश पिता। रक्ष-रक्ष श्री परमेश्वरी कालिका की वाचा। दुहाई महादेव की।

मंत्र जप पूर्ण होने के पश्चात् दीपक शिव मंदिर में रख दें। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक नित्य करें। प्रयोग आरम्भ करते समय संकल्प बोलें, कि यह प्रयोग मैं अकाल मृत्यु की समाप्ति के लिए कर रहा हूं।

भाग्योदय के लिए

आपका सारा परिश्रम व्यर्थ चला जाता है और इस कारण आपका भाग्योदय नहीं हो रहा है। तब आप शनिवार के दिन पूजाघर में नित्य निम्न मंत्र का 21 बार जप कर देशी घी से हवन करें—मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमोस्तुएते भगवते पार्श्वचन्द्राधरेन्द्र पद्मावती सहिताय मेएभीष्ट सिद्धि दुष्टग्रह भस्म भक्ष्यं स्वाहा। स्वामी प्रसादे कुरु-कुरु स्वाहा। हिलहिलि मातंगनि स्वाहा। स्वामी प्रसादे कुरु-कुरु स्वाहा।

क्या आप गर्भवती हैं?

गर्भवती महिलाओं को डर रहता है कि उनसे ईर्ष्याग्रस्त होकर कहीं कोई उनके ऊपर किसी प्रकार का टोटका अथवा तंत्र प्रयोग न करवा दें। जिस कारण भावी संतान का भविष्य विपत्ति में पड़ जाए, अगर आपके साथ ऐसा है, तो आप यह प्रयोग सम्पन्न करें।

आम की लकड़ी को जलाकर उस राख की सात ढेरियां बना लें, उसके समक्ष 7 दिन तक नित्य ग्यारह बार निम्न मंत्र का जप करें—

ॐ एक ठो सरसों। सौला राई। मोरो पटवल को रोजाई। खाय-खाय पड़े भार। जे करै ते मरे। उलट विंद्या ताही पर परे। शब्द सांचा। हनुमान का मंत्र सांचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सम्मोहन हेतु

सम्मोहन का अर्थ है—साधक इतना आकर्षक बन जाये, कि जो भी उसे देखे बस देखता ही रह जाये, उसके अतिरिक्त किसी अन्य के विषय में वह सोच ही न सके। ऐसे व्यक्तित्व का स्वामी अपना कोई भी कार्य जिस व्यक्ति से भी करवाना चाहेगा, वह उसके समक्ष कुछ विरोध कर ही नहीं सकेगा और उसका प्रत्येक कार्य करता चला जायेगा।

यह प्रयोग करने से पूर्व साधक चमकीली पीली धोती पहने और पीले हकीक की माला से 7 दिन नियमित जप करे। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ सम्मोहनाय आदिपुरुषाय नमो नमः।।

वशीकरण

वशीकरण का अर्थ है—किसी को अपने वश में कर लेना, जिससे कि वह आपकी आज्ञा मानने के लिए बाध्य हो जाये। जिसके ऊपर प्रयोग को किया जाता है, वह साधक की आज्ञा मानने के लिए बाध्य होता है। इस साधना के द्वारा शत्रुओं को भी अनुकूल बनाया जा सकता है।

साधक को चाहिए, कि वह इसका अनैतिक प्रयोग न करें। इस साधना के लिए साधक श्वेत वस्त्र धारण करें तथा श्वेत वस्त्र बिछाकर अभिमंत्रित स्फटिक माला से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ क्लीं सर्व जन वशं कराय कुरु-कुरु स्वाहा।।

दुःखी क्यों होते हो?

स्वयं को बार-बार दुःखी करना हानिकारक होता है। आपको अपनी भावनाओं का पूरा सम्मान करना चाहिए। आप इस प्रयोग के माध्यम से अपने संकल्प को पूर्ण करने की शक्ति प्राप्त करें। सफेद रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर कुमकुम से गोल घेरा बनाकर उसके मध्य अपना नाम और पिता का नाम लिखें, तेल का दीपक जला दें तथा निम्न मंत्र का 51 बार जर करें। मंत्र इस प्रकार है—

याही सार सार सार। जिन्न देव पारी नवस्कंफार। एक खाये दूसरे को फार। चहुं ओर अमिया पसार। मलायक अस चर। दुहाई दस्तखे जिब्राइल। बाई वे खैभि काइल। दाई दस्त्र दस्त्र। हुसैन पीठ खदे खेई। आमिल कलेजे राखे इज्राइल। दुहाई मुहम्मद अलीलाह इलाह की। कंगूर लिल्लाह की खाई। हजरत पैगम्बर अली की चौकी। नख्त मुहम्मद रसुलिल्लाह की दुहाई।

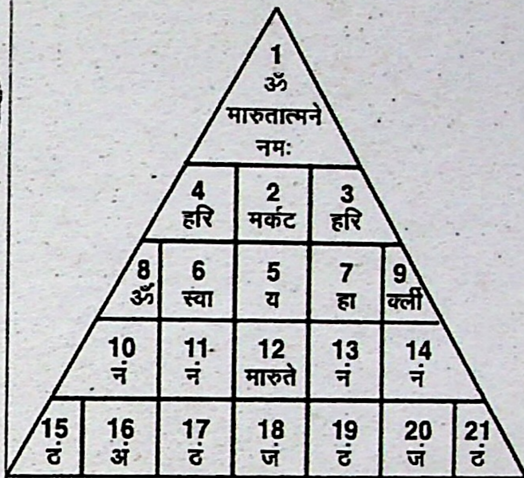
गृह रक्षा साबर प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का स्वप्न उसका अपना घर होता है। इसके उपरांत भी व्यक्ति निश्चित नहीं हो पाता, कि क्या उसका घर उसके लिए सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेगा अथवा आपदाओं से सुरक्षित रहेगा ? व्यक्ति का ऐसा सोचना निरर्थक भी नहीं है। आघात या फिर तंत्र प्रयोग, ये सभी ऐसे कारण हैं, जोकि कभी भी व्यक्ति की मानसिक शांति को भंग कर सकते हैं। इस समस्या के निवारण

के लिए साबर मंत्रों के क्षेत्र में एक छोटा-सा प्रयोग मिलता है, इसे सम्पन्न कर ही लेना चाहिए।



श्री राम



यंत्र

साधक को चाहिए कि वह सिद्ध वास्तु यंत्र प्राप्त कर किसी भी बृहस्पतिवार की रात्रि में मूंगा माला से निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप कर लें, स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन दक्षिण दिशा की ओर मुख कर यह मंत्र जप करने से ही साधना सम्पूर्ण हो जाती है। रक्षा मंत्र इस प्रकार है—

।। कोडी लाघूं, आंगन लाघूं कोठी ऊपर महल सजाऊं, गोरखनाथ सत्य कहे, दुअरिया पै मैं अलख जगाऊं।।

मंत्र जप की चर्चा किसी से न करें।

मनवांछित फल हेतु

अगर आप किसी विशेष विद्या को प्राप्त करना चाहते हैं और आपको कोई योग्य गुरु नहीं मिल रहा हो, जो आपकी इच्छा को पूर्ण कर सके, तो एक बार इस प्रयोग को सम्पन्न करके देख लें। आप लाल गुलाब के पुष्प पर अपनी इच्छा स्थापित कर उनका पूजन शुद्ध केसर, अक्षत तथा कामिया सिन्दूर से करें। फिर उसके समक्ष अपनी इच्छा व्यक्त कर निम्न मंत्र का 100 बार जप 31 दिन तक करें। मंत्र अग्र प्रकार है—

।। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं सुमध्यमां धूतिमतिं देहि ॐ।।

प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् आप इच्छित ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो जाऐंगे।

सदाबहार यौवन हेतु

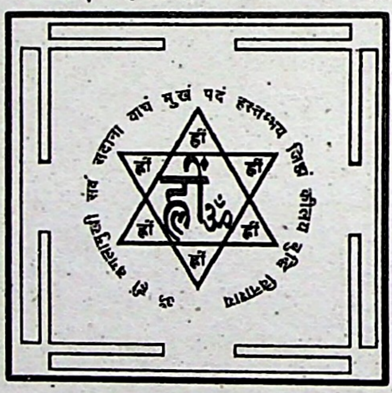
कभी आपने किसी चिर यौवना अप्सरा को देखा है ? ऐसा यौवन, जिसे आप व्यर्थ के तनाव और चिन्ताओं से समाप्त कर देते हैं। इसे यों ही व्यर्थ में समाप्त मत करिये वरन् यह प्रयोग करिये। मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ ह्रीं श्रीं चिरयौवनाय मेनकाए सिद्धये ॐ।।

मंत्र का जप पूर्ण कर ही अपने आसन से उठें। आप यह प्रयोग नित्य कर स्वयं अनुभव करें।

शत्रु हेतु

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन में कोई न कोई ऐसा व्यक्ति होता ही है, जो उसके मार्ग को अवरुद्ध करने की चेष्टा करता है। अत: व्यक्ति अपने जीवन को उन्नतिशील बनाने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है।



श्री बगलामुखी यंत्र

ग्रहण काल में इन प्रयोगों को सम्पन्न करने से यह प्रयोग शीघ्र फलीभूत होते हैं। इन प्रयोगों को आप ग्रहण प्रारम्भ होने से पूर्व भी प्रारम्भ कर सकते हैं। ग्रहण काल में भी कर सकते हैं।

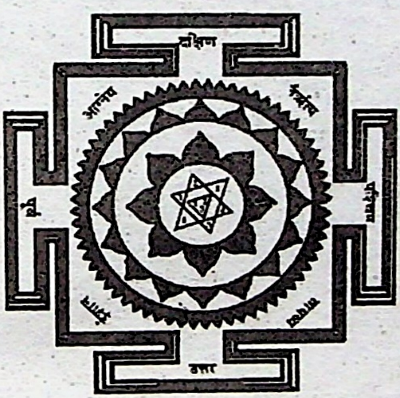
इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए "बगलामुखी यंत्र" के सामने "काली हकीक माला" से अग्रांकित मंत्र का 11 माला जप सम्पन्न करें—

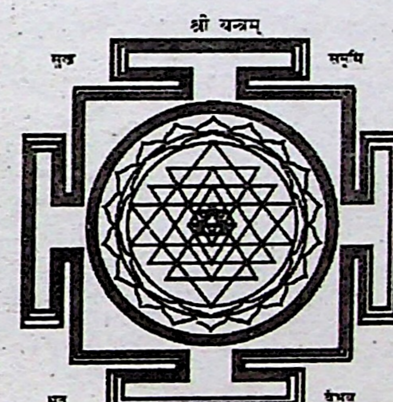
ॐ स्यार की खवासिनी। समन्दर पार धाई। आव, बैठी हा तो आव। ठाडी हो तो ठाडी आव। जलती आ। उछलती आ। न आये डाकिनी तो जालंधर पीर की आन। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ऋणमोचन प्रयोग

ऋणमोचन प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता है, क्योंकि समाज में बिना धन के चलना अति दुष्कर प्रतीत होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति धन-प्राप्ति के लिए विविध प्रकार के उद्यम करता है और समाज में धन-धान्य, यश, प्रतिष्ठा आदि सब कुछ प्राप्त करना चाहता है।

इन सभी के अतिरिक्त वह ऋणमुक्त भी होना चाहता है, ऋणी व्यक्ति के लिए यश, प्रतिष्ठा आदि तो स्वप्नवत बातें होती हैं। अतः हर व्यक्ति ऋणमुक्त रहना ही चाहता है।





अष्टदत श्री यंत्र

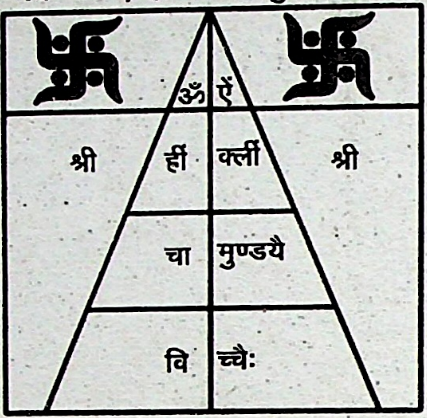
इसके लिए साधक शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर किसी पीले रंग के वस्त्र पर "श्री यंत्र" का पूजन सम्पन्न कर अपनी कामना व्यक्त करें और निम्न मंत्र का अभिमंत्रित कमलगट्टा माला से 31 माला जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ ह्रीं ऋण मोचने श्रीं धन लक्ष्मी प्रदाय ॐ नमः।।

रोगमुक्ति प्रयोग

किसी भी शुभ दिन इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति रोगमुक्त होता है। इसके लिए पीले रंग के वस्त्र पर "मंगल यंत्र" स्थापित कर उसका पूजन कर, यंत्र के समक्ष रोगमुक्ति हेतु प्रार्थना करें। अग्रांकित मंत्र का जप करें—

मंत्र—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डयै विच्चैः



अष्ट वर्गम् यंत्रम

।। ॐ ऐं क्लीं ऐं रोगनाशाय धन्वन्तयै ॐ।।

बिच्छू झाड़ने का यंत्र

इस मंत्र से झाड़ने पर विष उतर जाता है। इस मंत्र से केवल झाड़ना पड़ता है, जैसे-जैसे विष उतरे वैसे-वैसे आप भी नीचे की ओर अपनी पकड़ उतारते जायें। काटने की जगह आ जाने पर झाड़ना बन्द कर दें। डंक के ऊपर तेलिया मोहरा पानी में घिसकर लगा दें तो डंक भी ठीक हो जाता है। मंत्र निम्न प्रकार है—

ॐ नमो आदेश गुरु को काली बिच्छू कांकरवालो उतर बिच्छू न कर टाली उतरे तो उतारूं चढ़ें तो मारूं गरुड़ मोरपंख हकालूं शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

नौकरी हेतु

आप जहां नौकरी कर रहे हैं वहां आपको सन्तुष्टि नहीं मिल रही है अथवा आप बेरोजगार हैं और नौकरी पाने के लिए प्रयत्नशील हैं, स्वयं के प्रयास से आप अपनी इच्छा को पूर्ण करने में असफल हो रहे हैं इसको अपनाकर देखिये। किसी पात्र में कुमकुम में स्वास्तिक बनाकर स्थापित करें। उसका कुमकुम, अक्षत से पूजन करें, उस पर एक लाल पुष्प व एक पीला पुष्प क्रमशः चढ़ाते हुए 31 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें। मंत्र और यंत्र अग्र प्रकार है—

मंत्र— ।। ॐ हुं हुं ॐ।।

यंत्र

11	1	8
1	7	9
5	15	3

उन्नति हेतु

अगर आपको प्रमोशन नहीं मिल पा रहा है, ऐसी स्थिति में आप सफेद रंग के वस्त्र में कुमकुम से अपना नाम लिखकर बांध दें, उसके समक्ष शुद्ध घी का दीपक लगा दें तथा निम्न मंत्र का जप तीस दिन तक नित्य 31 बार करें। मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ क्रीं क्लीं क्लीं क्रीं (नाम लें) ॐ।।

जप समाप्त होने पर अपने सिर को तीन बार झटका दें।

मोटापे से मुक्ति हेतु

अगर आपकी देह स्थूल हो गई है, शारीरिक कार्य न करने के कारण आपका मोटापा इस तरह बढ़ गया है, और रोकने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं।

हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर



आप प्रातः उठकर नित्य सूर्य नमस्कार आसन के प्रत्येक क्रम को करते हुए निम्न मंत्र का जप 31 बार करें। आपका मोटापा कुछ दिनों में समाप्त हो जायेगा।

मंत्र है—"काला बिच्छू कांकरवाला हरी पूंछ मैंराला सोना का गाडू रूपे का पतनाला आठ गांठ नौ कोर नीचे बिच्छू ऊपर मोर कौना मोरा रेतो भकभकार बिच्छू रेती बाबन वीर नीड निकोर के कौन वैद मानुष पर गया खाते जाते लागी बार उतर रै बिच्छू तुझे ख्वाजा महमददीन चिराग तृष्टी की आन।"

निर्बलता होने पर

अगर आप उदास रहते हैं तथा कार्य करने पर आप थकान अनुभव करते है, तो इसे करिये। शवासन में लेट जायें और अपने हृदय स्थल पर नारियल को रखें। मन में भावना रखें, कि इसके माध्यम से आपकी सारी दुःखद मानसिक अवस्थाएं समाप्त हो रही हैं। निम्न मंत्र का जप 21 दिनों तक नित्य 21 बार करें—

वन में बैठी वानरी। अंजनी जायो हनुमन्त। बाल डमरू ब्याही बिलाई। आंख की पीड़ा। मस्तक पीड़ा। चौरासी बाई। बलि-बलि भस्म हो जाय। पके न फूटे। पीड़ा करे तो गोरखयती रक्षा करे। गुरु की शक्ति। मेरी भक्ति।

पति-पत्नी में तनाव होने पर

अगर पति-पत्नी के मध्य तनाव है, तो आप दोनों के चित्र को गुलाब पर रखें तथा उसे गुड़, देशी घी मिलाकर भोग लगायें एवं उसी स्थान पर बैठकर 30 मिनट तक निम्न मंत्र का जप तीस दिन तक करें। तनाव समाप्त होगा।

गुड़ व घी को घर से दूर किसी निर्जन स्थान में दबा दें। मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ ह्रीं ह्रीं हुं (नाम लें) ह्रीं हीं ॐ।।

वशीकरण हेतु

आपके मन में डर है कि कहीं आपका पति/ प्रेमी किसी और की ओर आकर्षित होकर आपसे विमुख न हो जाये, तो इसके लिए आप यह प्रयोग सम्पन्न करें—

एक कड़वे तेल का दीपक तथा एक शुद्ध घी का दीपक जला दें। दोनों के मध्य में चित्र रखें। दोनों दीपक को देखते हुए क्रमशः 51 बार अग्रांकित मंत्र का जप करें—

।। ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं ऐं ॐ नमः।।

पीलिया हटा दीजिए

पीलिया एक भयंकर रोग है। रोगी में पीलापन, सिरदर्द, भूख न लगना आदि लक्षण दिखाई देने लगते हैं। वैसे इसका कारण है, शरीर में अम्लता की वृद्धि या किसी संक्रमण के कारण भी यह रोग उत्पन्न होता है। यह रोग दीर्घ समय में समाप्त होता है। यदि रोगी की उपयुक्त देखभाल न हो, तो यह रोग मारक प्रभावयुक्त हो जाता है। तो आप दवाओं के साथ-साथ इस प्रयोग को करें, तो पीलिया को हटाया जा सकता है। आप रविवार के दिन भगवान पर 11 तुलसीदल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करें—

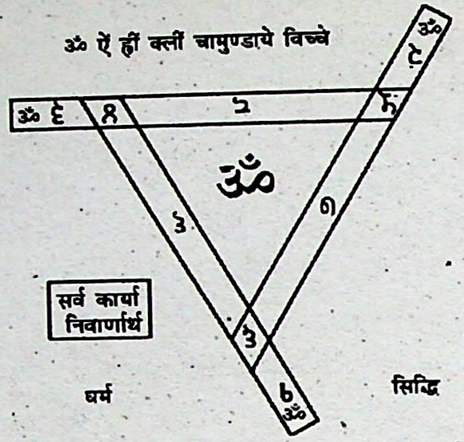
।। ॐ क्लीं पाण्डुरोगं शमय् नाशय् क्लीं ॐ फट्।।

पितृदोष से मुक्ति हेतु

पितृदोष तब व्याप्त होता है, जब पितरों के सम्मान में कुछ कमी रह जाती है या उनके लिए कुछ असम्मानजनक कार्य कर दिया जाता है। पितरों का पूर्ण रूप से सम्मान न होने से ही घर में तनाव, संतानहीनता, चिन्ता, कष्ट तथा व्याधियां समाप्त नहीं हो पातीं। लेकिन इसका निराकरण क्या है, वे अभी तक नहीं जान पाये हैं और इसके लिए वे भारतीय मंत्रों की ओर अग्रसर हो रहे हैं। पितृदोष निवारण तांत्रिकों की धरोहर है।

प्राचीन काल में मंत्रों का अधिक प्रभाव था, लोग मंत्र-शक्ति को जानते थे और तांत्रिक मंत्रों के द्वारा समस्याओं का निराकरण करते थे। तब अगर किसी परिवार में अशांति या कलह होता था और निराकरण नहीं मिलने पर वे समझते थे, कि पितृदोष के प्रभाव के कारण ही ये घटनाएं घटित हो रही हैं और वे तब इसका निराकरण तांत्रिक मंत्र आदि से कर लेते थे। आज का युग ऐसा आया कि मंत्रों व विद्वानों के स्थान पर पाखण्ड ने अपना स्थान जमा लिया और वे व्यापार के उद्देश्य से इस कार्य को करने लगे, जिससे यह विद्या व्यवसाय बन गयी।

हालांकि लोग श्राद्ध करने से पितृदोष की समाप्ति समझते हैं, परन्तु त्रुटि रह जाने के कारण ऐसे प्रभाव उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका विधिवत् उपाय न किया जाये, तो घर अव्यवस्थित हो जाता है। अगर आप चाहें तो आप स्वयं इस प्रयोग को सम्पन्न करिये, अगर आपके घर में चिंता, कष्ट, व्याधि, तनाव समाप्त नहीं हो रहे हैं और आप विविध उपाय कर चुके हैं, तो आप इस साधना को, जो इसका अचूक उपाय है, करिये।



—यह एक दिवसीय साधना है, जो श्राद्ध पक्ष के किसी रविवार को की जानी चाहिए। साधन नये श्वेत वस्त्र धारण कर यह साधना सम्पन्न करें।

—साधक सर्वप्रथम स्तुति करें—

विष्णुपादप्रसूतासि वैष्णवी विष्णुदेवता।
पाहि नस्त्वेन तस्मादाजन्ममरणान्तिकात्।।
तिस्त्रः कोटयोऽर्धकोटी च तीर्थानां वायुमब्रवीत्।
दिवि भूम्यन्तरिक्षे च तानि ते सन्ति जाह्नवि।।
नन्दिनीत्येव ते नाम देवेषु नलिनीति च।
क्षमा पृथ्वी च विहगा विश्वकाया शिवामृता।।
विद्याधरा सुप्रसन्ना तथा लोकप्रसादिनी।
क्षेम्या तथा जाह्नवी च सर्वदा शान्तिदायिनी।।

—हाथ में जल लेकर यह भावना दें, कि "मैं यह जलांजलि पितरों को दे रहा हूं" तथा जल धरती पर छोड़ दें—अपने समस्त पितरों को भीइसी प्रकार से निम्न मंत्र बोलते हुए जलांजलि दें—

ये बान्धवाऽबान्धवा वा अन्यज्जन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवांचति।।

—तत्पश्चात् निम्न मंत्र की 51 माला जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

।। ॐ धूं धूं धूर्जटायै सर्वदोष निवारणाए फट्।।

—इसके बाद निम्न स्तुति करें—

नमस्ते विश्वरूपाय नमस्ते विष्णुसखाय वै।
सहस्त्ररश्मये नित्यं नमस्ते सर्वतेजसे।।

नमस्ते सर्ववपुषे नमस्ते सर्वशक्तये।
जगत्स्वामिन् नमस्तेऽस्तु दिव्यचन्दनभूषित।।
पद्माभ नमस्तेऽतु कुण्डलांगदधारिणे।
नमस्ते सर्वलोकेश सर्वासुरनमस्कृत।।
सुकृतं दुष्कृतं चैव सम्यग्जानासि सर्वदा।
सत्यदेव नमस्तेऽस्तु सर्वदेव नमोऽस्तुते।।
दिवाकर मनस्तेऽस्तु प्रभाकर नमोऽस्तुते।।

इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है तथा साधक को इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

❑❑❑

9

अखण्ड जीवन की कामना

इच्छा मृत्यु साधना

वेदान्त सम्बन्धी विचारों को हम सभी "अद्वैतवाद" के नाम से जानते हैं। अद्वैतवाद वह पावन सिद्धान्त है, जिसके अनुसार विश्व का अन्तिम सत्य "दो नहीं वरन् एक" है। विश्व के उस अन्तिम शाश्वत सत्य को, जो एक है, उसे "ब्रह्म" के नाम से जानते हैं। वेदान्त के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है, शेष सभी असत्य हैं।

यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसकी व्याख्या के लिए सभी ज्ञानी दृष्टिकोणों को अपनाते हैं। एक दृष्टिकोण के अनुसार, "ब्रह्म" ही एकमात्र सत्ता है। इस दृष्टिकोण से सारा संसार मिथ्या है, धोखा है। ब्रह्मवेत्ता संतों के अनुसार ब्रह्म का यही रूप सत्य है और यही दृष्टिकोण श्रेष्ठ है। इसे हम पारमार्थिक दृष्टिकोण के नाम से पुकारते हैं। पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् इस तरह का दृष्टिकोण स्वयं आ जाता है।

दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार विश्व, जीव, आत्मा, ईश्वर इत्यादि सभी के अस्तित्व पर विश्वास किया जाता है। इसे व्यावहारिक दृष्टिकोण के नाम से पुकारते हैं। इस दृष्टिकोण को भ्रम का रूप देते हैं, जिसे "माया" के नाम से जाना जाता है। अन्धकार में रस्सी को बहुत-से लोग सांप समझ लेते हैं। सांप कभी भी रस्सी नहीं है। उसी तरह साधारण लोग अज्ञानता में या माया के जाल में पड़कर इस अवास्तविक संसार को वास्तविक समझ बैठते हैं।

सभी तत्व केवल अज्ञानी लोगों की दृष्टि में ही वास्तविक दिखलाई पड़ते

हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हम स्वप्न में अवास्तविक घटनाओं को वास्तविक समझ बैठते हैं। स्वप्न टूटते ही सभी बातें मिथ्या सिद्ध होती हैं।

कल्पना करें एक रंगमंच पर कोई राजा का अभिनय कर रहा है। वह उस अभिनय में लड़ाई में जीतता है और उस पर शासन करता है। यहां पर उसके दो रूप हैं। एक दृष्टिकोण से वह एक राजा है, जो शासन करता है। इसे हम मिथ्या दृष्टिकोण कहेंगे। दूसरे दृष्टिकोण से देखने पर वह केवल गड़ेरिया है, जो इसका वास्तविक जीवन में अपना रूप है। वास्तव में तो वह एक गड़ेरिया है, जो सत्य दृष्टिकोण के द्वारा स्पष्ट हो जाता है।

इस दुनिया को संतों ने कर्मों का खेत कहकर समझाने का प्रयत्न किया है। क्योंकि जमीन के भीतर हम जो भी बीज डालते हैं उसी की फसल काटनी पड़ती है। कोई नीम के बीज बोता है तो वह कड़वी नीम की फसल इकट्ठी करता है। कोई मीठे फल के पौधे लगाता है तो वह मीठे फल खाने का हकदार हो जाता है। हम अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छे फल भोगने के लिए आ जायेंगे और बुरे कर्म करेंगे तो बुरे परिणाम सामने आ जायेंगे। स्मरण रखें, न कभी अच्छे कर्मों के द्वारा हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं और न बुरे कर्मों से कभी आवागमन से मुक्ति पा सकते हैं। अगर हम शुभ कर्म करते हैं तो राजा बनकर आ जाते हैं। लोहे की जंजीरें उतरती हैं तो सोने की बेड़ियां पड़ जाती हैं। झोपड़ियों से उठाकर राजमहल में जाकर शय्या बिछा लेते हैं। किन्तु वे भोग योनियां हैं जो कि नियत समय या अवधि के लिए मिलती हैं उसके पश्चात् हमें वापस यहीं चौरासी के चक्र में आना पड़ता है। फिर दुष्कर्मों के लिए तो नर्क और शुभ कर्मों के लिए स्वर्ग तैयार हो रहते हैं। इस विश्व में आकर सभी अपने कर्मों का हिसाब चुका रहे हैं। इन्हीं कर्मों के कारण शान्ति प्राप्त नहीं होती। कोई रोग से तंग, कोई बेरोजगारी से दुःखी, कोई सन्तान से दुःखी, कोई संतान के लिए दुःखी, किसी को ऋण की चिन्ता, कोई डिग्रियां लेने के लिए परेशान। इसलिए संत हमें समझाते हैं कि जब तक हमारी आत्मा वापस जाकर परमात्मा से मिलाप नहीं करती, उसका देह के बन्धनों से, जन्म-मरण के दुःखों से कभी भी छुटकारा नहीं हो सकता। हमारी आत्मा स्त्री है और परमात्मा पति है। जिस प्रकार स्त्री अपने पति के चरणों में जाकर ही संतुष्ट होती है उसी प्रकार आत्मा परमात्मा को पाकर सदैव के लिए संतुष्ट होती है। यह प्रेम व भक्ति का सम्बन्ध है।

अंधेरी रात में निर्जीव रस्सी को कभी-कभी हम भ्रम के चलते सांप समझ बैठते हैं और उससे दूर भागने लगते हैं। वास्तविकता में रस्सी और सांप में अन्तर है। हम अपनी अज्ञानता के कारण ही रस्सी को सांप समझ बैठते हैं, जबकि रस्सी

सांप नहीं है अथवा सांप रस्सी नहीं है। यह तो हमारे दृष्टिकोण का ही अन्तर है। हमें इसके भीतर जाकर खोज करनी चाहिए किन्तु बिन गुरु पाये यह मानव नाद के रस को क्या जाने, भगवान तो घट-घट में रहते हैं, कैसे हम उनको पहचानें। भगवान को जानने का मार्ग तो सतगुरु ही बताते हैं कि साधना के द्वारा मन का रुख भीतर की ओर मुड़ता है। जिसे शब्द ब्रह्म कहते हैं।

मृत्यु को जीत लेने की तो शक्ति उसी में आ सकती है, जो काल को चुनौती दे सकता हो। काल को संतों के अतिरिक्त आज तक कौन चुनौती दे सका है ? भीष्म पितामह तो स्वयं में एक सम्पूर्ण शक्ति हैं, जिनकी चर्चा करने के लिए एक पृथक ग्रंथ आवश्यक है।

अगर स्पष्ट कहा जाए तो इसका रहस्य केवल उनके उस समर्पण के वेग में छिपा था, जिसके कारण भीष्म जीवन पर्यन्त सक्रिय रह सके, वरना यह कैसे संभव था, कि महाभारत के युद्ध में पितामह को समाप्त करने के लिए स्वयं भगवान कृष्ण तक को अपनी प्रतिज्ञा भूलकर शस्त्र उठाना पड़ गया था। वास्तव में जो ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं वे ही इच्छा मृत्यु के कवच को प्राप्त करते हैं। जीवन जीने वाले साधक में ही वह बल आ सकता है, कि वह मृत्यु की आंख में आंख डालकर उसे रोक दे, यमराज को भी ठिठक कर देखने को बाध्य कर दे, कि यह कैसा व्यक्ति है जो उसकी सत्ता से युक्त है। ऐसा जीवन केवल उस साधना से आ सकता है, जो वास्तविक अर्थों में मानव "यौवन" में संजीवनी साधना हो न कि केवल स्वास्थ्य को प्रवर्धित करने की।

महारथी अर्जुन अगर मित्र भाव के प्रतीक हैं तो युधिष्ठिर जीवन में धर्मराज के प्रतीक हैं। कर्ण पुरुषोचित्त दानवीरता के रूप हैं, तो संजय उस द्वन्द्व के जो किसी भी सत्यप्रेमी व्यक्ति के हृदय में स्वामीभक्ति व न्याय के मध्य उत्पन्न संघर्ष का स्वाभाविक परिणाम होता है। भीष्म ब्रह्मचर्य, कठोर प्रतिज्ञा और उसके पालन के ही प्रतीक नहीं वरन् ऋषि परम्परा के भी पोषक थे। इतिहास में उनके समान किसी दूसरे व्यक्ति का उदाहरण मिलना शायद असंभव ही है। ब्रह्मचर्य, कठोर प्रतिज्ञा और उसके पालन के साथ-साथ पिता के प्रति स्नेह और आदर के फलस्वरूप ही उन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त हुआ, जो अभी तक किसी को प्राप्त नहीं हुआ है।

सत्य तो यह है, कि भीष्म पितामह न राजसत्ता से शरशैय्या तक की यात्रा में केवल अविचलित रहे, वरन् उदाहरण भी प्रस्तुत किया। ऐसा यौवन जिसका उदाहरण दिया जा सकता है। इसी भांति भीष्म पितामह का भी सम्पूर्ण जीवन-चरित्र है, इसके उपरांत भी वे समुद्र ही थे। न केवल अपने ज्ञान, धैर्य और विवेक में

वरन् अपने ओज, बल, और रणकौशल में भी। यौवन इन्हीं सब के सम्मिलित रूप का नाम होता है। यौवन केवल वर्षों से निर्धारित किया जा सकता है नहीं और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखना है तो भीष्म को देखें।

वह चरित्र था शान्तनु पुत्र का जो अपनी कठोर प्रतिज्ञा के कारण भीष्म के नाम से विश्व में अमर हो गए। इतिहास में उनके समकक्ष किसी अन्य पुरुष की उपस्थिति मिलना असम्भव है।

क्या कभी सोचा है, यौवन क्या होता है ? यौवन वह होता है जो रति देवी किसी भी स्त्री अथवा पुरुष की देह पर स्वयं अपने हाथ से लिख देना चाहती है, स्वयं उसमें उतर कर उसके माध्यम से पुनः-पुनः नूतन होना चाहती है, इसे ही काम कहते हैं, जो कामुकता से कोसों दूर होता है।

काम मानव की वह भावना है, जो उसे नित्य पतन के गर्त की ओर धकेलती है, दूसरी ओर स्वस्थ काम उसे ऊंचाइयों की ओर ले जाता है। निकृष्ट काम का परिणाम कभी उस व्यक्ति से पूछिए जिसने निम्न दैहिक वासना की पूर्ति में न केवल अपने जीवन पर कुठाराघात कर लिया वरन् स्वयं को इसी वासना के परिणाम भोगने के लिए झोंक दिया और जीवन भर स्वयं को तिल-तिल करके जलने पर विवश कर दिया।

एक बार जब आप परिश्रमपूर्वक इच्छां मृत्यु साधना को सम्पन्न कर लेते हैं, तब आपके समक्ष काल भी हाथ जोड़कर खड़ा रहने को विवश हो जाता है। शायद तभी कहा गया है मृत्यु को भी विवश खड़े रहने पर मजबूर कर देने वाली साधना का नाम है—इच्छा मृत्यु साधना। आवश्यकता केवल इस बात की है आप इसे एक बार सम्पन्न करें तो सही।

इस लाभदायक साधना को कर लेने के पश्चात् संभव है मृत्यु का भय जाता रहे, अकाल मृत्यु एक स्वप्न बन जाये, यौवन का वास्तविक अर्थ समझ में आ जाये और चारों और घूमते युवाओं के पीले मुख, मुर्झाया शरीर, बहकी और सुस्त चाल, निस्तेज भीतर धंसी आंखें शायद फिर देखने को ना मिलें।

इस साधना को केवल ब्रह्म मुहूर्त में ही सम्पन्न करें। साधक स्नान आदि प्रातःकालीन क्रियाओं से निवृत्त हो सफेद रेशमी धोती पहन सफेद ऊनी आसन पर सूर्य की ओर मुख करके बैठे तथा अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछाकर उस पर सफेद वस्त्र बिछाएं। आप सभी व्यवस्थाएं इस प्रकार करें कि साधना के मध्य में न उठना पड़े। सफेद ऊनी आसन पर बैठने के पश्चात् ताम्रपत्र पर अंकित महामृत्युंजय यंत्र को किसी शुद्ध पात्र में स्थापित करने से पूर्व उसे गंगाजल से स्नान कराएं और पौंछकर स्थापित कर दें। इसका पूजन श्वेत चन्दन, अक्षत व सफेद

पुष्प की पंखुड़ियों से कर जीवन में मृत्यु के भय से दूर रहने व सफल रहने के लिए हृदय से प्रार्थना करें। इस प्रार्थना में गंभीरता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। यह साधना शुक्ल पक्ष के गुरुवार से प्रारम्भ करें। यह साधना कितने दिन करनी है ? इसके लिए यह अभीष्ट है कि जितनी आपकी आयु है उतने ही दिन साधना करें। आप अभिमंत्रित स्फटिक की माला का प्रयोग करें। साधना सम्पूर्ण होने के पश्चात् आचमनी में रखा गंगाजल अपने पर छिड़कें, पीयें नहीं, अगर आपको साधना काल में शरीर टूटता हुआ सा लगे या सिर में दर्द हो, किन्तु इससे चिंतित होने अथवा साधना को बीच में ही छोड़ देना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। प्रत्येक साधना अपनी उपस्थिति स्पष्ट करने के पूर्व साधक की देह में विद्यमान जड़ता को दूर कर अपने लिए स्थान बनाती ही है, यह लक्षण इसी के प्रतीक होते हैं। साधना की समाप्ति पर माला को अपने गले में धारण कर लें।

प्रिय मित्रों! इस साधना को सम्पन्न कर लेने के पश्चात् यह कभी न कहें—हे भगवान! ऐसे जीवन से तो मौत भली अर्थात् मृत्यु की इच्छा कभी न करें। दूसरे यह साधना कभी किसी को बतलाएं नहीं। रहीम ने कहा है—

जो "रहीम" उत्तम प्रकृति, का करि सके कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।
बढ़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोले बोल।
कब "रहीम" हीरा कहे, लाख टका मेरा मोल।।

हीरा भी सदा के लिये होता है, पर कभी मूल्य नहीं बतलाता, आप भी ऐसा ना करें। अब मंत्र प्रस्तुत है—

ॐ अक्षर पाप मोचन, सर्व सुख वरदायने।
विश्व देवा श्री दीजो कृपा सिन्धु पिता हरे।।

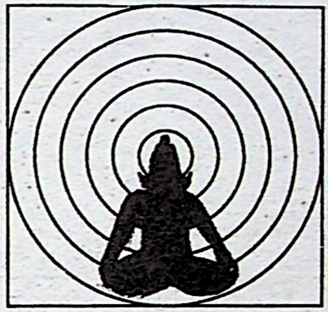
इसके पश्चात् इच्छा मृत्यु प्राप्ति का वरदान मांगें। स्मरण रखें, 51 माला प्रतिदिन करनी हैं।



राम	राम	राम	हे राम
राम	हे राम	राम	राम
राम	राम	राम	हे राम
हे राम	राम	राम	राम

संभव है आपको अपने जीवन को बढ़ाने के लिए यह साधना सम्पन्न करनी पड़ जाए, तो महामृत्युंजय साधना की श्रेणी में आती है किन्तु जहां चुनौती देने और लेने का भाव मन में पनप गया हो फिर वहां ऐसी साधना को सम्पन्न करने की आवश्यकता पड़ ही जाती है।

अतः इच्छा मृत्यु साधना के सच्चे रूप की व्याख्या केवल अपने कल्याण के दृष्टिकोण से ही हो सकती है। इस दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए साधना की आवश्यकता है। स्मरण रखें, यों ही यह सभी को प्राप्त नहीं हो जाती।



धन हेतु

किसी भी शुक्ल पक्ष सोमवार के दिन भोजपत्र के ऊपर शुद्ध केशर से लिखकर धूप, दीप देकर चांदी में यंत्र बनाकर गले में धारण करने से आर्थिक उन्नति होती है तथा धन की प्राप्ति होती है।

66	63	2	8
7	3	90	89
91	96	9	1
4	6	87	91

धन-प्राप्ति यंत्र

रोग से मुक्ति हेतु

अग्रांकित यंत्र को पुनर्वसु नक्षत्र में अनार के पत्ते पर रोली से लिखकर सिराहने

रख ले। 72 दिन तक निम्न मंत्र की 6 माला सोने के समय जपता रहे **मंत्र—क्रां क्रीं ऐं दं लं सं रोग निवृत्ति के बाद यंत्रमय दक्षिण मिठाई के सं पं लं बोलकर** काल भैरव के चरणों में अर्पित करे।

यंत्र

दं	44	47
48	52	सं
54	ऐं	57

विवाह हेतु

वर्तमान समय में कन्या का विवाह एक गहन समस्या है। शीघ्र विवाह के लिए निम्न प्रयोग रामबाण है। यह प्रयोग 63 दिन करना है, रजस्वला काल में स्थगित रखना है। पीले कागज पर शुद्ध केसर की स्याही से लिखें। इसके पश्चात् उत्तर की ओर मुख करके 6 माला निम्न मंत्र जपें—

पं लं दं ॐ क्लीं ह्रीं।

64वें दिन निम्न यंत्र और मंत्र को बांह पर बांध ले। फेरे के पश्चात् निम्न यंत्र को माता पार्वती के चरणों में रख दें। यंत्र इस प्रकार है—

यंत्र

	पं	लं	21	27	क्लीं	
बृं.	2 ऐं	31	दं	क्षं	क्लीं	बृं.
	ॐ	क्रां	37	33	क्लीं	

गुरु

❑❑❑

10

और अब अंत में...............!

सुधि पाठकों ! आज जबकि मेरी बहुप्रतिक्षित पुस्तक सम्पूर्ण हो गयी है। मैं कलम हाथ में लेकर सोच में डूबा हूं, जादूगरी और तंत्र का परस्पर क्या सम्बन्ध है? आज के तथाकथित बाबा, सूफी, मौलवी, बंगाली क्यों चमत्कार दिखलाते हैं? अगर वह इतने ही चमत्कारी और सिद्ध हैं तो क्यों विज्ञापन करते हैं? क्यों नहीं अपनी तंत्र शक्ति के बल पर लोगों को आकर्षित कर अपनी विद्या दिखला देते?

तांत्रिक का बाना पहनकर तंत्र-मंत्र की कुछ सामान्य क्रियाएं सीखने के पश्चात् कुछ ऐसे भ्रष्ट लोग हैं जो इस विद्या को कलंकित करने से नहीं चूकते और जन-सामान्य के बीच पहुंचकर इधर-उधर के चमत्कारों को प्रदर्शित कर उन पर प्रभाव जमा लेते हैं और भविष्य उज्जवल, संतान-प्राप्ति, मनवांछित सुखों की प्राप्ति की बात कहकर और गंडा-ताबीज बनाकर या भभूत देकर सरलतापूर्वक ठग लेते हैं फिर नये शिकार की खोज में आगे बढ़ जाते हैं।

जहां रासायनिक चमत्कार कर लोगों को रोमांचित करना एक अन्य बात है वही कठोर तंत्र साधना के बल पर पीड़ितों की सेवा करना दूसरी बात है। तांत्रिक तो सदैव दुःखियों के दुःख दूर करने में संलग्न रहता है। उसे चमत्कार से कोई वास्ता नहीं रहता। वह तो अपने ईष्ट की साधना में मग्न रहता है। सुख-दुःख, लाभ-हानि, ऊंच-नीच, खाद्य-अखाद्य, धूप-छांव आदि से भी उसका कोई सरोकार नहीं रहता है।

शिव को शक्ति रूप मानकर उनकी साधना में लगे रहने वाले अघोरी व तांत्रिक आदि नामों से पुकारे जाते हैं। तंत्र साधक दीन-दुःखियों एवं आपदा-विपदा से परेशान लोगों की सेवा करते हैं। उनका उद्देश्य, उनका कृत्य सदैव मानव सेवा तथा देश सेवा में लगा रहना होता है। अविनाशी, महाअघोर, श्मशानवासी आदि नामों से विभूषित औघड़ भगवान शंकर की कृपा प्राप्त कर तांत्रिक तमाम

शक्तियों से संपन्न हो जाता है और विधि के विधान में भी हस्तक्षेप कर पीड़ित लोगों का कष्ट हरण कर लेता है। तांत्रिक परम्परा में महान संत मत्स्येंद्र नाथ, गुरु गोरखनाथ, राजा भर्तृहरि, कालूराम, बाबा कीनाराम अवधूत, भगवान राम आदि अनेक अघोर संतों ने कठिन साधना करके अविनाशी भगवान शंकर को प्रसन्न कर, उनकी कृपा प्राप्त की जिससे वे लोगों का कष्ट निवारण करते रहे।

अगर तंत्र विज्ञान में पारदर्शिता लानी है और भ्रष्ट तांत्रिकों व बाबाओं पर अंकुश लगाना है तो जनता को इन्हें अपनी दृष्टि में रखना होगा। अब बढ़ते भ्रष्ट तांत्रिकों की संख्या देखते हुए जनता को इन्हें अपने बीच से हटाना होगा, क्योंकि यह तंत्र विज्ञान की आड़ लेकर बचते आये हैं।

एक व्यक्ति दूसरों में कमियां ढूंढता रहता है, इसमें गलती क्या है, इसको कैसे गिराएं, इसको परास्त कैसे करें, ऐसा व्यक्ति स्वयं दुःखी होता है, दूसरों को भी दुःखी कर देता है। एक व्यक्ति दूसरों में सुधार या गुण ढूंढता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति में गुण-अवगुण का सम्मिलन होता है कोई सर्वांग गुणवान नहीं होता, कोई सर्वांग अगुणवान भी नहीं होता—गुण भी होते हैं, अवगुण भी होते हैं। हम क्या करते हैं, कि अपने चश्मे से देखते हैं, हम देखते हैं कि यह सफेद कपड़ा नहीं पहनता इसलिए इसमें गुण नहीं है, अच्छा नहीं है, कि यह टोपी पहन रखी है, यह पागल है, टोपी क्यों पहन रखी है, यह ठीक नहीं है।

मेरा विषय जादूगरी का तंत्र से क्या सम्बन्ध है? मैंने अनेक पुस्तकें देखीं सम्भवतः इन्द्रजाल वगैरह। अंडा कैसे उड़ाएं? आग कैसे लगाएं? लाल फूल काला कैसे करें? पैसा कैसे नाचे? मच्छर कैसे भागे? क्या यह सब तंत्र का भाग हैं? एक तांत्रिक होने के नाते मुझे तो इनमें कहीं से कहीं तक कोई सम्बन्ध नजर नहीं आता है? तो फिर यह सब क्या है? केवल पुस्तक के पृष्ठ बढ़ाने की कला है। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। पाठक ऐसे सस्ते साहित्य से बचें। आप तंत्र का अच्छा सारगर्भित केवल किसी तांत्रिक द्वारा लिखित साहित्य ही पढ़ें।

आप स्वयं देखें सर्वथा निरक्षर गोरखनाथ को उनके गुरु ने किस प्रकार साधना के द्वारा उनके कण्ठ और उनकी जीभ पर सरस्वती को स्थापित किया, जिसकी वजह से उन्हें सभी वेद, उपनिषद कण्ठस्थ हो सके, वे श्रेष्ठतम प्रवचन देने में समर्थ हो सके और पूरे विश्व में गुरु गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध हो सके।

अगर साधक को आत्मज्ञान की उपलब्धि हो जाये, तो उसे अपने भीतर से ही प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते रहते हैं, फिर उसे कहीं भटकने की आवश्यकता भी नहीं होती, उसके अन्तः में स्थित सिद्धि द्वारा ही उसे मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। इसी ज्ञान शक्ति को वाग्देवी कहते हैं। इसी तंत्र साधना को सम्पन्न करने से साधक सिद्धि

को प्राप्त हो पाता है तथा यह ज्ञानश्चेतना का स्तर ही होता है, जो किसी को मूढ़, किसी को कालीदास और किसी को तंत्र सिद्ध की श्रेणियों में विभक्त कर देता है।

शाबर तंत्र-मंत्र साधना अत्यन्त संक्षिप्त एवं अचूक होते हुए भी परम गोपनीय रही है, और मेरा स्वयं का यह अनुभव है, कि इस शाबर मंत्र साधना को सम्पन्न करने से साधक कुशल वक्ता बन जाता है, वह जो भी बात कहता है, सुनने वाले मंत्रमुग्ध होकर उसके भाषण को सुनते हैं।

यह भी कहा गया है शाबर तंत्र ईश्वर के निकट पहुंचने का सबसे छोटा मार्ग है। तंत्र से साधक को मोक्ष की प्राप्ति सहज हो जाती है। कलियुग में तो शाबर तंत्र साधना कष्ट निवारण का सर्वश्रेष्ठ साधन था।

तंत्र का विधान रहस्यों से भरा है। विशेष रूप से वाम मार्ग की तंत्र साधना अपने प्रभाव से साधकों को ऐसी सफलता दिलाती है, जिसके विषय में सरलता से कभी सोचा भी नहीं जा सकता। जप, पूजा और यज्ञ में पवित्रता और सदाचार का विशेष ध्यान रखा जाता है। लेकिन शाबर तंत्र साधना में नियम, बंधन नहीं के बराबर होते हैं। शाबर तंत्र साधना सिद्धि देने वाली मानी जाती है, इस शाबर तंत्र से विरोधियों को कष्ट में डाला जा सकता है और साधक अपने लिए तरह-तरह के लाभ प्राप्त कर सकता है। शाबर तंत्र से दोहरा अर्थ पूरा होता है। यह साधक के शत्रु के लिए तलवार और साधक के लिए ढाल सिद्ध होती है।

शाबर तंत्र के जानकारों का कहना है कि जो लोग इसकी साधना में विश्वास नहीं करते या जिनके मन में पशु भाव प्रबल है, उन्हें यह मंत्र सिद्ध नहीं होता और फल भी नहीं देता। साधक लज्जा, भय और शंका जैसे बंधनों में बंधे हैं, वे इस साधना के अधिकारी नहीं हैं।

शाबर तंत्र के अनुयायी नामों का विश्वास है अगर कोई साधक सिद्धि-दाता भगवान रूद्र का मन एकाग्र करके मंत्र का जप कर लेता है तो वह आठों सिद्धियों का स्वामी हो जाता है। तंत्र के आचार्य ऐसा मानते हैं कि शाबर मंत्र को सिद्ध करने वाला साधक आकाश में उड़ सकता है और वह सृष्टि के सारे रहस्य को सरलतापूर्वक जान सकता है।

मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि अगर कोई संकटों का सामना कर रहा हो या भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा है तो ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि वह शाबर मंत्र की साधना आस्था एवं विश्वास के साथ करे ताकि उसे कष्टों से मुक्ति मिल सके।

साधक यह स्मरण रखें जब हजारों वर्ष पहले, दुनियां के बहुत बड़े भाग में तंत्र का ज्ञान नहीं था, शाबर तंत्र की खोज भी नहीं हुई थी। जब लोग कच्चे घरों, गुफाओं अथवा मचान पर रहते थे तब हमारे देश में गुरु गोरखनाथ ने शाबर तंत्र की ज्योति जलायी थी, जो उस समय भी प्रभावी थी, आज भी है और कल भी रहेगी।

हमें अशिव पर विजय प्राप्त करने वाले तांत्रिक अघोरियों पर अविश्वास नहीं करना चाहिये। यह लोग तो जन-कल्याणार्थ आते हैं। इस सन्दर्भ में एक दृष्टान्त प्रस्तुत है—

किसी नगर में एक व्यक्ति के पास पारस पत्थर था, जिसे वह बहुत प्यार करता था। एक बार उसे कुछ समय के लिए शहर से बाहर जाना पड़ा, तो सुरक्षा की दृष्टि से उसने पारस को एक तांत्रिक के पास सुरक्षित रखवा दिया। तांत्रिक सन्त पुरुष थे अतः व्यक्ति को उनके ऊपर विश्वास था। तांत्रिक ने वह पारस उठाकर देवताओं के आसन के नीचे रख दिया। दूसरे दिन देवताओं पर चढ़े फूलमाला आदि उठाने लगे, तब उसके साथ पारस भी आ गया, फूलमाला के साथ पारस भी नदी में फेंका गया।

कुछ वर्ष बाद वह व्यक्ति लौटा और पारस मांगने लगा। तांत्रिक को भी उस पारस का स्मरण नहीं आया। व्यक्ति को तांत्रिक की नीयत पर सन्देह हुआ। व्यक्ति की दृष्टि में पारस का जितना मूल्य था, इतना ही मूल्य उसने सोचा कि तांत्रिक की दृष्टि में भी होगा, इसलिए लोभ आ जाना स्वाभाविक है, क्योंकि हर कोई हर किसी को अपने ही नजरिये से देखने का प्रयास करता है, अतः वह व्यक्ति उन पर आरोप लगाने लगा। तांत्रिक उस व्यक्ति को नदी के किनारे ले गये, जल में उतरकर गोता लगाया और दोनों हाथ भरकर पत्थर उठा लाए। हाथ ऊपर करके बोले—"इनमें से जो तुम्हारा पारस हो, उसे निकाल लो।"

व्यक्ति ने अपनी जेब से पारस की परीक्षा के लिए लोहा निकाला। देखा, सभी पारस ही तो हैं। तांत्रिक ने एक पत्थर उसे दे दिया और बाकी को निर्लिप्त भाव से नदी में फेंक दिया।

कई बार हम ऐसे तांत्रिकों को धन आदि के तराजू में तौलने का प्रयत्न करते हैं, हम उसी संकीर्ण दृष्टि से उनका आंकलन करने की कोशिश करते हैं, जितने कि संकीर्ण हम हैं, परन्तु जो सच्चे तांत्रिक होते हैं, वे साधना मार्ग में प्रतिक्षण मग्न रहते हैं, जिनके स्पर्श से ही जीव ब्रह्म हो जाता है, उनके समक्ष तो त्रिभुवन की सम्पदा भी तुच्छ ही होती है।

अब मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूं और आपके स्नेह, सहयोग और मार्गदर्शन की अभिलाषा के साथ पुस्तक सम्पूर्ण करता हूं।

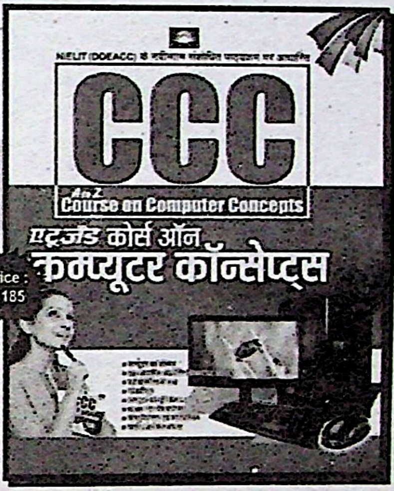
आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

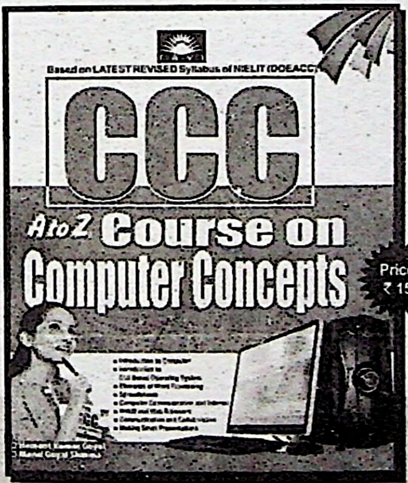
।। इति शुभम् ।।

तांत्रिक बहल
तंत्र सबके लिए मिशन
डी-4, राधापुरी, कृष्ण नगर,
(जमुनापार) देहली-110051

ज्ञान के लिए ज्ञान का द्वार खोलिए! एट्रजेड कम्प्यूटर पुस्तकें ही खरीदिए!!

NIELIT (DOEACC)
द्वारा आम आदमी के लिए
बुनियादी स्तर पर
इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी से
साक्षर करने के उद्देश्य से डिजाइन
किये गये कोर्स के नवीनतम् पाठ्यक्रम
की आपूर्ति करने वाली
हिन्दी और English में उपयोगी पुस्तकें।





CCC अर्थात् कोर्स ऑन कम्प्यूटर कान्सेप्ट्स सर्टिफिकेट कोर्स को पास करने के उपरान्त आप कम्प्यूटर का उपयोग करने, इन्टरनेट का प्रयोग करने, ई-मेल देखने और भेजने के साथ-साथ व्यावसायिक प्रेजेन्टेशन बनाने में सक्षम हो जाएंगे। कम्प्यूटर का प्रयोग अब लगभग सभी सरकारी, अर्द्धसरकारी कार्यालयों में होने लगा है। इस सर्टिफिकेट कोर्स को पास करने के उपरान्त किसी भी सरकारी अथवा अर्द्धसरकारी नौकरी में आपके पास एक अतिरिक्त योग्यता होती है और आपको प्राथमिकता दी जाती है। NIELIT (DOEACC) के संशोधित, नवीनतम् पाठ्यक्रम की आपूर्ति करने वाली इस पुस्तक को अत्यन्त सरल भाषा में तैयार किया गया है, ताकि सभी लोग इसका पूर्ण लाभ उठा सकें।



150/-

इंग्लिश–हिन्दी डिक्शनरी।

SMS और E-Mail और निबन्ध (Essay) का भरपूर संकलन।

व्यक्तिगत, प्रेम-पत्र, व्यापारिक और ऑफिशियल पत्रों और प्रार्थना पत्रों का विस्तृत ज्ञान।

दैनिक जीवन में उपयोगी शब्दों, वाक्यों और ग्रामर युक्त शब्दावलियों से युक्त जानकारियां।

कम्प्यूटर की आवश्यक जानकारी एवं कम्प्यूटर द्वारा पत्र आदि तैयार करने के तरीके सहित।

प्रतियोगिता की दौड़ में शामिल होने के लिए इंग्लिश स्पीकिंग के साथ जुड़कर अपने व्यक्तित्व को निखारिये।

विद्यार्थियों, प्रतियोगिता प्रतिभागियों, गृहणियों और व्यवसायियों को नये दौर की सफलता से जोड़ने वाला स्पीकिंग कोर्स।

आज ही अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से खरीदिये अथवा हमें लिखें—

ravi

RAVI PUBLICATIONS
33, Hari Nagar, Meerut City (U.P.)
Ph. : (0121) 2531011, Fax : (0121) 2521067
E-Mail : a2zcomputerbooks@yahoo.co.in



तांत्रिक बहल

शाबर मंत्र

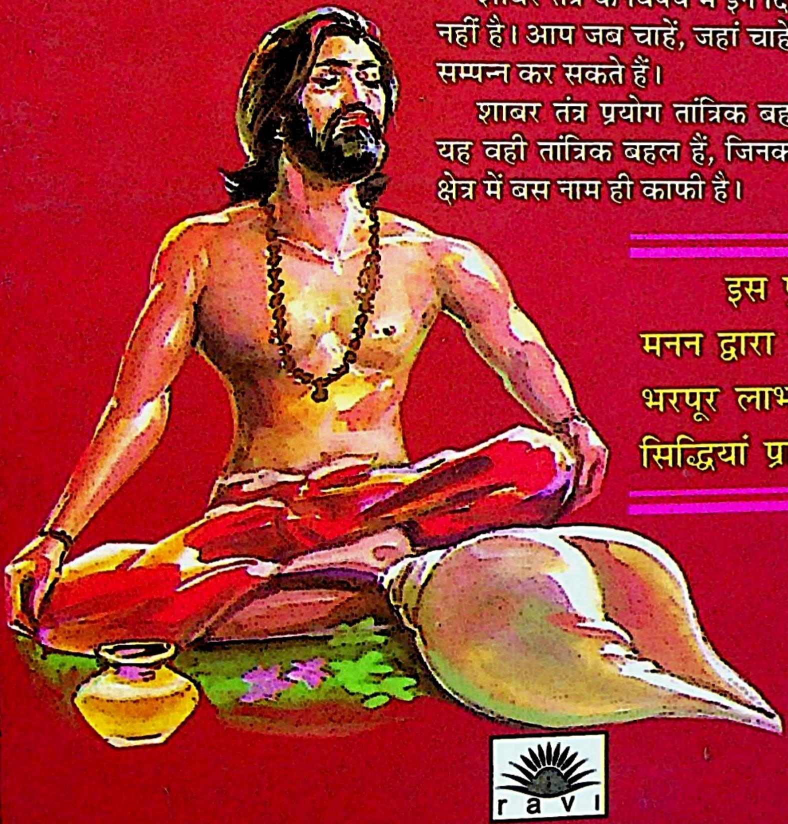
शाबर तंत्र मंत्र विधान में न केवल चमत्कारी मंत्र वर आश्चर्यजनक तुरन्त फलदायक मंत्र और साधनाएं हैं। रोगों टोने, टोटकों, देह रक्षा तथा शिशु रोगों और बालाघात जैसी जटिल समस्याओं से मुक्ति व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए शाबर मंत्र श्रेष्ठ है।

तंत्र-मंत्र साधना उपयुक्त समय अथवा दिवस पर की जाये, तो उसका प्रभाव कई गुणा बढ़ जाता है, अतः तंत्र साधना क्षेत्र में शुभ दिनों का महत्त्व है और इस बात पर विशेष बल दिया गया है, कि महारात्रि, क्रूररात्रि, मोहरात्रि और कालरात्रि कुछ ऐसे पर्व हैं जो तंत्र साधना के लिए अद्वितीय हैं। इनका महत्त्व हर साधक समझता और जानता है।

शाबर तंत्र के विषय में इन दिनों का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। आप जब चाहें, जहां चाहें शाबर तंत्र एवं मंत्र प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं।

शाबर तंत्र प्रयोग तांत्रिक बहल की अनूठी प्रस्तुति है। यह वही तांत्रिक बहल हैं, जिनका तंत्र-मंत्र-यंत्र विज्ञान के क्षेत्र में बस नाम ही काफी है।

इस पुस्तक के अध्ययन मनन द्वारा सामान्य व्यक्ति भी भरपूर लाभ उठाकर चमत्कारी सिद्धियां प्राप्त कर सकता है।



Book Code: S-24
ISBN 81-7789-326-2
9788177893267
₹ 60
AHW Ravi Series

ravi
रवि पॉकेट बुक्स
33, हरी नगर, मेरठ शहर